SABHAPRAKASHA

सभाप्रकाश

साहित्य के विषय में

श्रीमन्महाराणा धीरवीर परमोदार
उदारता सागर गुण ग्राहक मेद
पाटेश्वर यावदार्य कुल कमल
दिवाकर श्री १०८ श्री
सज्जन सिंह अधीशकी
आज्ञानुसार

पण्डित वंशीधर बाजपेयीकी अधिकार
से सम्वत् १९३९ विक्रमी में
राजयन्त्रालय उदयपुरमें मुद्रितहुआ

पहलीवार फ़ी जिल्द
१००० छपी मोल २) रु०

सभाप्रकाशकासूचीपत्र

सूचीपत्र

भूमिका

श्री सर्वशक्तिमान जगदीश्वर ने अनेक प्रकारकी सृष्टि रची जिस सबमें मनुष्यको मुख्य रख इसकी योग्यताके हेतु नाना भांतिकी विद्या और गुणकी पुष्पावली प्रकट की है तिनके ज्ञानरूपि रसको निराकार साकार होकर ग्रहण करता है और सबके चरित्र आचार्यों ने अति उत्तम रीतिके साथ ग्रन्थोंके द्वारा प्रसिद्ध किये जिन्हें उत्तम पुरुष अवलोकन कर बुद्धि के विस्तार के बढाने में तत्पर हो गुणी और पंडित कहलाते हैं और प्रत्येक विद्याकी योग्यता पाकर निपुणता को प्राप्त करते हैं,

विद्या और परिश्रम वे पदार्थ हैं जिनके अनुसार बहुतेरे मनुष्य बिलकुल अज्ञान पशुके समान थे ज्ञानवान् होकर ऐसी सावधानी और सुघरता दिखारहे हैं किजिनके सत्य बिद्यावानों के सदृश प्रशंसनीय ठहरते हैं

इस कारण श्री आर्यकुल कमल दिवाकर गुणग्राहक धीर वीर मेदपाटेश्वर श्री १०८ श्री सज्जनसिंह नरेश चूड़ा मणि विद्याके प्रचारके बढ़ानेके हेतु स्वयम् अभ्यास करते हैं और राज्यकाज व प्रजाकी रक्षाके उपरांत हर एक अधिकारियों कों भी पठन पाठन को शिक्षा देते हैं और जगह२ पर पाठशाला

बनवाकर सब तरह विद्यार्थियों के उत्साह को बढ़ाते हैं और यन्त्रालय को भी सब तरह से सहायता देते हैं और जहां पर उत्तम ग्रंथ जो गुप्त हो रहे हैं सभासदों के द्वारा शुद्ध और छपवाकर प्रसिद्ध करते जाते हैं

प्रकट हो कि साहित्य वह विद्या है कि जो पढ़ने लिखनेके उपरांत सभाके बरतावमें बड़ी सहायक होती है इसलिये श्री यादवराय कुलकमल दिवाकर ने अपने चित्त विनोद के निमित्त चारन कुल रूपी सुन्दर भूमि को निज हाथों से सुधार सींची है अर्थात् दान के प्रवाह से परि पूर्ण कर उस भूमि में रोसपट्टी के स्थान बड़े बड़े विद्वज्जन सभा सद नियत कर उत्तम २ ग्रन्थ सोई आल बाल जिनमें कविजनोंकि वाक्यों की आंब, सरल, अशोक, आदि अतिम्य वृक्षावलीको पंक्ति लगा उन वृक्षोंसे कविता रस चाखनेको अच्छे विद्यावान् पाठक मालाकार बनाये जिन्होंने परिश्रमसे काव्यकी वेलियां ऐसीहरी करदी हैं कि जिनकी कोमल लताओं में हिन्दभान की कीर्ति के पक्षी किलोलें कररहे हैं श्रीसज्जन नरेश ने साहित्य सभा एक निर्मल वाटिका रूजनरूप भवरों के सुगन्धित हो गुंजार करने के हेतु स्थापित की है

कविराजाजीश्रीश्यामलदासजीकृत

कवित्व

चारन सुचारु भूमि सुघट सुधार सींच सुकर सुसभ्य शोधिसु सभा पगाई है। श्राल वालनी के ग्रन्थ श्रमल बनाय कविछौना श्रम्बसरस अशोक के अगाई है। मालाकार पाठकु मद्दांन पथ बल्ली पाट रान हिन्द भांन किति रीति छूवै खुगाई है। सज्जन समूह ह्वै मलिन्द मकरन्द लेन सज्जनने स्वच्छ काव्य वाटिका लगाई है॥ १ ॥

साहित्य सभा के मुख्याधिकारी कविराजा श्यामलदासजी हैं जिनकी आज्ञानुसार काव्यपाठशालाके पाठकजनों ने इस ग्रन्थ अपूर्व लाभ कारी को कि जिसमें संपूर्ण काव्यके अंग भरकर कविहरचरणदासजीने रचा है अपनी बुद्धिके अनुसार अक्षरोंमें जहां कहीं लेखकोंसे भूलें होगईं थीं उनको शोध कर शुद्ध प्रकाशित किया है आशा है कि इसको पढकर सज्जन जन अति प्रसन्न होंगे और विद्यार्थियोंको बड़ा लाभ होगा

दोहा

ग्रंथ अपूरव जानकें पाठक जन सहुलास।
शभा पा कविराजकी शोध्यो सभाप्रकास।

द: लाला सोहनलाल

श्री एकलिङ्गोविजयते

अथ सभा प्रकाश लिख्यते

दोहा

—(०)—

गौर श्यांम जो वपु धरैं वस्तु बिचारैं एक ॥ ज्यौं बिसर्ग सो राखिहैंनिज जन मनकोटेक । १ । मोहि ग्रान गौरव नहीं कहे जोरि हरि पानि । तुम हीं ग्रंथ बनायहो राधा राधा जानि । २ ।पियप्यारी नारी ललन अ हां नाम निर धार । उचित ठौरमैं लख्य हैं राधा नन्द कुमार। ३ । जो जे चाहत कविन सों खंडन मंडन आस । सोचितदे नित देखि हैं हरि•कृत सभा प्रकास । ४ । लिख्यौ निरखि मत भरत को वामन हूको सुत्र । दो ष बुद्धि करिहैं नहीं जो कविमांहि सपुत्र ॥ ५ ॥

अथ नायका जाति

दोहा

—(०)—

नारि पद्मिनी १ चित्रिनी २ और संखिनी ३ जांनि ॥ फेरि हस्तिनी ४ जाति यह लच्छन तैं पहिचानि ॥ ६ ॥

अथ पद्मिनी लच्छण

कवित्व

—*—

लोचन विसाल कुच जैसे फलताल सम गात सुकुमार राका चन्द मुख जांनिए ॥ लाज मृदु हास देवपूजन विलासहरि सोभा रंग पंकज सुगन्ध अंग मांनिए ॥ हंस सोगम नवेत भावत वसनमन कोकिल सोस्वन लघु भोजन बखानिए ॥ रतिमें सुदेस मध्यदेस में नकेस लेस पद्मिनी सुलच्छन तें छिति मेंपि छांनिए ॥ ७ ॥

अथ चित्रिनी लक्षण

कवित्व

—०—

चपल नयन चारु विरल सलोंने वार कामगे ह देह मित्रचित्र प्रियकारी हैं ॥ उरजनिपी न लांक ललित लसत छीन आनन सुपङ्कज मयंक सहचारी हैं ॥ मत्त गजचाल औसरो म जोनिमनि आर ठेंगनीन लांबी नांहि पा तरी नभारी हैं ॥ मोर कीसी बांनी रुचिमा नी उप भोगनि में ऐसी सुख सानी ताहि चित्रनी विचारी हैं ॥ ८ ॥

अथ संखिनी लक्षण

कवित्व

—:—

मोटी जाको लांक औविलोकनि सुभाव बांक

लांबी छीनदेह नहि दया रोसवास है ॥
थूलनस दीरघ उरजछोटे खोटोमन पूतिगंधजो
नि घनेकेस औविलास है॥ वसन रंगीन पशु
दसन अहीन जाके बहुकाम जलचाल चपल
उदास है ॥ भोजन समान सब कविकेप्रमा
नते संखिनी परेखवेको लछन प्रकास है
॥ ८ ॥

अथ हस्तिनी लक्षण

कवित्व

—०—

आंगुरी अधरमुख भृकुटी चरन बोलभारेभू
रेवार गोरी टेढे २ पाव हैं ॥ काम जल ग
न्ध मद जलके समान जाको ठेंगनी उदरभ
रि भोजन कोचाव है ॥ मन्द गति मोटेगात
लाज लेस जान्यों जात सुरत सुहात मांनों
मदन की नावहै॥ मिलेगुन देखिताहि मिश्रि
ता कहत कवि सुध ऐसो हस्तिनी केतनको
बनाव है ॥ १० ॥

अथ नायका भेद

दोहा

—०—

स्वीया १ परकीया २ कहैं सामान्या ३
लेतीन ॥ इनही में यह भेद सब उपजतलि
ख्यो प्रबीन ॥ ११ ॥

अथ स्वीया लच्छन

दोहा

—०—

स्वामिहिमें अनुरक्तजोसोहैस्वीया बाम ॥ पति
सेवा अति नरमता छमा शील की धाम ॥ १२ ॥

उदाहरन

दोहा

—०—

हास न निकसत अधर तें मनमें कोप बुझाय ॥
वचनसुधाकेपानते पियकीप्यासमजाय ॥ १२ ॥

अथ स्वकीया त्रिविधा भेद कथनम्

दोहा

—०—

मुग्धा १ मध्या २ कहत हैं और प्रगल्भा
होति ॥ दोय भेदमुग्धा कहैं झलकें जोबन
जोति ॥ १४ ॥

अथ अज्ञातजोबना

लच्छन

दोहा

—०—

आयो जोबन नांलखें सो जो बनअज्ञात ॥

अथ ज्ञात जोबना

लच्छन

—ॐ—

आयोजोबनजोलखेसोतियजोबनज्ञात ॥१५॥

अथ अज्ञातजोबनाउदाहरन

दोहा

०—०—०

ऐरी मेरी देहकी दसा समुझि नहिं जाय ।
छीन परी कटिमन्दगति नित नितम्ब अधि
काय ॥ १६ ॥

अथ ज्ञात जोबना

उदाहरन

दोहा

—०—

कंजकलीसी कुंजमेंनिरखतिकुच दुतिबाल॥
देखिसखीसकुचीखरीधरीकरनबनमाल॥१७॥

अथ मुग्धानाम

दोहा

— ० —

नवकामा १ नवजोबना २ नवलबधू ३ अभि
राम ॥ लज्जाप्राया ४ जानिए एमुग्धाकेनाम
॥ १८ ॥

अथनवोढालच्छन

दोहा

—०—

पराधीन रतिलाज भय वहै नवोठा नारि ॥

अथ विश्रब्ध नवोढालच्छन

कहि पूरब विश्रब्ध सो कछु विस्वासहिधारि ॥ १९ ॥

नवोढाउदाहरन

दोहा

—०—

तजिपिय अंकसरंकचलिगहत रहत नहिंबाम ॥ जानति हौंसो बसकरे निसा धरे हरिधाम ॥ २० ॥

अथ विश्रब्ध नवोढा उदाहरन

दोहा

—+—

अंग २ सौं जोरि तिय करनि कुचन परमोरि ॥ कौन संग सोवति सखी हास अधर मुंह चोरि ॥ २१ ॥

अथ मध्या लच्छन

दोहा

— ० —

पंचवांन संकोच अरु सम जाके तन होय ॥
कवि कुल मध्या नायिका कहत ताहि को
जोय ॥ २२ ॥ प्रादुर्भूतमनोभवा १ सुरतवि
चित्रा २ जान ॥ ईषत् प्रगल्भ वचना ३ क
हैं अरुढयोवना मान ॥ २३ ॥

मध्याउदाहरन

—*—

देखि सखीनहिं सकुच तें बिन देखें अकुलाइ ॥
लाज काम ऐचेंतनै डरछबि गुनहि लगाइ २४

अथ प्रौढा लच्छन

दोहा

— * —

छकीरहै मदमें सदा कोक कला परबीन ॥
जीते पतिरति समरमेंप्रौढाकहत प्रबीन ॥२४॥
कामांधा १ रतिकोविदा २ गाढतारुणा ३
देखि ॥ दरलज्जा ४ भावोन्नता ५ आक्रान्ताधि
कालेखि ॥ २६ ॥

प्रौढा उदाहरण

दोहा

—(०)—.

उरसौंउर लायो ललन तियभुज पियपर रा

खि ॥ गढ़ीजाति हियमें हरखि वभौरातिहै भाखि ॥ २७ ॥

अथ धीरादिभेद त्रिविधा

दोहा

— ० —

मध्या प्रौढा क्रोधमें भेदतीन तियहोय ॥ सो धीरा ऽधीरा कहैं धीराऽधीरा जोय ॥२८॥

अथ मध्या धीरा लच्छन

दोहा

❖—**—**—❖

छलकरि कोपहिंजो कहैं आसय करिगंभीर ॥
मध्या धीरा ताहिकों बरनतहैं सब धीर ॥२९॥

मध्याधीरा उदाहरन

दोहा

—(०)—

हरि रुम्र चरन सरोज कौं पोछौं नैंननि लाय ॥ हेरतहमैंनिकुंजमें आएस्वेदअन्हाय ॥३२॥

अथ मध्या अधीरा लच्छन

दोहा

— ० —

पियसौं वचन कठोर कहिसकेन कोप दुराय।

॥ सुअधीरामध्या कहैं ताके यहगुन पा
य ॥ २१ ॥

मध्या अधीरा उदाहरण

दोहा

०—(०)—०

कहा कहौं हरि रावरी बनी अपूरव जोति ॥
लाली नैंननकी लखें लाली नैंननि होति ॥ २२ ॥

अथमध्याधीरा ऽधीरा लक्षण

दोहा

०•— ०

धीरा ऽ धीरा कहतहैं मध्या ताहि बनाय ॥
गुप्त प्रगट रिस सजल दृगऐसेंजानौजाय ॥ २३ ॥

मध्याधीरा ऽ धीरा उदाहरण

दोहा

—०—

तियके हियकी सबलखौंसुन्दरसुखद सराहि ॥
अरुन नयन तें हेरि हरि चक्षु सजल करि
चाहि ॥ २४ ॥

अथ प्रौढाधीरा लक्षण

दोहा

—•—

गुप्तकोप आदर प्रगट रतिमें रहति उदास ॥
प्रौढा धीरा कहत हैं रिसतें लेतउसास ॥ ३५ ॥

प्रौढा धीरा उदाहरण

दोहा

—०÷+÷०—

कह्यौ सेजपर बैठिए गहत बांहि अनखाय।
सूचक उसनसासदे तियकोकोपलखाय ॥ ३६ ॥

अथ प्रौढा अधीरा लक्षण

दोहा

—÷—

सा ऽपराध पिय देखकें तजैं कहति कुबात।
सुअधीरा प्रौढा कहैं रिसब सजाके गात ॥ ३७ ॥

प्रौढा अधीरा उदाहरण

दोहा

—०—

लखिजावक पियभालमें वालकरेहग लाल ॥
जाहुहिएमोदेतहोकपटीसठमतिसाल ॥ ३८ ॥

अथ प्रौढा धीरा ऽधीरालक्षण

दोहा

—❀—

परुख वचन धीरज जहां दोनों होतसमान।
धीरा ऽधीरा कहतहैं प्रौढा सबसुज्ञान ॥ ३९ ॥

प्रौढा धीरा ऽधीरा उदाहरण

दोहा

फेरि नारि हरि हेरितिय हंसि कछु कहति कुबोल ॥ कर परसत सतराय उतकरे अरुन दृग लोल ॥ ४० ॥

अथ ज्येष्टा कनिष्टा लक्षण

दोहा

अधिक न्यूनता प्रेमको निजप्यारिनसोंहोय ॥ ज्येष्टारुकनिष्टाकहैं कविकोविदसबकोय ॥ ४१ ॥

ज्येष्टा कनिष्टा उदाहरण

दोहा

परेविखरिमोतीधरनितियहिउठावनलाय॥
गहेकरनिकुचऔरिकेवाकीडोठिबचाय ॥ ४२ ॥

अथ परकीया भेदकथनम्

परकीया लक्षण

दोहा

गुप्त करे परपुरुष को अनुरागहिजोनारि ॥
परकीयाताकोंकहैंपण्डितलोगबिचारि॥ ॥४३॥

अथ परकीया द्विधा

दोहा

—०—

परकीया द्वै भांतिकी कन्या एक सरा हि॥
दूजो ऊढामानिजो परनेलईविवाहि ॥ ४४ ॥

कन्या वा अनूढालक्षण

दोहा

—०—

कन्या की परकीयता परकी रहै अगोट ॥
नहिं परगट याकी क्रिया तजि शरीर कीओ
॥ ४५ ॥ नवभूषन पट चटक में भटकिच
ल र ह व मानि ॥ छिपोसुनें पियकी कथा ता
ए कन्का जानि ॥ ४६ ॥ अंग अंग भूषन
बसन रंग रंग छविदेत ॥ दुरि मुरि निरख
ति ललनरुचि समवय बाल समेत ॥ ४७ ॥

अथपरोढा वा ऊढा

दोहा

—(०)—

तरुनि सुता तट कुंजमें तरु तमालकी छांहि।
चतुर सखी किहिं भांतितें तनकी तपतबुझां
हि ॥ ४८ ॥ गुप्ता १ विदग्धा २ लक्षिता ३ कु

लटा ४ मुदिता ५ होय ॥ अनुसयाना ६
नायिका परकीया में जोय ॥ ४९ ॥

अथगुप्ता त्रिविध लक्षण

दोहा

—(०)—

भयो १ भविष्यत २ होतहै ३ सुरत त्रिविध
इहिभांति ॥ गुप्तकरे तिहि जानिए गुप्ता ताकी
ख्याति ॥ ५० ॥

अथभूतभविष्यतगुप्ताउदाहरण

दोहा

—+—

कोरि कहैं नहिं तोरिहौं हौं गुलाब के फूल ॥
कांटे लगे शरीर में फाट्यो नयोदुकूल ॥ ५१ ॥

अथवर्तमानगुप्ताउदाहरन

दोहा

—०—

आलिङ्गन हरिसौं करति आग तपति तियहे
रि ॥ मांखन खात गह्यो इन्हें रह्यो तुम्हें हेंटे
रि ॥ ५२ ॥

अथवाक्यविदग्धा १ क्रिया

बिदग्धा २ लक्षण

दोहा

— ० —

बचन क्रिया में चातुरी करैजु प्रीतम हेत ॥
ताहि विदग्धा कहत हैं बचनरु क्रिया समेत
॥ ५३ ॥

अथवाक्यविदग्धाउदाहरण

दोहा

—**—**—

उतें हेरि हरि कहति इत सखि जमुना केती
र॥ लेन जात हौं हारकों भूल्यो आनतनीर
॥ ५४ ॥

अथक्रियाविदग्धाउदाहरण

दोहा

—(०)—

हरिललचौंहें चखनतें देखीतियसुख मूल॥ प्रा
तचतुरि*जलमें दियो बंधु जीवको फूल ॥ ५५ ॥

अथलक्षितालक्षण

दोहा

—

* जलको नाम बन और बंधु जीवको नाम
दोपहरो पद क्रियासे मैं वन में दुपहरी को
मिलूंगी

प्रीति आदि प्रियकी भई लखे सखो अवताहि॥
लच्छनतें बहलच्छिता कबिगन कहत सराहि
॥ ५६ ॥

लच्छिताउदाहरण

दोहा

—०—

भली भई हरिसों लगी नैंन तिहारे बाल॥ क्यों
दुरिहैं हियमें कहैं औरे उपटो माल॥ ५७॥

अथकुलटालच्छण

दोहा

—*—

जोरति कारन बहुत कुल फिरे भरीअतिकाम॥
चाहति जगमें पुरुष मय सोहैकुलटा बाम
॥ ५८ ॥

कुलटाउदाहरण

दोहा

—(०)—

यावन के सबसाखि सखि होतिपुरुष सरूप॥
तो*बिधि २ मैं मानतो कियेमकूर अनूप ॥ ५९ ॥

अथमुदितालच्छण

— * —

* ती मैं विधाता की विधिमानती

दोहा

—:—

बातसुने मनभावती जातन होत हुलास ॥ मु
दिता है सो नायिका चाहति कह्योविलास
॥ ६० ॥

मुदिताउदाहरण

दोहा

—※—

प्रीतम याही में बसें सासु नयन गति हीन ॥
सुनिदेवर कौं बावरो हरखी वधू नवीन ॥ ६१ ॥

अथअनुसयाना त्रिविध लक्षण

प्रथमानुसयानालक्षण

दोहा

— ० —

आनुसयाना नारिकौं कहतसुतीनि प्रकार ॥
नासहोत संकेत के जाको खेद विचार ॥ ६२ ॥

उदाहरण

दोह

— ० —

भौरें जब उखारि हैं कहत सुनी यहबात ॥
सोच सरितमें चितपस्यो पीतभये सबगात ॥ ६३ ॥

द्वितीयानुसयानालक्षण

—०—

दोहा

—(०)—

जोचिंते संकेत को छूटे मिले नफेरि ॥ ताहितू
सरी कहत हैं कोविद लक्षण हेरि ॥ ६४ ॥

उदाहरण

दोहा

—०—

तिय विखाद हियको तजो चलि प्रीतमके धाम ॥
ह्वैहै देवी छोहरो तहांविपिन आराम ॥ ६५ ॥

अथ त्रितीयअनुसयान्नालक्षण

दोहा

—+—

पिय आये संकेतते हौंनगई तिहिंठांव ॥ लच्छ
नलखि पछितायजो तीजी ताको नांव ॥ ६६ ॥

उदाहरण

दोहा

——

पियदेखत तियके छुई करसमीप कर बांहि ॥
भाखिनि देत उराहनो पंछतानी मनमांहि
॥ ६७ ॥

अथसामान्यालक्षणं

दोहा

निसदिन केलि कथा कहै दामदियेरतिदेइ ॥ सामान्यासो कहतहैं निश्चय धनहरिलेइ ॥ ६८॥ गुनीपुरुष सों रीझनहिं निगुनी सों नविगार ॥ धनी पुरुष मनहरन को अंग दिखावन सार ॥ ६९ ॥ सुखसों धन जाको मिले तस्कर और गवार ॥ सोजनयासों रतिकरें जिनकेनाहि विचार ॥ ७० ॥ मानआदि दे कहतहैं कहीलेन धनहोय ॥ लाजनहीं अतिभृष्टता सामान्या तिय सोय ॥ ७१ ॥ जाकी बातकहीसुन्यो सोल्यायो बहुदाम ॥ लीजे ताहि रिझाय के कीजे सोई काम ॥ ७२ ॥

अथसाधारणनायिका भेद

दोहा

अन्यसंभोगदु:खिता वक्रगर्विताजानि ॥
मानवती सबनायका भेदलहैं यहमानि ॥ ७३ ॥

अन्यसंभोगदुखिता लक्षण

दोहा

पियजो तियसों रतिकरे ताहिदेखि अनखाय ॥

अन्यभोग दुखिता कहै हरिकवि ताहिवनाय,
॥ ७४ ॥ तियतोविन पियकाम को करिहै तन
सनलाय ॥ भेजो दोपहरी खरी आई स्वेद
अन्हाय ॥ ७५ ॥

अथवक्रोक्तिगर्विता ॥

दोहा

—०—

वक्रउक्तिको गर्वजिहिं ताके द्विविध विचार ॥
प्रेमरूपदेआदिमें जाकेनाम उचार ॥ ७६ ॥

प्रेमगर्विताल्लक्षण

दोहा

—०—

गर्व करै प्रियप्रीति को प्रेम गर्विताहोय ॥

रूपगर्विता लक्षण ॥

—*—

अंगरूपके गर्वतें रूपगर्विताहोय ॥ ७७ ॥

प्रेमगर्विता

दोहा

—०—

प्रीतमकी यहरीति सखि भोते कही न
जाय ॥ झिझिकतहूं ढिगहीरहत पलनवियो
ग सुहाय ॥ ७८ ॥

रूपगर्विता ॥

दोहा

मोहिखिझावत पियसखी नित हंसि करत किलोल ॥ मोललियो कहि मोहियों तोतिल लसत कपोल ॥ ७९ ॥

अथ मानवती ॥

दोहा

प्रियनिज अपराधहिलखे जाहिक्रियातिसोय ॥ मान कहतहैं ताहिको जो पंडित जग होय ॥ ८० ॥

लघुमध्यमगुरु कहतहैं मानजु तीनि प्रकार ॥ ताके भेदसु होतहैं हरिकवि कहत विचार ॥ ८१ ॥

अथ लघु

दोहा

परतिय देखत पियलखे सखिनसके अनखाय ॥ प्रगटहोत लघुमानसो ख्यालकरे कुटिजाय ॥ ८२ ॥ चितमें मान गह्यो चतुरिलखि देखी तियकंत ॥ बूझिसराहत सिसिरहरि उनहंसि कह्यो बसंत ॥ ८३ ॥

अथ मध्यम ॥

दोहा

०꙰०

बात कहत सपनादि में परतिय को लेनाम ॥
उपजत मध्यम मान हरि मध्यविनयकी धाम
॥ ८४ ॥
कहत कछुक प्रियनारि को नाम गयीमुखआ
य ।। भ्रम मानों कैसों हल्यो वेनी कारन छुवाय
॥ ८५ ॥

अथ गुरुमान

दोहा

——*

अन्त कहूं पति रति करे लच्छन लखे रिसाय ।।
कहत ताहि गुरु मानसो पाय परे छुटि जा
य ।। ८६ ।। रसा भास दूखन कहैं वरनें मान असा
ध्य ॥ सखी ललन बहु जतन कहुं पायपरेनअ
राध्य ।। ८७ ।। जावक लीकलिलाटमें लोचन
पीक पिछानि ।। गह्यो मान वृषभानु जोपाय
परे हरिआनि ॥ ८८ ॥

अथ प्रनयमान

दोहा

०*०

खेल कलहमें होत जो प्रनय मान सो मान ।।

हरि कवि ताको कहत हैं उदाहरन सो जान ॥ ८९ ॥

आठ सातके फेरमें सारि दई करि झारि ॥
लीनी अंक ससंक हिय. जयतुवकहत मुरारि ॥ ९० ॥

कवित्त

—•(*)•—

कवे लाल चौपरि रमत ब्रजबालसंग प्यारीक है सोरह पियारो कहै सात हैं ॥ कुंजन मेंप्रन यमान गहि अभि राम वामदई सारि झारि हरि हियमें संकात हैं ॥ बैठो फिरि उतें एक टकतें चरन चितें ऊपर दिखाई रिस मन मुस कात हैं ॥ श्यांम हंसिल्याये अति आतुरबुझाये जासों जीवन की आसा तासोंपासा कहा बात हैं ॥ ९१ ॥

अथ संभोग संचारी मान

दोहा

—०—

भोगसंचारी मान हैं संपद सोंकरि संग ॥ अनुन य पूरब सो छुटै प्रगटै कला अनंग ॥ ९२ ॥
मन कठोर करि राखिहों करिहों मान प्रकार ॥
ज्योंसखि नैननि चाखि हैं रूप माधुरीधार ॥ ९३ ॥

अथ अष्ट नायिका लच्छण

दोहा

—*—

पूरब जो सब नायका वही आठ विधि होय ॥
ताके हरि कवि कहतहै घने ग्रंथ मतजोय
॥ ८४ ॥

वचनिका

—०—

पूरब अर्थात् मुग्धा, मध्या, प्रगल्भा, पर कीया और सामान्या ये पांचों आठ तरहकी होती हैं ये साधरन भेद हैं

अष्ट नायिका नाम

दोहा

(०)

नारि बिरहनी १ खंडिता २ कलहा तारता ३
नाम ॥ विप्रलब्ध ४ उत्कंठिता ५ वासकसज्या ६
वाम ॥ ८५ ॥ स्वाधिनपति ७ अभिसारिका
८ ये मिलिआठप्रकार ॥ हरि कवि लचण
कहतहै उदाहरन सविचार ॥ ८६ ॥

अथ बिरहनी लचण

दोहा

०(*)०

तीन भांति के विरह हैं जोउपजै तिनिकाज

॥ सो जामें हरि पाइये विरहिनि है सो बाल ॥ ९७ ॥

अथ विरह

दोहा

०—(*)—०

तियपिय सों विच्छेद जो बिरह मिलन कीआस ॥ पलक आदिदे कहत है जाके ब्रजमेंवास ॥ ९८ ॥

वचनिका

०—०—०

नायिकाविरहिनीएक ताकेतीनभेद प्रोखित पतिकाजाको कंथ विदेश गयोहोय, प्रोख्यत्पति काजाको कंथ बिदेश जायगो प्रोखत पतिका जाको कंथ बिदेश कोंचलत है नवनायिकाद स नायिका काहेको मानत है आगत पतिका नायिका कोई कहत हैं विरहिनी में सोनहीं सोतो संजोगिता है यही अर्थ दोहामें है

दोहा

—*—

विरह भेद हरि कीजिये कीजे नारिन भेद ॥ आगत पतिका जोकहै दूखन तहां अखेद ॥ ९९ ॥

यद्यपि मंडन आदिको कह्यो प्रमानहिपाय ॥

संचारी तहं मानिये इहां भेद जलगाय ॥ १०० ॥

पति आये अतिहरख है कोई बरने शोक ॥ सब कविके मततें परे दूखन तहां अशोक ॥ १०१ ॥

विरहिनि तीन प्रकार की प्रोखित प्रोख्यत अंत ॥ प्रोखत है यह भांतिते त्रिविधि लखो सब संत ॥ १०२ ॥

प्रोषितपतिका

दोहा

सारद चंद लखे जरे सखि चंदन देडारि । स्वासव दसो होत जब लागत मन्द बयारि ॥ १०३ ॥

प्रोषित पतिका उदाहरन

कवित्त

जबतें गमन गिरधारी मधुपुरी कीनों तबतें मनोभवकी फौजकीचढाई है ॥ नाचेंबन मोर सोर चातक चकोर करें किधों ताकी जीत गीत बंदी जन गाई है ॥ ऊठतही घटाअटा तजि चली कहिबाल घरीबिसभरी अरी आनि नियराई है ॥ हरिपंचबानमिलिमघवा मवासी व्रज जारिवे को मेघ मिसआन्सी उठाई है ॥ १०४ ॥

सवैया।

— ० —

अतिही झलकी झलकी छबिरी सरिता छल को चहुओरनसों ॥ धुनिछाईहै चातकके गल को जलकी दुति होति हिलोरनि सों ॥ हरि मोहनही कछु मोहन में हिय हालत योंन झकोरन सों ॥ धरके धुरवानि के धावनि सों दरके मुरवानि के सोरनसों ॥ १०५ ॥ चंदन फूलको माल सुगंध सखोजन देतिमही महिं गेरति ॥ मूरति माहको नैंन बसी नहि भूषनभोनकेकाज निवेरति ॥ भूषधों बालसों मागो बिदा तनिको तनको कहूं नींदनघेरति ॥ दौरि अटा चढिके छिनही छिन मोखनि झांकि झरोखनिहेरति ॥ १०६ ॥

कवित्त

— ० —

हिय में हुलासधरि फूलेहैं पलासमें नआमिल बसंतइनें सामिल के लीनो हैं ॥ ससिओक पोतकोर कोकिलसमीरधोर देखि दलभारी लोक कोकचितहीनोहैं ॥ चंचरीक प्यादे चहुं चक्रमें पठाए हरि हेरि राग महिमा विराग भयोछीनो हैं ॥ वेधिवे कों जोगिन वियोगिन के मानसकों अंजरसों मानोंसर पंजरसो कीनोहैं ॥ १०७ ॥

प्रोष्यत पतिका

दोहा

० — ०

कह्योलालजब बालसों चलिबे को परसंग ॥
सोचसरित में चितपस्यो सूनों कांम निखंग
॥ १०८ ॥

कवित्त

—०—

गमन बिदेसको ललनको पस्योहै कान सुधिबु
धि सोचकी सरति में सबै वही ॥ छिनही में
छला भुज मूलकों भजमलागे घूमिपरी भूमि
में सखिनिबाहियोंगही ॥ सोधिके सजीवनि
अचलन बिचाखो हरि दारुन बिरहलाय
देहमें दईमही ॥ बातनिके बीच प्रांन संकित
सहेनयाते नहींजाउंगो कह्यौन कह्योजाउंगो
नही ॥ १०९ ॥

प्रोषतपतिका

दोहा

(०—०—०)

जात कछुकदुरि फिर मिलत बिछुरत हियमें
संक ॥ बिनवत बिधिसों नांलगे तियतन तजनु
कलंक ॥ ११० ॥ बिरहिनि मुग्धाहोयजों ता
को दूहैसुभाय ॥ भीतर लहै सबै दसा करि

नहिं सकैलखाय ॥ १११ ॥ हियमें पावक बिरहकी राखी लाज दबाय ॥ ऊरपरसत तनकी तपत दारुन जानीजाय ॥ ११२ ॥

अथविरहकीदशा

दोहा

अभिलाषा १ चिंता २ कहैं अमरन ३ अरु गुनगान ४ ॥ अरुउद्वेग ५ प्रलाप ६ पुनि चित्त भ्रम ७ कोजान ॥ ११३ ॥ संज्वर ८ जड़ता ९ मरन १० पुनि यहदस दसाबिराह ॥ ह्वैहै रसकीहांनियों मरन इहांनसराह ॥ ११४ ॥

अथखंडिता

दोहा

औरठौर रति करिकहूं प्रीतम आवैपास ॥ लखम लखिसो खंडिता रिसवस होय उदास ॥ ११५ ॥
कहै बातजो चितचढे अनुचित उचित समान ॥ सोई ह्वैहैउत्तमा तजिरिस उत्तम मान ॥ ११६ ॥

दसा

दोहा

चिंतादीरघ स्वासधरि मनमें ह्वै संताप ॥ मौन

गहै ताकी दसा अस्फुटकरै प्रलाप ॥ ११७ ॥
नैंन लाललालन किए आएतिय ढिगप्रात ॥
चतुरि चाहि मुखरोषकी प्रगटत राख्योगात
॥ ११८ ॥

उत्तम

दोहा

—(०)—

नैंन उनींदे पटुपलटि आएनिकट विहान ॥
तजभयोमन भावतो तियहिय रूप सुजांन
॥ ११९ ॥

अथकलहांतरिता

दोहा

— ० —

हितकारी पतिकों तियाकोपि करै अपमान ॥
ताहिगए पछिताइसो कलहांतरिता जान
॥ १२० ॥

दसा

पद

—(०)—

भ्रमसंताप प्रलाप उसास ॥ मोह ज्वरादिहोत
दुखवास ॥ दसातियाकी ऐसीजानहु ॥ कवि
पंडितसवयाहि बखानहु ॥ १२१ ॥

दोहा

—१—

पियढिग बिनती करतहीं रूखेदिए जबाब ॥
कियो आपनो सौसलेसहीं कामको दाब
॥ १२२ ॥

अथविप्रलब्धा

दोहा

—(०)—

जासों करैसहेटपिय ताकेढिगनहिजाय ॥
ताहिविप्रलब्धा कहैं सो चितमें अकुलाय
॥ १२३ ॥

दसा

दोहा

—०—

ऊंचे सास उदास हिय हरे सखीको मान ॥
आसूंबूंद अचेतता ताकी दसासुजान ॥ १२४ ॥
सूनोलखि संकेतकोनैन अरुन करि नारि ॥
कहति कछुक संकोचवस राखति कोपसंभा
रि ॥ १२५ ॥

अथउत्कंठा

दोहा

——

प्रीतम कोनें कारने आए नहि संकेत ॥ चिंता
जो मन में करै उत्कासो यह हेत ॥ १२६ ॥

दसा

दोहा

—(०)—

रोदनकंपा स्वासगुरु जंभुआई तनमोर॥ रमन
विनासंतापहिय कहत दसा दुख जोर॥ १२७ ॥
चिंतति हरि आएनहीं गएऔर के पास ॥
गात मोरि जंभुआतितिय छल करिलेतिउसास
॥ १२८ ॥

अथ वासकसज्जा

दोहा

——

निश्चय दिन मेरो कियो पियआवहिंगेआज॥
वासक सज्जाजो रचे सामग्री रतिकाज
॥ १२९ ॥

दसा

दोहा

—+—

अभिलाषा सखिसोंहसे दूती सों बतराति ॥
सामग्री रतिकीदसा भग निहारि फिरजाति
॥ १३० ॥ चतुरि छिपाय सखीन सों साजे
सवे सिंगार। अति अभिलाष भरे लखें लोय
न कोयन द्वार ॥ १३१ ॥

अथ स्वाधीनपतिका

दोहा

—०—

जाको पति रति गुननि सों तजिसमीप नहि जाय ॥ स्वआधीनपतिका कहैं आज्ञावस गुन पाय ॥ १३२ ॥

दसा

दोहा

—०—

बन विहार अरुकामको उत्सव महा हंकार ॥ मिले मनोरथ यहदसा कही करतं सुबिचार ॥ १३३ ॥ दृगनिन खंजन चातुरी वचनन सुधा समान ॥ कहा समुझि मोसो बंधे हरितन् मन देप्रान ॥ १३४ ॥

अथ अभिसारिका

दोहा

— • —

आपुजायजो कंतढिग कंतहिलेत बुलाय ॥ ताहि कहैं अभिसारिका जो पंडितसरसाथ ॥ १३५ ॥

दसा

दोहा

—०—

झंप बुधि बल निपुनता समय रूप श्रृङ्गार ॥

परकीया को दसा यह स्वीया को न विचार ॥ १३६ ॥
परकीया डर लाज बस स्वीया में संकोच ॥
दासीमें कछु लेस है वेश्यामें मति सोच ॥१३७॥

अथ परकीया

दोहा

लाजनि निज वपु में छुपे डरि भूषन करि मोन ॥ घूंघट पट दीरघ रचे परकीया को गोन॥ १३८॥ प्यारी अभिसारी चली सारी श्याम शरीर ॥ छुपी जात निज गातमें कर नूपुर पगु धीर ॥ १३९ ॥ जहां लाज डर प्रेम अति रस बरसे अधिकार ॥ नहिं सो तहं जहं तिय पिया कुल बिन एक अगार ॥ १४० ॥

अथ स्वकीया

दोहा

—०—

गुरुजन बैठे गेह में नन्द देखि न लजाहि ॥ तज सकुचि पगु धरति मग की छवि सके सराहि ॥ १४१ ॥

दासी

दोहा

मदतें सारी बातनहिं आनन्द विकसे नैन ॥

दासी गति कछु मंदसी होति चलै वहिगौन ॥ १४२ ॥

उदाहरण

दोहा

०ः०

झमकि चली चितई बहुरि चतुरि नाह कें गैल ॥ कहति बात अधरे रहति मद बस पगु मन छैल ॥ १४३ ॥

अथ सामान्या

दोहा

—※—

उज्जल भूषन वसन अरु नूपुर की धुनि होय ॥
आनंद हास सुबास धन वेश्या गोने जोय ॥ १४४ ॥

हर्ष हास धन मन धरे करि नूपुर झनकार ॥
जाति मनो नृप मदन की छूटत है किलकार ॥ १४५ ॥

अंधकार दिन चांदनी करै जु तिय अभिसार ॥
परकीया सो जानिये याते तीन प्रकार ॥ १४६ ॥

इति अष्टनायका

अथ उत्तमा

दोहा

०※०

हित नकरे पिय जाहिसों सो हितकारी

नारि ॥ताहि उत्तमा कहत हैं उत्तम दृग्गा वि
चारि ॥ १४७ ॥ नख छत छाती में लसें अधरें
काजर रेख ॥ तऊ तिया अनखाति नहिं
आदर करत विशेष ॥ १४८ ॥

अथ मध्यमा

दोहा

हित अनहित कारी ललन तेसीतासोंहोय ॥
जोतिय ताकों मध्यमा कवि भाषत सब कोय
॥ १४९ ॥
पानपीक पलमें निरखि हटबैठी मुखमोरि ॥
हंसी तबै छल सों करी कान्ह सोंह करजोरि
॥ १५० ॥

अथअधमा

दोहा

नायक हितकारी सदा तियकोदुष्ट सुभाव ॥
अधमा ताकों कहतहैं जोजानें रसभाव ॥ १५१॥
नाहक रिस पियसों करै तू तिय नहिं रिझ-
वारि ॥ पावनि जावक देत जो बांधत केस
सँवारि ॥ १५२ ॥ उत्तमादि यहभेदतें सब तिय
तीनिप्रकार ॥ बुधिबल लचनसों लखी कियोन
भय विसतार ॥ १५३ ॥

॥ श्री ॥ इतिनायकाभेद ॥ श्री ॥

अथसखी

दोहा

—०—

नेह चाह विन जो करे सुख दुख एकै भाव ॥
समवय मन की रुच लखे सखी ताहि ठहराव
॥ १५४ ॥

अथप्रियसखी नर्मसखी

लक्षणएकत्र

दोहा

—०—

प्रयसखि छाया लौं चले सुरस नर्म रति देखि ॥
कविगन ताहि सराहि हैं नर्मसखी सुपरेखि
॥ १५५ ॥

अथप्रियनर्मसखीकीक्रया

दोहा

—(०)—

प्रिया नाह सुखसैंन में सखी रहै तिहि ठाँव ॥
प्रति मूरति सो आपनी प्रियपदपूजन नांव
॥ १५६ ॥ सिखभूषन परिहास अरु बहु विधि
याके कर्म। विदित सबै संचेप कछु बरनतहै हरि
सर्म ॥ १५७ ॥

अथसीक्षा

कवित्व

—•(*)•—

सीख देति हारी दसा और की पुकारी नेंकु चित में बिचारी नाहिं एतिक निडर है ॥ सोई निरधारी जामेंह्वै है दुखभारी अवलागत ॥ पिआरी परिनाम नसुधर है ॥ गहत् संभारी तौसुधारी सव कहि पारी एरी कहा पीछे पछताएं मोड करहै ॥ हरिजू सौं यारी तजि गहरी गरब वारी प्रीति मति जानें हेली आगिकी भतर है ॥ १५८ ॥

सवैया

———

कुंजन जेए तहां सुकुमार गहै रहिए ननदी सौं सकाई ॥ प्रीति जेठानी सौं लेनिवहो वलि राति में भौ न रहै तौ भलाई ॥ नेंन नचावन छांडो कहै हरि सास न मांनिए तोहि जताई ॥ राजी करै गुरु लोगनि कौं सु सखी सिख देति रचे चतुराई ॥ १५९ ॥

सवैया

सेत पहार अंगार भये अवनी जनु पारद माहिं पखारी ॥ सीतहो इन्दु उदोत लसें चहुं

और तें सोर चकोर के भारी ॥ फूली कुमोद कली निकली अवली अलि की वलि में निरधारी ॥ कोपिके चंद तियानि के मानपे आज मिआंन तें तेग निकारी ॥ १६० ॥

सवैया

—+—

आयो निहार निहारि चहुं दिस प्रीतमको वलि आदर दीजे ॥ देखि धौं आप विचारि बिचच्छनि कूकत कोकनि को तन छीजे ॥ धावहु नायक सों सखि मांन जिनें लखि बालनि को मनभीजे ॥ कैसो भरोस परोस को सौति को ओस की रैन में रोस न कीजे ॥ १६१ ॥

सवैया

—❈—

कूके चहुं दिस कोकनि के गन धूम सों धूम धरा पसरैगो ॥ लागि है सीत समीर शरीरनि तानि कें काम कमान अरैगो ॥ पैहै कहां हरि प्रीतम कों तब धूजत धीरज हू बिसरैगो ॥ मानि है तू न सखीन सों बाल निहार भले मनुहार करैगो ॥ १६२ ॥

अथसिंहावलोकन

कवित्व

—(०)—

कारी घटा उनई ब्रन की चपला चमकी मजि

भूषन सारी ॥ सारी निसा वितई पिय सों रुठि उठि चली तजिदै बुधिवारी ॥ वारी लसी नव फूलनि सों चित वे हरि तो हि गहें द्रुम डारी ॥ डारीहै तूं कछु मोहनी रूप सो बांधि मनै पुनि मान है कारी ॥ १६३ ॥

कवित्व

घेरि है अटारी श्याम घन की घटारी देखि गगन में वकनि की पांति अरु लाय है ॥ दादुरकी वानी अरु केकी मद सानी सुनि पिय की कहानी हरि कानन सुहाय है ॥ मंद परि बूंदें मन देगी मयंक मुखी न रहैगी नैनमूंदें मुरझाय है ॥ मिल है मनाए बिन मोहन लला सो वाल भादव की संपा जब कंपा उपजाय है ॥ १६४ ॥

अथ नायकसों सखीवचन

कवित्व

गोकुल तें आई एक ग्वलिनि कन्हाई बनी जोबन निकाई तुमें देखनि चहति है ॥ झीनी जाकी लंक हरि आनन मयंक भौं हैं राजति है वंक बान काम के सहति है ॥ जोहन में मोहन तिहारी छबि गोहन लगी है वाहि

जसनि निसासनि गहति है ॥ अंगन पै वारी रति पंनग कुवारी वाको रूप देखि रंभा तो अचंभा सी रहति है ॥ १६५ ॥

कवित्व

—*—

कंचन रचित मनि मानिक खचित बन्यौ बानिक करनि हरिकवि पिचिकारी को ॥ होरी खेलिवे को चाह गोरी वह आई लाल कहां लौं बखानौं रूप मयो नेहवारी को । अंगिन की सोभा देखि रति को द्वै दिमाग देखतही दहै दंभ पन्नग की वारी को ॥ हेरि वाके आनन की दुति सोम सरमात जोमजात छबि को पुलोम की कुमारी को ॥ १६६ ॥

कवित्व

—०—

पांनकी ललाई हरि होठनि में छाई गोरे गातकी मिकाई औ भुराइ बेसवारी है ॥ लोचन विशाल रूप सौति उरसाल अंग जोति देखि केतिक मसाल जोति वारी है ॥ सखी को समाज तहां राजति है आज चलि देखो ब्रजराज मानो लाज में सुधारी है ॥ बैननि में खुभी तुव नैननि में चुभी छबि जभी वही कामिनि कुसूंभी जाको सारी है ॥ १६७ ॥

कवित्त

—+—

गोरे याके अंग तामें छबि की तरंग कान्ह
सुमकि तरंग मानि कासों नेह धारयो है ॥
मंद चाल हेरें जात गरब गयंदनि को मुख की
मयूष पें पियूष वारि डारयो है ॥ जाकी भौंहें
देखें कहा धनुष मनुष को है वासव चढ़ाय
चाप समताकें हारयो है ॥ घन की घटा में
चढ़ि देखियें अटापें लाल यातें पाक सासन
सरासन उतारयो है ॥ १६८ ॥

कवित्त

—०—

राधिका वदन की अनूप छबि रासि लखि
सची रति रंभा के कटक रूप वारे हैं ॥ जाकी
सुदसन दुति दिसनि प्रकास करे हसनि पियूष
रस तूस करडारे हैं ॥ अब ताकी रचनां विचारि
चित मांहि चीन्हो निसई विरंचि यह आंनन
कों टारे हैं ॥ रंग राचि आधी साच सांच
देखो नभ मांहि चन्द भयो सबजे बिखरे चूर
तारे हैं ॥ १६९ ॥

कवित्त

—०—

भवा बाजूबंद सेज बंद बंधे तन तक्य कुच
उपधान धरे मन अभिराम की ॥ अंचल पर्लंग

पोस पवन खवास मानों लेत है समेटि जानि जगी हैं त्रिजाम के ॥ राधिका निहारि हरि कहत निकाई नीकी नेंकु न लहत रूप गुन देव बाम की ॥ त्रिवली उदर किधौं छाल छवि पट माहिं सोहत सलोट लोट पोट भए काम के ॥ १७० ॥

अथ सखीप्रतिसखी वचन

सवैया

—※—

फागु रमें बड़भाग भरी निसीं मोहन गोकुल गांव गली पर ॥ गावति गारि सबै ब्रजनारी सु डीठि गई व्रषभान लली पर ॥ आनन डारयो गुलाबको नीर चुवै कुचपै चित रंग रली पर ॥ बूंदे पियूषन की बरसें हरि इन्दु मनो अरविन्दु कली पर ॥ १७१ ॥

कवित्त

—※—

आवति सहेली ले लजीली होरी खेलिवे कों भूषन बसन नीको टीको लसे भाल पें ॥ गहें पिचकारी कर कुन्दन सुधारि मानो कंचन की वेली चली मिलन तमाल पें ॥ लोचन लचांवें चित पोको ललचावे भरी देखनको चावें

गारि गांवें सुर ताल पें ॥ घूंघट में दुरें झूठी मूठि उठे मुरें तिय केसो रंग डारें रंग डारति गुपाल पें ॥ १७२ ॥

सवैया

थाकी उपाय बनाय सखी जन बानी बिहंग नहु उचरी है ॥ काम कमान चढाय थक्यो नहि बाम ते मान की रीति टरी है ॥ सीत सहायक सीत समीर डुलावत वेलि न बाल डरी है ॥ लागी तबे हरि के हिय सों हंसि पाले परें तिय पाले परी है ॥ १७३ ॥

कवित्त

नीरतें निकसि चीर पहरि चली है बाल गलें मनि माल लांक चलें कुच भार तें ॥ मोहन को मोहिनी औ मोहिनी है मोहिनी की मोहिनी सी सोहै सखि सहज सिंगार तें ॥ छूटे केस पास पास मधुप सुबास लेत सुखमा कहत हरि मति अनुसार तें ॥ सुन्दर हुताशन की शिखा तें अवनि जेसे ढुखो धूम मानो मंद बिजन बयारतें ॥ १७४ ॥

सवैया

होरी में घेरि गुपाल कों बालनि नाचो कह्यो

—❖—

हनि माघ दिखाये ॥ अंजन देन यों आज ललामन रंजन अंजन नैंन दिखाये ॥ हाहा कहो व्रषभान लली ढिग बार हजार हहा हरि खाये ॥ गारि दे जेतिक नारि कहैं सुनि हांकरें मोहन सांकरें आये ॥ १७५ ॥

सवैया

—०—

तिय मंद ही मंद गयंदकी चाल चले सुधि सोधि हरे नंदलालकी ॥ कटि छीन छपा कर सों मुखमें मुसकांनि सुधा सम सौतिके सालकी ॥ मद जोबन के जुग नेंन छके न छुपे पट ओट फबी छबि मालकी ॥ पिय के उर में बरछी सी लगी तिरछी यह बांकी बिलोकनि बालकी ॥ १७६ ॥

सवैया

—०—

रजनी पति मेंनु मुसाहिब की नभ में परि पूर कला सरसी ॥ सरसी रुह लोचनि मानिक आनिकी कांन में जामति है गरसी ॥ कर सीत लग्यो जब केरव पे निकसी मधु पावलि यों दरसी ॥ गहि मोद कमोद उछारि करी सखि नीलम की नमछारुहरि सी ॥ १७७ ॥

सवैया

ग्रीषम तेज तपी अवनी हरि छांह रही त
रु कों उरधारि है ॥ लागि रही दवसी दसहूं
दिस घासते आपु ही सांत पधारि है ॥ दोप
हरो में चले तो भलो नहीं कोई औरही आ
य बिहारि है ॥ प्रीतम कों तकि कें सजनी
यह जेठ में भोंह अमेठ निहारि है ॥ १७८ ॥

अथ नायिका प्रति सखी वचन

सवैया

जे ब्रज माहि हितू सजनी सिख देत हमें
सिख देह मठारी ॥ सूरति आनि बसी हरि
की हिय में न हसी भय होत निहारी ॥
छोन के लाज नवीननि की अबने सुनि
सुन्दरता सुख कारी ॥ वा मुख की मुसकानि
लखें सखि क्यों रहि है कुल कांनि हमारी
॥ १७९ ॥

कवित्त

वातनि बुझावो भावे वेद औ पुरान गावो
कान्ह को हसनि सो वसत सिख पात है ॥
जासों मन हाम्रो गुरजन डर दूर डाम्यो मो

हि लखि लाज. को सरूप सकुचात है ॥ नेंकु कल परे नाहि टारे कहूं कबि टरे उपमा करत ताको छाया अरु गात है ॥ अज हूं मिलाव व्रजराज सब काम तजि देखि कहु कहा कहा बीच ठहरात है ॥ १८० ॥

अथनायकाभेद

दोहा

पति १ उपपति २ वैसिक ३ गनों । स्वीया १ परकीया २ रु ॥ सामान्या ३ के नायकनि क्रम ह्वौ है निरधारु ॥ १८१ ॥

अथनायकालक्षण

दोहा

दाता संदर हर्ष जुत क्रती सुशील कुलीन ॥ जुवा प्रतापी चतुर वर हरि नायक परवीन ॥ १८२ ॥

दोहा

धीरोदात १ सु कहत हैं धीरोद्धत २ पुनि जांन । धीरललित ३ नायक गनो धीर सांत ४ सु बखांन ॥ १८३ ॥

दोहा

—०—

धीरो दात सुजस छमा महा सत्व गंभीर ॥
विनय गरब पन दृढ धरें बहु गुन भरे शरीर
॥ १८४ ॥

दोहा

—※—

मायावी गरवी चपल गुनभाषी निरधार ॥
धीरोद्धत "परचंड अरु जाको दर्प अपार
॥ १८५ ॥

दोहा

—(००)—

धीर ललित निहि चिंत है कोक चातुरी
जांन ॥ सब कवि कोविद कहत हैं याकों
ललित बखान ॥ १८६ ॥

दोहा

—※—

धीर सांत द्विज जाति है जाको सुगुन समान ।
सिंगारी इन सबनके भेद चारि सो जांन ॥ १८७ ॥

अथ अनुकूल १ दक्षिन २

धृष्ट ३ सठ ४ लक्षण

सवैया

—०—

नायक सो अनुकूल कहैं दुसरी तिय जो
चित हू न चितावे ॥ दच्छिन सो सम प्रीति
गहै निज प्यारिन सों सब के मन भावे ॥ धृष्ट
करे अपराध घनो डर लाज न देखत दोष
छिपावे ॥ सो सठ एक सो प्रेम पग्यो कपटी
मुख ऊपर हेतु जतावे ॥ १८८ ॥

अथ अनुकूलादि उदाहरन

एकत्र

कवित्व

—१—

चित्र राम देखत निरेखी एक और नारि
दियो तिहि डारि मन सीता ही में लायो है ।
प्यारे दोऊ कामिनी समासनहिं बइठारि
कुन्तल सुधारि केलि कौतुक बढायो है ॥ उर
नख अंक हेरि रही प्यारी मुख मोरि हरि
हंसि सौंह करि दूषन छिपायो है ॥ काहू
पास कान्ह मन आयो राधिका को ध्यान
निन्हि रवि उदय उसास हि दुरायो है
॥ १८९ ॥

अथ पति०

दोहा

जाति नही तिय पिय निकट गहीं जिठानी बांह । पहुंचाइ वहि गेह ढिंग उन लीनी घर मांह ॥ १८० ॥

अथउपपति

दोहा

दोउ अंक ससंक हिय नहिं चूमत चख चारु ॥
छैल गैल हेरतकहत तिय महि नूपुर डारु
॥ १८१ ॥
नायक मानो चतुर को सब हीमें बिश्रांम ॥
बचन काज में चातुरी करे चतुर को काम
॥ १८२ ॥

अथमानी सठ

दोहा

थाकी रिस मिटि है तबै आपु पधारो लाल ॥
मान मेलि मिलिहै हमें करि है कांम हि .
॥ १८३ ॥

बाक्य चतुर सठ

दोहा

— ० —

हरि सुनाय तिय सों कही भई तमाल अना
र ॥ बावन में देखन गई कर गहि कियो वि
हार ॥ १८४ ॥

क्रिया चतुरसठ

दोहा

—※—

हौं निकुंज की केलि तजि आई उठि
रिसाय ॥ उन सखि पंकज पात में दोनों नीर
पठाय ॥ १८५ ॥

अथउत्तमनायक

दोहा

०※०

नारि कोपपरिहार कों जो पिय करे उपा
य ॥ उत्तम ताकों कहत हैं जो कवि कवित
बनाय ॥ १८६ ॥
बाल नयन लाली लखी कियो सखी को
वेश ॥ भेटत निज करतिय अधर कहि चूना
को रेख ॥ १८७ ॥

अथ मध्यम

दोहा

—÷—

जो पिय रूठी नारि सों रिस रस करे नसो य ॥ कविवर ताकों कहत हैं मध्यम नायक होय ॥ १९८ ॥

तिय नहि बोली पिय निरखि सहज फेरि हरि नाह ॥ सखिबोली आवो इतें पुनि हंसि पकरी बांह ॥ १९९ ॥

अथ अधम

दोहा

—०—

समय नजाने केलि को लाज भीति करि हीन ॥ अधम कहैं कवि ताहि कों जो रस सागर मौन ॥ २०० ॥

जाति परोसिनि साथ हों सखि घूंघट मुख डारि ॥ समय समुझि सकुचों हिये कियो खवें पट टारि ॥ २०१ ॥

अथ बिरही

दोहा

———

तजि तिय जो परदेस कों नायक करे पयान बिरही ताको कहत हैं ऐसें त्रिविध बखांन ॥ २०२ ॥

वचनिका

प्रोषित पति गयो प्रोषत पतिजात है प्रोष्यत पति जायगो

दोहा

—०—

हार भार जिहिं होत है ऐसो तन सुकुमार ॥ सोकैसें सहि है दई पावस बिरह पहार ॥ २०३ ॥

अथ अन्यभिज्ञ

दोहा

—०—

इक नायक अन्य भिज्ञ है जो रस जांनत नांहि ॥ सो जगमें जनमि वृथा ज्यों बंबूर की छांहि ॥ २०४ ॥

सोरठा

—❀—

मति आवे मोओर फिरें विचारत तिय बचन ॥ गए सु कहि हैं चोर कोई सूनो सदन लखि ॥ २०५ ॥

दोहा

—❀—

धीर आदि पति चारि हैं अनुमठांत हैं चारि

। लीला वसतें होत हैं षोडस विधि निरधारि ॥ २०६ ॥

उत्तमा

दोहा

—०—

उत्तमादि पुनि भेद तें मानौं अठतालीस ॥ दिव्य आदिके फेर तें इकसत चौआलीस ॥ २०७ ॥

देवदिव्य पुनि मानुषनि मान अदिव्य शरीर ॥ अर्जुन दिव्यादिव्य हैं हरि सब गुन गंभीर ॥ २०८ ॥

याही भांतिन नायिकनि दिव्यादिव्य उचार ॥ भेद करे सब तियनको वाढे ग्रन्थ अपार ॥ २०९ ॥

किये भेद जे तियनि में क्यों न होंहि पिय मांहि ॥ उहां अवस्था भेदतें इहां सुभाव लखांहि ॥ २१० ॥

वचनका

दसाके भेदसों नायिका भेद होत है । नायकके अनुकूल आदि भेद होत हैं सो सुभाव करिके ॥

दोहा

खंडित पति जो वरनिए रसको होय विनास । जो कछु उहां विदग्धता ताको सठ में वास ॥ २११ ॥
चारि अधिक गुन साठि हैं नायक में सुभ रूप ॥ प्रभु तजि श्रम तन वरनिये जगत गहे जस भूप ॥ २१२ ॥

अथ नायक के सहचर

अथ नर्म सचिव लक्षण

दोहा

हरि नायक सों जो सखा तियको करे मिलाप ॥ नर्म सचिव ताकों कहैं दूरकरे तन ताप ॥ २१३ ॥ सूधौ गेल बताय इत जित बैठे गोपाल ॥ बातनि बहराएं चले किये कपट को जाल ॥ २१४ ॥

अथ पीठ मर्द

दोहा

जो मानवती नारिकों करे सखा परसन्न ॥ पीठमर्द ताकों कहैं हित कारन अवसन्न ॥ २१५ ॥

कहा नैंन लाली गही करि घूंघट की ओट ॥
हरि उर में लर तें लगी मेरे नख की चोट
॥ २१६ ॥

अथबिट

दोहा

—०—

काम चातुरी में चतुर जानत बात अनेक ॥
बिट नामा वाकों कहैं जो चित लहैं विबेक ॥
॥ २१७ ॥
दूतो बीच न कीजिए चलें आपने होय ॥
तासों सकुच गहें कहा एक प्रान तन दोय
॥ २१८ ॥

अथचेटक

दोहा

—०—

चतुर होइ संधान में जानत तिय को चित्त
॥ चेटक तासों कहत हैं जो नर रचत कबित्त
॥ २१९ ॥
प्यारी हरि वहि कुंज में बेठे चेटक हेरि ॥
उत हल धर कों जात लखि इत अचरज की
हि टेरि ॥ २२० ॥

अथबिदूषक

दोहा

—०—

बे सरूप इहिं भांति को करे सखा जो हास
॥ ताहि विदूषक कहत हैं जाके हिय हुलास
॥ २२१ ॥

प्यारी सों हरि कुंज में चाहत कियौ किलोल ॥
कह्यो विदूषक वार ढिंग राजजी सम बोल
॥ २२२ ॥

इतिश्रीहरिचरणदासकृते
सभाप्रकाशेप्रथमो
ल्लास :

॥ श्री ॥

अथपूर्वानुराग

दोहा

रूप सुजस के श्रवन तें देखे तें व्हैराग ।
दंपति के चित मिलन विन सो पूरब अनुराग ॥ २२३ ॥
सुनें रूप हरि को छकी दिन छिन दा नहिं चैंन ॥ चढी अटारी टरति नहिं लिएं कटारी नैंन ॥ २२४ ॥

अथदर्शनतेंराग

दोहा

कछू जोग सखि हरि कियो मेरो मन अकुलाय । आछी तिरछी डीठि तें जब तें गयो चिताय ॥ २२५ ॥

अथचारिप्रकारकेदरशन

दोहा

चित्र स्वप्न प्रत्यक्ष सुनि दर्शन् को चोजातु ।
सुन्यों चित्र में स्वप्न में लख्योसु हरि मगुजातु ॥ २२६ ॥

अथभावहावहेला

दोहा

---०---

भाव हाव हेलाकही उपजत हैं यह अंग।
इहां सु हरि कवि कहत है भावपरें परसंग
॥ २२७ ॥

वचनिका

---०❀०---

भाव हाव हेला आदि अट्ठाईस स्त्रीके अलङ्कार हैं साहित्य दर्पन आदि में स्त्री कों अलङ्कार ही कहत हैं स्याईसों आक्रांत चित सो भाव भौंह नेत्र आदि के विकार सों संभोग की इच्छा को जतावनिहार ऐसो जो भाव सो जहां थोरो सो जान्यो जाय सो हाव कहावे। सोई भाव को जहां अत्यन्त प्रकाश होय सो हेला कहावे। भाव हाव हेला तीनि अंग सों उपजत हैं अंगजे हैं। सोभा आदि सात बिनां जल उपजत है। अजत्न जेहैं ग्रन्थान्तर में शृङ्गार तें मनके विचार तें जो उपजें हैं जो क्रिया हेला० लीला इत्यादि सब हाव कहावत हैं

अथहावनाम

दोहा

—०—

लीला १ बिलास २ बिछिति ३ अरु किल किंचित ४ बिब्बोक ॥ ५ मोट्टाइत ६ अरु कुट्टुमित ७ बिभ्रम ८ गिनो अरोक ॥ २२८ ॥ ललित ९ बिहृत १० मद ११ तपन १२ अरु मोऽध्य १३ बिक्षेप १४ बिचारि । कुतुहल १५ हसित १६ चकित ७ कहैं क्षेलि १८ हाउ निरधारि ॥ २२९ ॥

अथभावलक्षण

दोहा

—०—

निर्विकार जे चित्ततें उपजैं प्रथम बिकार ॥ आलंबन उद्दीप तें भाव ताहि निरधार ॥ २३० ॥

बचनिका

—※—

बिकार कहिए मनमैं कामकी चेष्टा

दोहा

आलंबन पिय नाइका उद्दीपन बन मोर ॥ औसर रंकज चांदिनो आदि मालती कोर ॥ २३१ ॥

अथआलंबनोत्थभाव

दोहा

—०—

तब हरि राधा एक सँग खेलत हँसत रिसात ॥ अब सुंदर वपु निरखि कें पुलकत हैं सब गात ॥ २३२ ॥

अथउद्दीपनोत्थभाव

दोहा

—(०)—

बालापन में कुंज तें कुसुम तोरि लेजाति ॥ अब चित औरें होत है चितें उतें अँगिराति ॥ २३३ ॥

कन्या मुग्धा तियनि को निर्विकार ता लेहु ॥ अरु मध्या प्रौढा नि को द्रस उपजि कहि देहु ॥ २३४ ॥

वार्ता

—†—

निर्विकार चित में प्रथम विकार उपजे सो जन्म तें निर्वकार ॥ चित कन्यां मुग्धा को है ॥ मध्या प्रौढा तो जब नायक को देखें तब ही कांम उपजे जोलों न देखे तोलों निर्विकार

अथहावहेलालक्षण

दोहा

भ्र नैना दि विकार तें प्रगट भाव ह्वै हाव ॥ अति विकार वाको लखें हेला सो कवि राव ॥ २३५ ॥

हरि तन में प्यारी कियो लोचन कोरनि छेद ॥ नयो राग मन संग लै गयो लहै मग भेद ॥ २३६ ॥

वार्ता

पहिलें नायिका नें नायक कों प्रेम युत देख्यो तासों भाव जांन्यों पर्यो ॥ अति बाहिर जाहिर नहीं भयो ॥ यातें हाव ॥ चतुरि छपाय सखीनि सों । यह बासक सज्जा को उदाहरन

इतिहाव:

अथहेलाउदाहरन

दोहा

हम उन बिन नहिं ऐरि वन पहिले लखे न ताहि ॥ फिरि कटाच्छ साहस किएं हनै ललित वपु वाहि ॥ २३७ ॥

वार्ता

पहिलें नहिं लखे लज्जा संचारी पीछे साहस करि धृष्ट होय कें निसंक कटाच्छनि सों मार्यो विकार बहुत जाहिर भयो ॥

दोहा

नासा मोरि नचाय दृग करी कका की सौंह ॥ कांटे लों कसकत हिये वहै कटीली भौंह ॥ २३८ ॥
बत रस लालच लाल की मुरली धरी दुराय ॥ भौंहनि हासति मुख नटति देन कहै नटि जाय ॥ २३९ ॥
ए बिहारी के दोहा उदाहरन ऐसें जानिएं ॥

अथसातअजतजहेला

दोहा

सोभा कान्ति सुदीप्ति पुनि माधुर्ज प्रगल्भता जांन ॥ सु औदार्य सु धैर्य है हरि कवि करत बखांन ॥ २४० ॥

अथसोभाकान्तिकेएकहीलच्छण

दोहा

—※—

वेष आदि छबि लवनता जुत हेला सो भाहि ॥ उद्दीपत दुति कांम वस सोभा कान्ति सराहि ॥ २४१ ॥

अथसोभाउदाहरन

दोहा

—०—

वेस नयो जोवन नयो नई लुनाई गात ॥ सँपरे हरि अनुराग सर अति उज्वल सो हात ॥ २४२ ॥

अथक्रान्ति

दोहा

※०※

को जानें सखि दृगनि में लगि है देखत आइ ॥ उडि पराग परि दृगनि में श्यांम रूप दरसाइ ॥ २४३ ॥

अथदीप्तिमाधुर्य

दोहा

००※००

अति विस्तीरन कान्ति कों दीप्ति कहै

कवि वर्य ॥ सर्व दशा रमनीय ता ताही लखो माधुर्य ॥ २४४ ॥

अथएकौथउदाहरन

दोहा

o----o**o----o

सहज लालई चरन की जावक रहित सु देश ॥ बिन रसना से बाल सीं सोहत है कटि देश ॥ २४५ ॥

अथप्रगल्भता

दोहा

—o—

दृढता कहैं प्रगल्भता कविजन सबे बिचारि । चुंबन आलिंगन किए चुंवति पुलकति नारि ॥ २४६ ॥

अथ औदार्य धैर्य

दोहा

—*—

सदा विनय सु उदारता कवि गन ताहि सराहि । सुख दुख मैं धीरज वडी निर्बिकारता आहि ॥ २४७ ॥

सचो कहा रति उर बसी कहा पन्नगी होय । तो छवि मो मन में बसी तो सी और न कोय ॥ २४८ ॥

अथ धैर्य

दोहा

०—०

फनी फननि पर पगु धरति भूतन सों बत राति । पूछति गैल चुरैल सों निश में पिय पें जाति ॥ २४९ ॥

अथ लीला

दोहा

०*०

अंग भेष ऽ लंकार तें लीला कतिनु कार । स्वगता एक सखी गता स्वप्रिय गता विचार ॥ २५० ॥

वार्ता

०—*—०

अनुकार को अर्थ नायक को रूप बनावे । स्वगता को अर्थ आपु नायक को रूप बनावे । सखी गता सखीकों नायक बनावे । स्वप्रिय गता आपु नायक बने नायक कों नायिका बनावें ।

अथ स्वगतालीला

दोहा

०॥०

सोस मुकुट कर वेनु गहि मृग मद खौर
चि अंग। चलो दांन दधि लैन कों वपुलखि
लजित अनंग। २५१।

अथसखोगता

दोहा

०॥०

प्यारी भूषन नाह के धरि सांवरि सखि गात॥
हँसति हंसावति उठि रुठति देखत हियो
सिरात॥ २५२॥

अथ स्वप्रिय गता

दोहा

०—०

प्यारेको बेनी रची प्यारी अरन सवांरि।
हरखि मुकुट बांध्यो ललन उन सिर बसन
सुधारि॥ २५३॥

अथ विलास

दोहा

—॥—

रहिवो गमन रुबेठिवो मुख हग आदि

सुजान । पिय लखि होत विशेष दुनि ताहि बिलास बखान ॥ २५४ ॥

दृग मोरति औरति मनहिं ठटकि चलति पुनि बेठि । सब कारनी आलस भरी करी नेंन हरि पेठि ॥ २५५ ॥

अथ विच्छित विव्वोक

दोहा

—०—

विच्छित कहि भूषन अलप ताही तें छवि होय । है विव्वोक सुदृष्ट की गर्व अनादर सोय ॥ २५६ ॥

एकत्र उदाहरण

दोहा

—०—

छला हार लीला कमल याहीं ते मनहारि ॥ सहज अंग सौरभ हरे अतर देति भिभि कार ॥ २५७ ॥

अथ किलकिंचित

दोहा

—०—

अमरख हास निषेध डर आंसू छल सौं देखि । भर्त्त रति आरंभ में किलकिंचित तिहिं लेख ॥ २५८ ॥

मोरि भौंह हंसि डरि रुखी बात कपट तें रोइ । पिय कर गहत उरोज जब हरत बसन बहि छोइ ॥ २५८ ॥

अथ मोट्टायित

दोहा

—❀—

मोट्टायित पिय बात मैं जो तिय हिय दे कान । चेष्टा करि निज गात की दुरवति लखे नश्रान ॥ २६० ॥

कहति सखी सखि सौं कथा हरि सोभा-को भौंन । चिकुटी मैं चिबली किये सुनैं कान छ्वै मौंन ॥ २६१ ॥

अथ कुट्टमित विभ्रम

दोहा

—❀—

गहत आदि कुच कुट्टमित क्रोध प्रगट हिय प्रीति । भूषन फेरे वेगतें कहैं सुविभ्रम रीति ॥ २६२ ॥

पियत अधर पिय सौं खिजे पुलकत जात शरीर । गल नूपुर पहिरत चली देखन कौं बलबीर ॥ २६३ ॥

अथ ललित मद

दोहा

ललित गात कछु विवस जो कोमल ता
तें होत । जोबनादिके गर्वतें मद विकार
उद्योत ॥ २६४ ॥
सूधे पायन परत नहि कुच नितंब के भार ।
जात नहीं सखि अल्त हरि भए रहत उर
हार ॥ २६५ ॥

अथ विहृत तपन

दोहा

कहिवेहु के समय में लाजन कहै विहृत ॥
चेष्टा कांम विकारतें तपन गएं पति सुहृत
॥ २६६ ॥
सुनेहु प्यारी न कछु बोली नेहु निहारि ॥
बोभिल वारिधि आगिले बारत मोहि बयार
॥ २६७ ॥
जी संजोग हि में कहैं उपजत हैं सब हाव ॥
तिन में दूषन दीजिये क्यौं करि होय बचाव
॥ २६८ ॥

अथमोगध्य विक्षेप

दोहा

मोगध्य कांत ढिग जांनि कै पुछे अजांन

बिक्षेप ॥ पिय आगम भूषन अरध करति काय न दृग क्षेप ॥ २६९ ॥

कहा कालि मां अधर में नेंन अरुन किहिं भांति ॥ महनों है तिन पहिरि कहि सखि सों लखे चकांति ॥ २७० ॥

अथकुतूहल हसित

दोहा

—*०*—

सु कुतूहल लखि रम्य सुनि चंचलता जो होय ॥ हास नयो जोवन गरव वृथा हसित तहं जोय ॥ २७१ ॥

चलो चपल सखि सों सुनी फूली लता लवंग ॥ ऐंडि पेंड मग में धरति बिहसि निरखती अंग ॥ २७२ ॥

अथचकित केलि

दोहा

—०—

चकित हितनि ढिग भय उदय काहू तें जो होय ॥ प्रीतम संग बिहार में खेल केलि है सोय ॥ २७३ ॥

अलि लखि लोल कपोल ढिग डरति भरति पिय रंग ॥ कांनन में चोपरि मची तिय के हरि के संग ॥ २७४ ॥

रस सूचक अनुभाव सम है कोई भो हाव ॥
बोधक रस कारक वली याते भिन्न गिनाव
॥ २७५ ॥

इति हाव

इति श्री हरिचरणदासकृत
सभाप्रकाशे द्वितीयो
ल्लासः

॥ श्री ॥

अथविभाव

दोहा

०—०(*)०—०

इक विभाव अनु भाव है स्थायी सात्विक मान ॥ संचारी कवि कहत हैं भाव पंच विधिजान ॥ २७६ ॥

अथआलम्बन

दोहा

—

जो अधार रतित्यादि को आलंबन सोहोय ॥ सुचि में नायक नायिका कहत दुबिध कविजोय ॥ २७७ ॥

आलंबन द्वै भांति को आश्रय विषय बखान । तिय आश्रय करि पिय विषय अन्त बुद्धि बल जान ॥ २७८ ॥

रूपभरी जोबन भरी कोक चातुरी खानि ॥ पिय हिय तासों बन्धिगयो निरखि नारि सुख दानि ॥ २७९ ॥

सब विभाव द्वै भांति के आलम्बन उद्दीप । सब ही रस में होत हैं कहैं सु कवि अवनीप ॥ २८० ॥

अथ अनुभाव

दोहा

—(०)—

ताहि कहैं अनुभाव जो प्रगट करै हियभाव। लहि विकार बाहिर वहैं उड़ा स्वर कविराव ॥ २८१ ॥

नृत्य गीत अरु लोटिबो तन मोरन पुनि सोर ॥ जम्भु आई हुंकार पुनि अरु निस्वास सजोर ॥ २८२ ॥

गिरै लार गुरु हास पुनि घुमटा हिचिकी जान ॥ औरि अनेक सुबुद्धि बल लच्छन तें पहिचान ॥ २८३ ॥

अथस्थायीभाव

दोहा

—०—

अविरोधी सविरोधजे भावहिलिएं सुहाय॥ सुन्दर भूपति लौंकहैं स्थायी भाव बनाय ॥ २८४ ॥

जामें भाव अनेक सब होंहि रहैं कुपिजांहि॥ स्थायी शब्द विचारतें लख्यो चले सो नांहि ॥ २८५ ॥

वचनिका

शृङ्गार में प्रीति स्थायी तामें शंका कोप

इत्यादिक केतीवार होंहिं और केतिक वार स्थायी में छुपि जात हैं प्रीति नहीं जाति है

दोहा

०००

सुचि में रति पुनि वीर में जानों है उत्साह। शोक करुन अद्भुत हि में विस्मय करत सराह ॥ २८६ ॥

हास्य हास भय जांनिही सु भयांनक में होय ॥ स्थायी रस विभत्स में सु जुगुप्सा कों जोय ॥ २८७ ॥

कोप रौद्र में भनत हैं तिन आठें रस नांन ॥ कहि कोइ नव शान्त सो तहां निर्वेद वखांन ॥ २८८ ॥

कोई समता कहत हैं औरस अधिके तीन ॥ रस नांमहिं स्थायी लखो यामें मिखन मीन ॥ २८९ ॥

अथसात्विक

दोहा

—०—

संवंधें प्रत्यचतें लहैं कछू व्यवधान ॥ भाव विवस जो चित्त ह्वै सत्व तहिकों जांन ॥ २९० ।

उपजे जो यह सत्व तें भाव अंगमें आय ॥ सात्विक ताकों जांनिए स्तम्भ १ स्वेद २ दरसाय ॥ २९१ ॥

सोरठा

रोमांच ३ स्वरभङ्ग ४ वेपथु ५ प्रलय ६ सु अश्रु ७ लखि ॥ पुनि वैवर्न्य ८ प्रसङ्ग सात्विक आठों प्रगट हैं ॥ २९२ ॥

दोहा

प्रलय कहैं चेष्टा रहित वेपथु कंपामांन ॥ सिथिल गात सो स्तंभ है विदित अर्थ सब आंन ॥ २९३ ॥

संबधंप्रलयकोउदाहरन

दोहा

प्रियके हाथन की रची दई सखी कहि माल ॥ छुवत छकी हरि रूप में चित्र लखी ह्वै बाल ॥ २९४ ॥

प्रत्यक्षतेंरोमांचस्तम्भ

दोहा

जाति अन्त सङ्ग सखिनिकी ललन अलो क्यों आय ॥ कुच किंचुकि रोमांच की मगु पगु दियो न जाय ॥ २९५ ॥

अग्रव्यवधानतेंस्वरभंग

दोहा

हरित मांन पिक बेंन को करति धीन गहि

गांन ॥ सुख दांनी वांनी सुनी रही अलापी तांन ॥ २८६ ॥

इतिसात्विक

अथतेतीससंचारीनांम

वचनिका

निर्वेद १ ग्लानि २ शंका ३ मद ४ असूया ५ श्रम ६ आलस्य ७ दैन्य ८ चिन्ता ९ मोह १० स्मृति ११ धृति १२ ब्रीडा १३ चपलता १४ हर्ष १५ आवेग १६ जड़ता १७ विखाद १८ औत्सुक्य १९ गर्व २० निद्रा २१ आपस्मार २२ विमर्ष २३ सुप्ति २४ अमर्ष २५ अवहित्था २६ उग्रता २७ उन्माद २८ व्याधि २९ मति ३० वितर्क ३१ मरन ३२ त्रास ३३

एतेतीससंचारीहैं

अथसंचारीलक्षण

कवित्त

निर्वेद है स्वनिन्दा १ औ रूप को विकार ग्लानि २ शंका निंद्य शंका ३ मदिरादि मद ४ जानिए ॥ असूया दोष नजरि ५ परिश्रम औ कहैं श्रम ६ शक्ति छतो आलस ७ दैन्य दैन्य ८ मांनिए ॥ अजोग्य बुद्धि चिन्ता कहा

ह्वै है जहां एसी है ६ मोह सो अचेत १० पूव
चिन्ता स्मृति ११ आनिए॥ धृति धीरताई १२
व्रीड़ालाज १३ चंचलाई ताहि चपलता १४
हर्ष चित बैभव १५ बखानिए॥ २६७॥

आवेग मद अद्भुताई तें चलत ताहि १६
जड़ता चले न कछु १७ विषाद दशा १८
देखिए॥ औत्सुक्य लालसा १६ गरब हंकार २०
निद्रा नींद २१ मुख वारि फेनसो अपसमार
२२ लेखिए॥ नींद बिना जो बिचार सो
विमर्ष २३ नींद हीन सुप्ति २४ औ अमर्ष
कोप २५ बुद्धितें परेखिए॥ अवहित्था दुरावे
रूप २६ उग्रता प्रचंड ताई २७ चित्त भ्रम
उन्माद २८ लक्षण विशेषिए॥ २६८॥

हिय व्यथा आदि व्याधि २६ स्मरन जथार्थ
मति ३० वितर्क डोर संशय ३१ कविन
उचाऱ्यो है॥ मरन प्रांन त्याग ३२ त्रास भयको
निवास ३३ इहां व्यभिचारी तेतीस कौं कौसुभ
विचाऱ्यो है॥ भावगति चाले रूप सोई अंगिकारे
पुनि स्थाई हीमें बूझि प्रगटत निरधाऱ्यो है॥
निर्वेद अपस्मार मरन कहत कोई शान्त इको
अंग सो शृङ्गार में निवाऱ्यो है॥ २६६॥

वचनिका

कौसुभ विचाऱ्यो है याको अर्थ॥ कौसुभ
ग्रन्थ है गोरे स्मरन को तामें सों संचारी
निकारे है॥ भाव गति तीजी तुक याको

अर्थ रतिकी गतिकों चलाय देय कोप प्रगट होय भावरति उत्साह आदि ताकी गतिकों चलाय देय मानादि रूप को अंगीकार करै ॥ चोथीतुक निर्वेद १ अपस्मार २ मरन ३ ए तीनि संचारी शान्त १ करुन विभत्स आदि में होत हैं शृङ्गार में नहींहोत हैं

अथउदाहरननिर्वेदग्लानिएकत्र

दोहा

धिग मेरे गुन रूपकों हरि हि न सकों रिझाय। एक राति पिय ना मिले गए गात मुरझाय ॥ ३०० ॥

अथशंकामद

दोहा

जोलों आवे अवधि दिन जिय तन रहै कि नाहि। पिएं वारुनी अरुन दृग तिय गहि पिय की बांहि ॥ ३०१ ॥

अथअंसूयाश्रम

दोहा

सहज ललाई पिय नयन लखि तिय कहति न बात। सुरत समर के श्रम सखी अलसोहैं सब गात ॥ ३०२ ॥

अथआलस्यदैन्य

दोहा

कौन जाय वहि कुंजतें ल्यावन मंजुलफूल ॥
श्यांम शरीर सरोज दृग हौं दासीतुवतूल ॥
२०३ ॥

अथचिन्तामोह

दोहा

दूर कुंज भावी कहा मगु जगी शशि वीर ॥
हरिको रूप अनूप लखि गिरी धरनि तज
धीर ॥ २०४ ॥

अथस्मृतिधृति

दोहा

याहि कदंब चढे सखी हरि हर मेरेचीर ॥
चलत अमंगल मांनि तिय रोक्यो नेंननि
नीर ॥ २०५ ॥

अथव्रीड़ाचपलता

दोहा

पिय निरखत तिय पीठदे बैठी घूंघट डारि

॥ छिनक वार छिन चढि अटा देखति हरि मुख नारि ॥ २०६ ॥

अथहर्षआवेग

दोहा

अंगन अंग समात सुनि ऐ हैं नन्द कुमार॥ सुनि वंशी वन को चली तोरति लाज किवार ॥ २०७ ॥

अथजड़ताविषाद

दोहा

चित्र लखी सी ह्वैरही सुनि पिय जात विदेश । प्रांन पियानौं करत सखि सहै न विरह कलेश ॥ २०८ ॥

अथऔत्सुक्यगर्व

दोहा

सो दिन के सोह्वै सखी हरि सौं जुरैसनेह ॥ कहा बुलावनि जाति अलि ऐ हैं आपु हिगेह ॥ २०९ ॥

अथनिन्द्राअपस्मार

दोहा

०॥०

सोवत प्यारी श्यांम संग चपला घन उप मांन ॥ फेंन सहित मुख रस गिरयो द्विज अनन्त की गांन ॥ २१० ॥

अथ विमर्श सुप्ति

दोहा

—०—

भूली हरिहि सहेट सुधि सखि नहिं कही बुझाय ॥ सेज सोय तिय पिय अधर पियति लाज दरसाय ॥ २११ ॥

अथ कोपअहित्था

दोहा

—०—

वाही के ढिंग जाहु हरि जहां जगे ही रैंन । उर नख रेख दुरै न सखि चन्दन लेप करैंन ॥ २१२ ॥

अथ उग्रता उन्माद

दोहा

०००

समुझि परैगी सब तुम्हें रोकी बूझि विचार ॥ ध्यांन गहैं हरि रूपकौ मुकुट संवारति नारि ॥ २१३ ॥

अथ व्याधिमति

दोहा

—०—

हिय की पीर परेखि कैं को हरि फेरे फेरि । नव जोबन सुत नन्द को रोकत होत अबेरि ॥ २१४ ॥

अथ वितर्क मरन

दोहा

—*—

बंसी धुनि के मोहिनी किधौं काम के बान । कहि हो मरी बसंत में सुनि कोकिल शुक गान ॥ २१५ ॥

अथ त्रास

दोहा

०---(*)---०

निसि कारी भारी घटा सुनि घन गरज सशंक । नवल नारि प्रीतम हियो हरति दुरति बिच अंक ॥२१६ ॥

इति संचारि भाव

अथ भावसंधि

दोहा

०००

भाव सरूप विरूप की प्रगट निसंधि सु आहि। कारन भेद सरूप में भाव एक ही चाहि ॥ ३१७ ॥

नभ में घन घेरो कियो आए घर घनश्याम ॥ कुच बिच पुलका वलि किएं मिलति नवेली बांम ॥ ३१८ ॥

मेघ को आवनो श्याम को आवनो भिन्नभिन्न कारन सों कार्ज आनन्द होय उपजी सो सरूपहै एक रूप है

दोहा

एक हेतुके भिन्न तें भाव भिन्न जुति होय। संधि सराहत कवि कहैं उदाहरन रस भोय ॥ ३१९ ॥

अथ एक कारन तें

दोहा

लाज हर्ष हिय में बढ़े गंही नाह जब बांहि। पिय मन में आनन्द नहीं रची कहतके नांहि ॥ ३२० ॥

बांहि पकर मों कारन एक तासों कारज विरूप कहिए. भिन्नरूप लाज हर्ष उपजे ॥

अथ भिन्नकारन तें भिन्नभिन्न भाव

दोहा

दूत दारुन देवरसदन कुंज गए ब्रज चन्द ॥
सट पटात परि तिय हियो त्रास हरष के फन्द ॥ ३२१ ॥

देवर को रहनों नायक को जानों कारन होय भिन्न भिन्न । तिन सों त्रास हर्ष कार्ज भिन्न भिन्न उपजे

दोहा

एक हेतु के बहुत तें भाव बहुत जो अंग ।
संधि ताहि को जानि ए बरनत हैं रस रंग ॥ ३२२ ॥

अथ एक हेतु तें बहुत

दोहा

भो विषाद शंका सहित चिंता जड़ता गात । हरि गहि अंक निकुंज में कह्यो चलूं गी प्रात ॥ ३२३ ॥

चलनौं कारन एक बिषाद आदि कारज बहुत ॥

अथ अनेक कारन तें अनेक कार्ज

दोहा

० ❊ ०

जात समर को बीरसौं सोति सदन प्रस्थान । त्रास कोप सविषाद हिय तरफरात तिय प्रान ॥ ३२४ ॥

इतिभावसंधि

अथभावसावल्य

दोहा

—०—

दोइत भावहि भावजो उपजतबहुत शरीर ॥ ताहि कहत सावल्य सो जो कविगनमें धीर। ॥ ३२५ ॥

पियकौं कछू न कहि सकौं कहँ कहुँ तजि जाय । हौं अधीन वाके सदा क्योंकरि सकौं रिझाय ॥ ३२६ ॥

उग्रता ॥ १ ॥ शंका ॥ २ ॥ दैन्य ॥ ३ वितर्क ॥ ४ ॥

अथभावशान्ति

दोहा

—※—

बढ़ें भाव कारनलहैं छुटें शांति बहु होति ।
तजि विषाद हरषी हिये लखि हरि सुख
को जोति ॥ ३२७ ॥

इतीश्रीहरिचरणदासकृतेसभाप्रकाशे

तृतियोल्लास:

—०÷+÷०—

अथरसलक्षण

दोहा

—०—

रोधकरे सब करनको जो सुख औरें काम ।
आदि विभावनि सों मिल्यो सो रस है अभि
राम ॥ ३२८ ॥

करन इन्द्रिय सब तिनको औरि काजें सों
रोकें जब रस उपजे

दूसरोलक्षण

दोहा

—※—

मिलि विभाव अनुभाव अरु संचारीजे आन।
उपजावत रस रुचिर यों ज्यों मिलि अंगनिपांन
॥ ३२९ ॥

वचनिका

ज्यौं निज अंगनिपांन याको अर्थ ॥

निज अंग चूना कत्था सुपारीए पान में दिए रंग होय पांन के अंग है । आन कहिए स्थाई सात्विक विभाव आदिसौं मिलि कै स्थाई भाव अति बढि जाय तहाँ रस होय । और जहां कमी रहै सो भाव ॥

दोहा

o----o*ॐ*o----o

कहूं होय जो जनता मनमें बोध अपार ॥ तुरत ताहि गहि आनि ए दोष नहीं निरधार ॥ २३० ॥

वचनिका

कवि के मन में अपार बोध हैं जाको पार नहीं अर्थकरत में जो सब भाव हो होय तो संचारी आदि ऊपरसौं ले आइए कहूं जो जनता होय विभाव आदि पांचों न होंय एक दोय होय और को अर्थ करत ऊपर सौं लेआइए सब रस होई तो कोई कहैंहैं विभाव आदि एक दोय भी रस कौं करैंहैं तिनके उदाहरन एकत्र ॥

दोहा .

कहुं को धीरज धरि सके रहे मान नहि नीठ । रितु पतिके महराज में देतलखो नहि पीठ ॥ २३१ ॥

वचनिका

नायिका विभाव धीरज मान संचारी रितुपति को राज बसंत उद्दीपन पीठ देनौं अनुभाव स्थाई सात्विक ऊपर सौं ल्याइए प्रीति बिना मान होय नहीं प्रीति जानौ परै है मान में आंसू सात्विक और के मत में विभाव संचारी उद्दीपन अनुभाव हो रस भयो काहे को स्थाई सात्विक ल्याइए ॥

अथशृङ्गारलक्षण

दोहा

रम्यदेशअरु चातुरी समय आदि देवेष । इनतें तिय पिय रंजनै मधुरा रतिसु विशेष ॥ २३२ ॥

जहां नायक नायिका संभोग को चाहै सो मधुरा रतिकहाती है

दोहा

ललित अंग संचलन में सो रति पाय प्रदर्ष । उपजत रस शृङ्गार सो कविगन कहत सहर्ष ॥ २३३ ॥

सो रति पाय प्रकर्ष याको अर्थ सो मधुरा रति प्रकर्ष अधिकाई पाय के शृङ्गार रस उपजे है सो मधुरा रति कैसी जोपिछले दोहा में कहि आए हैं ॥

दोहा

—०००—

द्वै प्रकार शृङ्गार रस कहैं संजोग वियोग ॥
मिलिबो अनमिल आदि दै बरनत पण्डित लोग ॥ २२४ ॥

अथवीरलच्छन

दोहा

जुद्ध धर्म अरु दयातें वीर दान लेचारि ॥
राधा पतिकों जानिहों लीला अन्त बिचारि ॥ २२५ ॥

कोई धर्मवीरही में दया वीर कहैं हैं

दोहा

०—(❁)—०

देश कोश सुत बंधु वपु नासन नेंकु लखात ।
ऐसो जो उत्साहसो, थाई वीर विख्यात ॥ २२६ ॥

प्रगटतहैं उत्साह प्रति ताहि लखो रसवीर ॥

अथकरुन

०*०

इष्टनाश जु अनिष्टतें करुन रुशोक शरीर ॥
॥ २३७ ॥

करुनको शोक शरीर स्थाई कह्यो किंवा शरीर कह्यो ॥

अथअद्भुतहास्य

दोहा

—०—

लखें असंभव होतजंह अद्भुत विषय रूप ॥
वेस वचन आकृति विकृति हास्यजु हास्यसरूप
॥ २३८ ॥

अथभयानक

दोहा

—०—

होत भयानक भय मिलें नीच आदिजे और ॥ वध बन्धन वन कों गिनें लखि निशि सूनीओरि ॥ २३९ ॥

अथविभत्स

दोहा

—०—

रस वीभत्स दिखावहीं ए जुगुप्साकीखांनि ॥
जाके अनुभव तें प्रगट चितमें होति गिलांनि
॥ २४० ॥

अथरौद्रशान्त

दोहा

वैर आदितें होत है रौद्रकोप पद देख। शान्ति सुके निर्वेदतें शान्त प्रान गहलेख ॥ ३४१ ॥

अथदास्यसख्यवात्सल्य

दोहा

कहैं दास्य १ अरु सख्य२ पुनि कवि वात्सल्य ३ बनाय। रूप देवता औरि हैं इनमें नांह समाय ॥ ३४२ ॥

अथ मुख्यपांचरस गौनसातरस

दोहा

तीनि इहैं पुनि शान्त सुचि मुख्य बीरले सात। गौंन कहावत होत हैं इनमें अरु छिपिजात ॥ ३४३ ॥

ए पांचो रस मुख्य दास्य १ सख्य २ वात्सल्य ३ शान्त ४ शृङ्गार ५ ॥ एसातु औरि बीर १ करुन २ अद्भुत ३ हास्य ४ भयानक ५ बीभत्स ६ रौद्र ७

नवरसनाम

दोहा

—※—

सुचि १ पुनि वीर २ रु करुन३ है अद्भुत ४ हास्य५ हिजान ॥ सु भयानक६ वीभत्स ७ है रौद्र ८ शान्त ९ नवमान ॥ ३४४ ॥

अथ रसरंगनाम

दोहा

———

श्यांम१ गौर २ धूंमर३ लखो पिङ्गल४ पांडुर रंग ५ ॥ काल ६ नील ७ अरु रक्त ८ गिन शान्त स्वेत ९ शुभ अंग ॥ ३४५ ॥

हास्य आदि जे तीनि हैं चित्र १ अरुन २ रंग सोन ३ ॥ माधव १ देव उपेंद्र २ हैं अरु नरहरि ३ बपुदोन ॥ ३४६ ॥

अथरसदेवता नाम

दोहा

—÷—

नंदज १ कल्की २ रांम ३ हैं कच्छप ४ बल ५ बाराह ६ ॥ बुद्ध ७ परशुधर ८ कपिल मुनि ९ क्रम रसपति हि सराह ॥ ३४७ ॥

अथहास्यउदाहरन

सवैया

कबहीं चुनें झीन झंगाकर सों पियरी पगिया हि वंधावति हैं ॥ हरषें पुलकें जब नामले श्याम सु दास कों पास बुलावति हैं ॥ कबही लखि मंजुल कंचनि कों हरि के पगु के गुन गावति हैं ॥ जुगपांनि कों जोरें रहैं कबही कवे चौंर सों भौंर भजावति हैं ॥ २४८ ॥

अथसख्य उदाहरन

दोहा

ऊधो सों सूधे कहैं हिय की सबै मुरारि ॥
मांनें कछु मांनें नहीं रीझखीझ उर धारि ॥ २४९ ॥

नहीं कपट प्रभुता रचे समता रहे सुएक ॥
प्रति मूरति सो आपको तहां सख्य स विवेक ॥ २५० ॥

अथ वात्सल्यउदाहरन

दोहा

छोटी छूटी जुल्फ मुख लिए गोद में नन्द ॥
पुलकत हरषत हरि कहत गहि दीजे मुहि चन्द ॥ २५१ ॥

यह तीनि रस भक्ति रसामृत सिंधु में गौड़ स्यनि के मतहैं ॥ अलंकार में आठ रस हैं शान्त रस नाट्यशास्त्र को मत है ॥ इनके ज्ञान के लिए सब लिख्यो है वात्सल्य रस तो साहित्य दर्पन में भी है ॥

अथ रसनि के मित्र शत्रु

शृङ्गार के मित्रशत्रु

दोहा

—:—

बीरदोय पुनि मधुरकों हास्य सख्यदे मीत ॥ बत्सशान्त बीभत्स भय रौद्रकहैं अनहीत ॥ ३५२ ॥

उदाहरन शृङ्गार में बीरहास्य

दोहा

———

भीषम जा मुख निरखि हरि हसतरु पुलकत अंग ॥ गह्यो सुरुकमी की जबैं करत प्रत्रु के भंग ॥ ३५३ ॥

इहां भीषम जा आलंबन विभाव सों शृङ्गार सुभट आलंबन सों बीर रुकमी विभाव हास्य रसको ॥

अथशृङ्गार के शत्रु

दोहा

० ॐ ०

मिस भोजन दीजे लला कहा चहत रति मोद ॥ सूख्यो दूधन अधर को छूट्यो बासन गोद ॥ २५४ ॥

यहांशृंगार बात्सल्य

अथशृङ्गार शान्त उदाहरन

दोहा

—०—

मोहति तीखेनैन सों सुधा बैन कहि बांम ॥ मति ललचाय चलाए चित सब झूठो पर नांम ॥ २५५ ॥
यहां शृंगार में निर्बेद स्थायी सों शान्त रस भयो

अथशृङ्गार में वीभत्स उदाहरन

दोहा

—ॐ—

हंसिए रसिए हिलि मिली करिए विविध बिलास ॥ कहा निकारति नाकसों मिली सली पिय पास ॥ २५६ ॥

शृङ्गार रौद्र उदाहरन

दोहा

—❀—

आज मिले वह कामिनी तोरौं दांत बतीस ॥
इतौं सखी समसेरसौं यौं कहि भयो सरीस
॥ २५७ ॥

अथवीरकेमित्रशत्रु

दोहा

—❀—

दास्य वीरको हास्य अरु अद्भुत मित्र
श्र्यार ॥ सुभयानक पुनि शान्त रस दुष्ट कहैं
निरधार ॥ २५८ ॥

अथमित्रवीरदास्यकोउदाहरन

दोहा

—।—

दंड काज को दंड गहि लख्यो सुभट दल
पाय ॥ केते भाजे रन गिरे पाय परे फिरि
आय ॥ २५९ ॥

पाय परिवे में दास्य रस जो कोई दास्य
नहीं मानै हैं ते इहां संचारी दैन्य कहै हैं

अथवीरअद्भुतउदाहरन

दोहा

काटत तीखे सरनि सौं रावन के दस माथ ॥
नए नए सिर होत लखि थकित रहे रघुनाथ
॥ २६० ॥

अद्भुत में नए सिर आलम्बन विभाव थकित स्तंभ सात्विक

अथवीरमित्रहास्य

सख्यएकत्र

दोहा

—१—

संग वन्दर तपसी लिएं लरत हंस्यो लंकेश। लगी अर्ज्जुन अंग सर आगें होत रमेश ॥ २६१ ॥

अथवीरकेशत्रु भयानक

शान्तकोउदाहरनएकत्र

दोहा

—०—

छुटी तोप बांनें छुटे थहरांनें सब अंग। लरत सबनमें मानि हरि दोनें डारि निखंग ॥ २६२ ॥

जिन वीर को बरनन करिवे लगे ताहीको डर भयो तासों विरुद्ध अरु शत्रु में भय होय तो दोष नहीं वीरमें शान्त रस इहां समता स्थायी भावसों भयो

अथकरुनकेमित्रशत्रु

दोहा

—०—

मित्र करुन को रौद्र है वत्सल हू औ

मांन । अद्भुत भोग सिंगार पुनि बैरी हास्य हि जांन ॥ २६३ ॥

अथमिश्रकरुनरौद्रको

उदाहरन

दोहा

सीताके सन्ताप तें अति व्याकुल हिय रांम । कह्यो पलक में मारि हौं लंका ज्यों लघु ग्रांम ॥ २६४ ॥

इहां सीता हरन सौं करुना रस ता में कोप सो रौद्र रस भयो

अथकरुनवात्सल्यहू

मिश्रउदांहरन

दोहा

—※—

कहां सेज कहां तेज हय कहां बिछोनां पात । ह्वै हैं सोए सुत कहूं पथके थाके गात ॥ २६५ ॥

कौशल्या की उक्ति करुना में वात्सल्य

अथकरुनकेशत्रु अद्भुतहास्य

शृङ्गारकोएकत्रउदाहरन

दोहा

—•—

पंचवटी के निकट लखि हंसे जनक जा जात। राम सुमन बस काम भौ निरखि सलोंने गात॥ २६६॥

पार्वती सीता को रूप धरि आई जहां शोक में हसि कें काम व्यापे तहां करुना रस को नाश होय

अथअद्भुतकेमित्रशत्रु

दोहा

—०—

शांत दास्य सुचि सख्य पुनि वत्सल श्रोहित वीर। अद्भुत के वैरी कह्यों रौद्र विभत्स सु धीर॥ २६७॥

अथअद्भुतमित्रशान्तदास्य

उदाहरन

दोहा

—:—

लख्यो थंभ तें नरहरी जगत ब्रह्म मय जांनि। उपज्यो ज्ञान लियो बहुरि भक्त वत्सल प्रभु मांनि॥ २६८॥

सर्व मय ब्रह्म लख्यो तासों शान्त रस प्रभु कों भक्तवत्सल कहे दास्य इस हेतु थंभतें नर हरि निकसे यह अद्भुत

अथअद्‌भुतशृङ्गार

उदाहरन

दोहा

—०—०—

वन कुसमित लीलानि लय लखि उपज्यौ मन मैंन। तरवर तें तरुनी कढी देखि बढ्यौ पुनि चैंन ॥ २६९ ॥

इहां वन लीला घर उद्दीपन तरवर तें तरुनी निकरी यह आश्चर्ज तें अद्‌भुत शृङ्गार को मेल भयो वीर अद्‌भुत तो पीछें कह्यो *काटत तीखे सरन सौं औरि जांनि लीजिए

अथअद्‌भुतकेशत्रु रौद्रबीभत्सको

उदाहरनएकत्र

दोहा

कहा जीव नव हाथ को मारौं याहि पछारि। दिनमें मेलि पिशाचिनी देखि दियो थुथकारि ॥ २७० ॥

यहां कोप सौं आश्चर्ज दवि गयो यातें अद्‌भुत भयो दिन में पिशाचिनी देखें आश्चर्ज मेली देखें बिभत्स भयो थुथकारिवो अनुभाव

अथहास्यकेमित्रशत्रु

दोहा

—०—

हास्य बंधु बिभत्स सुचि सख्य सवत्सल आहि। करुन भयानक कौं कहैं ताकौं दुष्ट सराहि ॥ २७१ ॥

अथहास्यकेमित्रविभत्स

शृङ्गारकोउदाहरन

दोहा

—०—

हंसै बात कहतैं जबैं पर्यो अधरते लार। पास सखी लखि तोतली हंसि दंपति रिझवार ॥ २७२ ॥

और जांनि लीजिये

अथहास्यकेशत्रुकरुनभयांन

ककोउदाहरनएकत्र

दोहा.

—✻—

हंसति हुती पिय सौं तिया सुन्यो सखीको काल। भुल्यो हास भौं त्रास हिय लखि कै छवि विकराल ॥ २७३ ॥

अथभयानककेमित्रशत्रु

दोहा

लखो भयानक को करुन रस विभत्स ही दृष्ट । और हास सुचि रौद्र पुनि ताको है अति दुष्ट ॥ ३७४ ॥

उदाहरनएकत्र

दोहा

मरी नारि नर अस्थि कर देखि चल्यो दृग नीर । चित ललच्यो छबि लखि हंस्यो कोपि गह्यो धनु तीर ॥ ३७५ ॥

मृतक देखें भय लखी तासों करुना हाउ देखि वीभत्स और जहां चित ललच्यो हंस्यो धनुष गह्यो तहां भयानक जातो रह्यो

अथवीभत्सकेमित्रशत्रु

दोहा

हास्य दास्य वीभत्सके शान्त कहावत मित्र । सख्य बहुरि शृंगार रस द्रोही मान विचित्र ॥ ३७६ ॥

एकत्रउदाहरन

दोहा

मलिन मगन हरि में मगन फिरे बढावत

हास। तजि कुचीलता क्राय तिय पहिरे भूषन वास॥ २७७॥

मलिन सों वीभत्स नगन सों हास्य हरि में मगन यामें हास्य शान्त निकरे हैं स्नान आदि किये वीभत्स को नाश सख्य ऊपर सों जांनि लीजिये

अथरौद्र के मित्र शत्रु

दोहा

करुनवीर रस रौद्र के सोदर बंधु समांन। हास्य भयानक सुचि मिलें रस को होत जिआंन॥ २७८॥

एकत्र उदाहरन

दोहा

अरुन किए दोऊं नयन लखि भगिनी बिन नाक। हंस्यो जटिलके कर्म लखि डर्यो छाडि हिय बांक॥ २७९॥ लाल नेत्र सों रौद्र विना नांक सो करुन बीर जांनि लीजिए

अथशान्तकेमित्रशत्रु

दोहा

धर्म बीर बिभत्स रस दास्य शान्त को हेत।

जुद्ध वीर भय रुद्र पुनि अद्दित सिंगार समेत
॥ ३८० ॥

उदाहरनएकत्र

दोहा

—०ं०—

देह मलिन दृढ नेह हरि करै जगत उप
कार। संजोगी जोगी फिरैं कोपि करैं पर
हार ॥ ३८१ ॥

हरि में दृढ स्नेह है शान्त देह मलिन है बीभत्स आपनौं जीव जायतो जाउ जगत कौ उपकार करै है धर्म वीर जोगी कहें शान्त रस जुक्त सौं संजोगी सुंदरी के वस शृङ्गार सो कोपि कैं प्रहार करै कोपमें रौद्र प्रहार सौं वीर उदाहरन संक्षेप अर्थ वनाय ऊपर सौं लगाय लीजिए

दोहा

प्रत्र मित्र सब के कहे करि कैं ग्रंथ विचा
र। जो जाको नकश्ती इहां सो समान निर
धार ॥ ३८२ ॥

अथपूर्णरस उदाहरन

अथश्रृङ्गार

कवित्त

—*—

सीतल समीर धीर कुंज जमुना के तीर
नयो वेस श्याम संग श्यामा विहरति है। पुल
कि पसीजें गात नटि हंसि सतराति एक मेक
अंक में निशंक ह्वै लसति है। बिनती सुरति
बिपरीति की सुनत स्रोन घूंघट बढाय मुख
मोरि बिहसति है। कौन कबि तिरछी छबी
लीको चितौन कहै देखिजाहि काम हू की
चौकरी चलति है॥ ३८३॥
समीर कुंज उद्दीपन पुलक स्वेद सात्विक
नटिबो फेरि हसिबो फेरि सतरानो यह हि
य को प्रीति समुझावे है यातें अनुभाव अंक
में एकमेक होनों रति स्थाई घूंघट बढावनों
लाज संचारी जमुना को तीर कुंज सुन्दर
देश शृङ्गार को लक्षण लग्यो नायक नायि
का आलंबन विभाव॥

अथ पूर्ण वीररस

कवित्त

—०—

अंगनि उमंग भरे संग सबवीर करे लरे
रघुबीर बीस भुज मद हरि कों। पुलक भरी
र मुख पंकज में स्वेद नीर भ्रकुटी कुटिल
छुरि जाति जोर करिकें। रंग भूमि हेरें

सुर रघु कुल जस टेरैं रिपु सीस सोनित सरित छीत ढरिकैं । जोगनी अघानी बार बार सींचे शिवरानी हर कहुं ऐहैं घर तूवा ज ले तरि कैं ॥ ३८४ ॥

राम राम आलंबन विभाव उमंग उत्साह स्थाई पुलक स्वेद सात्विक भ्रकुटी जुरे अनु भाव सुर विरदावें लोहु सौं रंगीन भूमि देखें उद्दीपन हर कोई तरह घर आवेंगे यह शंका संचारी राम होमें संचारी काढें तो भ्रकुटी जुरे तासौं हियकों कोप जान्यों जायहै

अथ करुन

आसन सिआ को लखि थकित रहत गात धरालोटि जात चित सोच निसों छायो है । आसन उद्दीपन थकित स्तम्भ सात्विक लोटि बो अनुभाव सोच करे हैं तासौं शोक स्थाई सीता आलंबन सोचन यहां नकार सो चि न्ता संचारी ॥

अथ अद्भुत

लागो है कपूर वास नारद निरेखि पास पु लकि नचे हैं दीन वचन सुनायो है । कपूर वास उद्दीपन नारद आलंबन पुलक सात्विक नृत्य अनुभाव दैन्य संचारी ॥

अथ हास्य

सवैया

—※०※—

देवर दौरत कीच के बीच गयो परि अंग कुरंग लहे हैं। आली तबें सुधि देख तकें दृग कोन में आनन्द आंसू वहे हैं। वे सम यो मन आनो अरीनहिं रीझन कौतुक जात कहे हैं। दंत के वास दवायो हुलास तऊ विकसे से कपोल रहे हैं॥ २८५॥

देवर को कीच में परिवो विभाव अंग कुरंग ग्लांनि संचारी आनंद के आंसू सात्विक सम यो मन आनें सो स्मृति संचारी रीझ सों हर्ष भी संचारी हुलास को रूप दुराय वे सों अवहित्था भी संचारी भासें हैं विकसे कपोल अनुभाव सों हास स्थाई हास्य रस

कवित्व

०※०

कोई सखी कवि की कहांनी उपचारी जब वधू के कपोल गोल गाड छवि सी छुई। हठ परि आली सु हठीली कहि कहवावें कही क्यों न पुलक पुकारें बात है नई॥ घूंघट सु जोरि नारि मोरि औरि ओर हेरि बचन उचित चतुराई चित में लई। आंगन में जाति बतराति हों परोसिनि सों देवर

की मेरी एरी तीनि आंखि ह्वै गई ॥ ३८६ ॥

कवि सुक्र तिन की कहांनी उद्दीपन कपोल में गाड अनुभाव पुलक सात्विक घूंघट जोरिबो नाहिं मोरिबेहीं लाज संचारी स्थाई हासरस हास्य ॥

अथभयानक

०—०

निसां गए नदी तीर कंपन लग्यो शरीर देखि श्राठ सिर सोर करि मुरझायो है । राति तीर उद्दीपन कंपा सात्विक श्राठ शिर को श्रालंबन सोर अनुभाव मुरझायो तासों ग्लानि संचारी ॥

अथविभत्सउदाहरन

सवैया

—※—

रैंन में सूनी लखैं रनभूंमि नचे प्रमथानि के जूथ उधारे । रंक ज्यों पाय महा धन कों पुलकेपलखाय महा मुद धारे । न्योंतो करें शिव दूतन तानि सो आयुस में भष यांन सुधारे । राधि की खोरि औ खोपरी को खरमां अरु नैंन सिंवारे उधारे ॥ ३८७ ॥

राति सूनी रन भूंमि उद्दीपन नृत्य अनुभाव पुलक सात्विक मुद हरष संचारी ग्लानि में शिव दूत श्रालंबन ॥

अथरौद्र उदाहरन

कवित्त

सूनी लखि कुटी और कपट को कुरंग सो
खि कह्यो अरि नगर नगारे दे दहाय हों।
सीता को अंदेसो पूछि गाछनि संदेसो कछु
गह कृपान कहि सोनित सो खायहों। कंपि
त सुधाधर अधरतें प्रगट बोल भुजा फरकत
जोपें धनुष उठाय हों। धराकों धुजाय नभ
लंका कों बुडाय सिंधु रावन के सीस हार
हरहि चढाय हों॥ ३८८॥

सूनो पत्र कुटी उद्दीपन सोच सों सीता
की शंका संचारी अरिनगर बारोंगो यातें
कोप स्थायी अंदेसा विचार संचारी तरवार
पकरेहै अनुभाव अधर कंपा सात्विक भुजा
फरके अनुभाव रावन आलंबन।

अथशान्त

मत्त असिपानि उनहूं में हरि मांनि नहि।
चले तजि मान भरि नैन ध्यांन लायो है
॥ ३८९॥

असिपान उद्दीपन उनहूं में हरि समता
स्थाई नहिचले या सों धृति संचारी ध्यान अ
नुभाव हरि आलंबन नैन भरनों अश्रु सा
त्विक

इतिरसध्वनिउदाहरन

अथअंगअंगी

दोहा

०---०---०

द्वै तिन रस जहां मिलत हैं तामें जो पर
धांन । सोई अंगी होत है औरि अंग सब मा
न ॥ ३८० ॥

कोई सखी कबिकौ कहांनी उपचारी इहां
हास्य प्रधान सो अंगी शृंगार अप्रधान सो
अंग

अथरससाचात

दोहा

०००

करत भावनां प्रेम बस वहै रूप ह्वै जात ।
कबि पंडित सब कहत हैं यहै रस है
साचात ॥ ३८१ ॥

छिन छिन कान्ह कुमार कौ करति ध्यांन
नव बांम । निजछाया छवि मुकुट कौं निर
खति खडी सुबांम ॥ ३८२ ॥

हरि रूप आपु भई

अथप्रेमलछनदोतरफ

दोहा

०*०

मांनत जोग बियोग में जोगहु माहि बियोम । द्रवे चित्त जो समय में द्विविध प्रेम कहि लोग ॥ ३८३ ॥

अथरसमेंसन्देह

दोहा

—*०*०*—

रस आनन्द सरूप सो है विभत्समें ग्लांनि । करुन शोक मय प्रगट है यातें रस मति मांनि ॥ ३८४ ॥

अथसमाधान

दोहा

अधिकारी कों समय वस उपजत है सुख खांनि । रुधिर दुसासन को पियो भीम अमृत सो मांनि ॥ ३८५ ॥

अब भी वकरा के पंच धातु खातु हैं सुख मानत हैं तैसो ग्लांनि तामें हर्ष संचारी

दोहा

—००—

शिव सेवक अरु जोगिनी आदि इनें अधि

कार। तनय अंजनी को सुनें रामायन सुख
सार ॥ २९६ ॥

करुन रस में सुख जो नहीं तो हनुमानजी रामायन क्यों सुनें हैं यातें करुन में अधिकारी भेद सों सुख जानिए कहूं कर्ता को रस कहूं जो वाको अनुकरण करे ताको रस कहूं तटस्थ को रस

दोहा

—०—

इक आश्रयता आदितें ह्वै विरुद्ध रसधीर ।
नारिहिं सों शृङ्गार पुनि ताही सों रसवीर
॥ २९७ ॥

नाइका देखत औरि सों लरि जीते तो शृंगार को मित्र वीर औ जहां वीर शृंगार को एक आश्रय होय तहां शृंगार को शत्रु वीर आदि पद सों औरि भी जानिए

अथभावत्रिविध

दोहा

—।—

देवतादि में रति जहां थाईहोय निरंग ।
संचारी प्रधान जहं नहि रस भाव प्रसंग ॥ २९८ ॥

अंग स्थांन नआवे तहां रस नहीं होइ भाव रहे

दोहा

—०—

श्यांम अंग अभिरांम छवि पैनैं वै दृगकोर । ओषा मैं जो खानिके चित चोरत रनछोर ॥ ३९९ ॥

ओषा देसकी नाइका की रति रनछोर मैं इहां देवता

दोहा

—※—

मसि भीनत भूपति चढ्यो तेज तुरै पर जात । घुरै धांम चढि गूजरी लोनैंलोनैं गात ॥ ४०० ॥

इहां गूजरी प्रजा ताकी रति राजा मैं

दोहा

※—※

बचन तोतले हसत मुख डगमगाति सी चाल । धनिधनि वह जाकी गहै कांठ छबीलो बाल ॥ ४०१ ॥

इहां बालक मैं रतिभाव रह्यो रस न भयो

दोहा

—०—

गुरु द्विज प्रिय के मित्र अरु चाकर आदि गिनाव । रसाभास सु बचाय कों रति उपजै सो भाव ॥ ४०२ ॥

गुरु की छबि सराहै तहां भाव औ मिल्यो चाहै तहां रसा भास

अथस्याईनिरंगतें

अथरतिभाव

दोहा

—०—

अगमगात दुति गात में नव जोवन द्विज राय। तोबिन देखें भीलनी घरीघरी अकुलाय ॥ ४०३ ॥

प्रीति अधम में तातें अंग स्थान नहीं जो द्विज की रति भीलनी में तो रसां भास

अथउत्साहभाव

दोहा

करि साहस कढि म्यानतें गहि करमें सम सेर। चल्यो ताहि मारन सुभट बंध्यो थंभ सौं सेर ॥ ४०४ ॥

सेर असक्त यातें रस नहीं

अथशोकभाव

दोहा

—०००—

ललित लता तरु सींचिकें कियो बेलिको

थांन । भंग करै नहि कुंजको सखि मतंग नव दांन ॥ ४०५ ॥

कुंजके नाशतें दुख थोरो यातें अनुशयानामें कहन नहीं

दोहा

—०—

ऐसे कोमल कान्ह कों कहिए नहि' गोपाल । नहि' गोरस बिच वाइये नाजुक तन नव बाल ॥ ४०६ ॥

ऐसी ठौरनि में कहम कहे सो भ्रम है

अथविस्मयभाव

दोहा

—०—

सख्यो गम्यो मुकता अवनि बिकुख्यो पायो मित्र । पिय हिय नैननि में बसें बाहिर दर्शन चित्र ॥ ४०७ ॥

मुकता दिक सों अलोकिक चमत्कार नहीं यातें रस नहीं

अथहास्यभाव

दोहा

—०—

सब तिथि पूनों सी करी तेरो जस लपटाय । भूप भाजि एकादशी बसी सरन मो आय ॥ ४०८ ॥

इहां दीन के बचन सों हास रस नहीं भयो

अथभयभाव

दोहा

बदन नैन सखि बांन किय भौंह कमान चढाय। जाय सकौं नहिं सामनें अंगअंग थहराय ॥ ४०९ ॥

इहां भय स्थाई यातें अंग नहीं पायो अंग तो भूतादिक हैं

अथग्लांनिभाव

—※—

केसतेल को गंध लखि बास मरगजीमाल। पांन पीक लागी बसन मिलो लालसों बाल ॥ ४१० ॥

थोरा गलीज सों रस नहीं

अथक्रोपभाव

दोहा

—०—

तिय गरीब भिच्छुक हरिन इन पें किय दृग लाल। कहत सुभट सब मारिहों जेते बन में ब्याल ॥ ४११ ॥

अथशान्तिभाव

दोहा

—※—

तुव गुन गावत नगर में कांजर भिक्षा काज । झगरि झगरि घर तजि भजें नौ दस दिन ब्रजराज ॥ ४१२ ॥

आधा में भिक्षा के लिए सर्व व्यापी भगवान के गुन कों गावें हैं भिक्षुक अंग नहीं लरिके हरि भजे हैं इहां अंग नहीं पायो इहां निर्वेद भाव ही रह्यो ॥

अथसंचारीकेप्रधानसोंभाव

दोहा

—०—

मुख श्रम स्वेदक नालसे चंचल कुंडल कांन । पट में वह घूंघट किये बसे सदा बिच प्रांन ॥ ४१३ ॥

इहां स्मरन संचारी कों अधिक बढायो यातें रति भाव रह्यो रस न भयो

इतित्रिविधिभावध्वनि

अथरसाभास

दोहा

—※—

रसां भास अनुचित करे पुत्र पिता कों

वारि। हंसी करैं गुरु देवकी रमैं अगम्या नारि॥ ४१४॥

जहां अनुचित होय सोरसा भास

अथभावाभास

दोहा

—०—०—

शत्रु करै स्तुति शत्रुकी वेश्यादिक मैं लाज। भावा भास कियो स्ववस सौति सुगुन व्रजराज॥ ४१५॥

ए सौति तूं आपने भले गुन सौं वस किए मो मैं तेरो सो रूप गुन नहीं इहां दैन्य संचारी भावाभास॥

दोहा

थाई ह्व कहूं होत है संचारी रस पाय। हास कोप उत्साह भय बीच शृंगार लखाय॥ ४१६॥

इतिश्रीहरिचरणदासकृतेसभा प्रकाशेचतुर्थउल्लासः

॥ श्री ॥

अथरसदोषलच्छन

दोहा

ब्रह्म रूप सर दूषही ऐसे जे सब दोष। आत्मा कों जिमि अंधता मूर्ख बधिरता दोष ॥ ४१७ ॥

अथदोष

दोहा

रस रस बाचक नांमके कविता मांहि प्रकाश। कवि संमत करि कहत हैं होइ दोष अविनाश ॥ ४१८ ॥

हरि राधासों रस भयो बंसीबट में आज। कियो सिंगार निकुंज में कहत होत मुहि लाज ॥ ४१९ ॥

बसन गोपिका के हरे भयो तहां रसहास। भयो रौद्र केसी हनत ऐसे बसन प्रकास ॥ ४२० ॥

बस्त्र हरे इहां हास्य रस तो ध्वनि में आवेगो

दोहा

—*—

जो रसादि रसकों कहैं तो दूषन तूं देहि। सरस रसिक इहिं आदिकों ग्रह सुमति करि लेहि ॥ ४२१ ॥

कियो सिंगार निकुंज में इहां सिंगार को अर्थ जो भूषन पहिरनों होय तो दोष नहीं

अथथाईसंचारीदोषअदोष

दोहा

थाई व्यभिचारीनके नाम गहेते दोष। थाई को जहं समुझि नहिं जानो तहां अदोष ॥ ४२२ ॥

आज सखी हरि देखकें प्यारी कीनों क्रोध। राधापति में रति सदा बढो तजत अवरोध ॥ ४२३ ॥

नैंन लाल किए भौंहैंचढाई याही ते क्रोध जानि परतो यातें दोष लाज करी ऐसें संचारी को नाम कहैं दोष जानिए राधा हरि में रतिको अर्थ प्रीति इहां थाई की समुझि नहीं

दोहा

कहूं आपनी क्रियन तें संचारी न लखाहि। कारन कारज होत जहं भाव गह्यो तहंजाहि ॥ ४२४ ॥

तिरछीचितवनि वामको मिलो लाज भय लेस। हिय उन्मादरु मोह जुत ज्वरलौं दैत कलेश ॥ ४२५ ॥

इहां लाज पद कहैं दोष नहीं लाज को क्रिया घूंघट करनौं सो इहां कहैं नहीं बनै ऐसें भय उन्माद मोह जानिए

दोहा

तियकौ उत्सुकता खरी चंचलता उपजाय। तासौं लाज भई अरी हरहि निहारति आय ॥ ४२६ ॥

उत्सुकता कारन चंचलता को चंचलता कारन लाज को चंचलता औलाज कौंकार्य भी जानिए ऐसी ठौर संचारी के नाम कहैं दोष नहीं

अथ विभाव अनुभाव औरसविरोधदोष

जो विभाव अनुभाव अरु व्यक्त कष्टतें होय। जो विरोध रस आदिमैं दोष कहावत सोय॥ ४२७ ॥

काहू सों अनुराग नहिं चित चिंता में लीन। नीद न आवत सेजपें गात भए सब छीन ॥ ४२८ ॥

इहां शान्तरसको विभाव भासे है और क रुन रस को विभाव भासे है सेज पद सों नौठिश्रृङ्गार को बिभाव जानि परे है इहां वि भाव को व्यक्ति कष्ट सों

दोहा

लखि कटाच्छ चारी वहै बारी वेस रुजा ति । फूल चलाव निहारि वहै नाह नि रखि मुसि क्याति ॥ ४२९ ॥

इहां कटाच्छ और फूल चलांवना अनुभाव सो नायका को विशेषन कियो कटाच्छ करै है फूल चलावे है ऐसो चाहिए इहां अनुभाव को कष्ट सों व्यक्ति ।

प्राचीन रसखांनिका

सवैया

बांको कटाच्छ चितैंबो सिख्यो बहुधा बरज्यो हितकै हितकारी । तू अपने ढंगको रसखानि सिखावन दे दिन होंप चिहारी ॥ कौन की सीख सिखी सजनी अजहूं तजि देवलिजाव तिहारी ॥ फंद कहूं नन्द नन्दन के परिजै है अनोखी निहार निहारी ॥ ४३० ॥

अनोखी निहारनि भाव सों देखिबे सों अनुभाव सों नायिका को विशेषण कियो यातें दोष

दोहा

—*—

पिय सों मानन कीजिये जीवन ज्यों जलं रेत। श्यांम चिकुर चितकों हरें ह्वै है इक दिन सेत ॥ ४३१ ॥

इहां शृङ्गार शान्त सों विरोध शृंगार में शान्त रस ध्वनि

अथ प्रकृति विपर्यय

दोहा

—*०*—

करे व्यतिक्रम प्रकृतिके दूषन कहैंविचारि। राम चतुर चित दे लखे एक नवेली नारि ॥ ४३२ ॥

राम सदा अनुकूल चतुराइ सों औरि कों देखि है या सठता

दोहा

०—०—०

ऐश्वर्ज माधुर्ज को करिए नाहिं मिलाप। होति हानि रसकी किएं रसिक सराहत आप ॥ ४३३ ॥

हरि तन तूं न चिते अली छिति में परत बिहाल ॥ अन्त कोटि ब्रह्मांड को पाप लगो गोपाल ॥ ४३४ ॥

एक एक रोम में अनन्त अनन्त कोटि ब्रह्मा
ण्ड हैं तेद्रवहिंगे

दोहा

—※—

मोहनकों व्यापक कहैं बने न दरशन चाव। बनें नहीं अभिसार पुनि बने न बिरह प्रभाव ॥ ४३५ ॥

नरह में प्रभुता प्रगट किएं होत रसहानि। मान रहे तियको जहां तहां होइ सुख खानि ॥ ४३६ ॥

भूपति कों परनारि संग सुनि चुप बैठी बांम। देखत हीं तिहिं तेज भय तजि रिस करति सलांम ॥ ४३७ ॥

तियको रति-बहु पुरुष में बहु तिय प्रेम समान। याहू कों दूषन कहत जे कविहैं सुजान ॥ ४३८ ॥

सखा संग सुभ अंगके सुन्दर तन नर पाल। सबको छबिपें छकि रही देखत ही नव बाल ॥ ४३९ ॥

इहां बहुत पुरुषों में रति दच्छिन नायक भी रसको पोषक नहीं

दोहा

०—०

कोई तेरह बरषकी केती बरष बतीस

केती चालिस बरषकी केती बरषनि बीस
॥ ४४० ॥

रचे प्रीति ज्यों हकसी इहै धर्मकी रीति।
रसमें कहत सुअग्नता मानत तहां अनीति
॥ ४४१ ॥

नव भूषन सौतिन सजे सबनि बुलाए पास। राखत मान तियान के सोए सून अवास ॥ ४४२ ॥

इहां सबनिको मान राखें रस नहीं भयो कोई सुन्दरी पास जाते कोई मान करती कोई खंडिता होती तब रस होती

दोहा

०*०

मान खंडिता आदि पुनि भेद न होत कितेक। धर्म रीति अनु कूल में औगुन गुन नहिं एक ॥ ४४३ ॥

रस रीति में धृष्ट सठ भले अंगी को अनु संधान नहीं अनंगकों प्रकाशन आदि दोष ग्रन्थके हैं वे नहीं लिखे

इतिरसदोष

०*०

विहारी के दोहानि में बहुत ठौर अध्या हार करनों परे है तासों लिखे हैं

अथअध्याहार

दोहा

आकांचित जो पद रहे कविता में नहिं होय। ताको जोहे आनिवो अध्या हार सु जोय ॥ ४४४ ॥

आकांचा चाह जो पद कविता चाहे सो न होय जो शब्द कविता में न होय ऊपरसों लैआइए सो आक्षेपाख्या वृति आक्षेपाख्या वृति तो है नहीं व्यंजना में अंतर्भूत होतहै जो अर्थ कविता में न होय सो व्यंजना सों होत है इहां कोई आक्षेपाख्या वृति मानत हैं सो नहीं कोई व्यंजना में अंतर्भूत करत हैं

आक्षेपा

दोहा

आवे कविता रीति नहिं लहेन सुरस विलास। जौलों पढे न चित्तदे ग्रंथ सु सभा प्रकाश ॥ ४४५ ॥

जौलों कवि न पढ़ें कविपद की चाह कविता में है इहां हीन पद दोष नहीं

दोहा

उत्तम १ मध्यम २ अधम ३ नर पाहन सि

कता वारि। प्रीति अनुक्रम जानिए व्यत्यय बैर बिचारि॥ ४४६॥

उत्तम पुरुष की प्रीति ग्राव की रेखा मध्यम पुरुष की प्रीति वालूकी रेखा अधम पुरुष की प्रीति जलकी रेखा उत्तन पुरुष को बैर जल की रेखा मध्यम पुरुष को बैर वालूकी रेखा अधम पुरुष को बैर ग्राव की रेखा॥

इहां रेखाको अध्याहार है हीन पद दूषन है पिछिला दोहा में तो पढे ये क्रिया कवि कों ल्यावें है उदाहरन दिखायो है।

अथ उपलच्छन

दोहा

कहैं एकही अर्थ को और सबै फुरिजाय। उपलच्छन ताकों कहैं दही काग मतिखाय ॥ ४४७ ॥

इहां काग के कहे जितने दही खानेवाले ते सब जानिलीजिए उपादान लच्छना करिके कागभी जानि लीजिये

रसिकप्रिया खंडितालच्छण

दोहा

आवन कहि आवैनहीं आवै प्रीतम प्रात।

जाके घरसों खंडिता कहैं सु बहुविध बात ॥ ४४८ ॥

इहां घर प्रात उप लच्छन औरि नायिका को संग करि नायक घरमें वनमें आवे प्रात दोपहर सांझ कबहु आवे खंडिता होय

सवैया

—१—

मोहन मंजुल कुंजके द्वार मिले करमें दुति फूल छरी को। पीकको लीक लगी अंखियां पर वारिदई समता सफरी को। भालपें जावक देखतहीं सखि भौंह गई चढि गोपनरीको। लालसों बाल कह्यो मुखपें छबि दोपहरी विच दोपहरी को ॥ ४४९ ॥

कुंजमें दोपहरी में खंडिता भई भौंह चढी उपलच्छनआंखि लालिभई कंप भयो और जितने क्रोध के अंग हैं ते सब जानिए

सूत्ररीति

दोहा

लच्छन भेदक कीजिए दुविध समान विशेष। जो विशेष में भेदनहिं तो दूषन अति देष ॥ ४५० ॥

केसवदासउल्कालच्छन

दोहा

—०—

कौन हु हेतुन आवहीं प्रीतम जाके धाम।
ताकों सोचत सोचहिय केसव उत्का भाम
॥ ४५१ ॥

धांम को ठोर संकेत चाहिए प्रोषित पति का में मिल्यो सुंदर शृंगार में सहेट लिख्यो सो भलो है

अथउदाहरनरीति

दोहा

—०—

उदाहरन जाको कहैं सो परगट तहां नाहिं। ताहू दोष सराहिए कवि समुझे मन मांहिं ॥ ४५२ ॥

सुन्दरसिंगार

सवैया

—०—

सोवत लेत करोट नवोढ की नीची लटैं पलकातें परी है। देखि तहां हरि दौरिकैं सुन्दर जायकों नागनि सी पकरी है। ले दुपटा अपनों अपनें कर पोंछिकें सेझहि मांझ धरी है। प्यारेको प्यार निहारयों रीझि भई चकचूर सखी सगरी हैं ॥ ४५३ ॥

अंकुरित जोवना मुग्धा मुग्धा को भेद नवोढा लाजसों भयसों जाकी रति पराधीन होय सो नहीं निकस्यो नांमतें नायिका नहीं होय लच्छनतें नायिका होय है सोवत में मुग्धा मध्या प्रौढा सब बराबरि हैं

अथवचन

दोहा

—०—

एक बहुत वाचक इहां औ ए आदि नकार । भाषा में द्वै वचन नहिं कविन कियो निरधार ॥ ४५४ ॥

आयो गयो पायो इत्यादि में औकार एक वचन एकही की प्रतीति होति एकही आयो बहु बचन आए रहे पाए इहां एकार बहु बचन बहुत की प्रतीति होति है बातन गातन हाथन इहां नकार बहुवचन आदि पदसों बतिआं रतिआं सखिआं ऐसें जांनिए

दोहा

—*—

एक विषें इक बचन है द्वै बहु आदर हेत । दीजे बहु बाचक सदा हरि सब को मत लेत ॥ ४५५ ॥

अथजाति

दोहा

—०—

एक वस्तु के ज्ञान सों जानी जात अदेख। अवयव हु के बीच सों जासों जाति सुलेख ॥ ४५६ ॥

जैसे एक घट मिट्टी को देख्यो दूसरे तांबा पीतल एलको घट छोटो बड़ो घट जानिए है एह भी घट है ऐसो जो कोई धर्म सो जाति

दोहा

—०—

जाति बहुत में एक है एक वचन को ठौर। व्यक्ति भेद जो कीजिए तो कीजे कछु और ॥ ४५७ ॥

और को अर्थ बहु बचन १ है यचन जानिए जाति में तो इक वचन होय जाति एक है जैसें ब्राह्मन तें और ब्राह्मन अच्छा ऐसो नहीं कहाय व्यक्ति भेद करि कहाय या ब्राह्मनतें और ब्राह्मन भलो या नायिका तें औरि नायिका भली

विहारी

दोहा

—०—

खरी पातरी कानकी कौनि बहा जवानि

। आक कली न रली करै अली अली जिय जानि ॥ ४५८ ॥

इहां जाति विषें एक बचन

विहारी

दोहा

कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात । भरे भौन में करत हैं नेंननही सों बात ॥ ४५९ ॥

इहां व्यक्ति में बहु बचन

दोहा

—※—

तोरस राच्यो आन बस कहो कहें मति कूर । जीभ निबोरी क्योंलगे बौरी चाखि अंगूर ॥ ४६० ॥

इहां एक विषें एक बचन

दोहा

---o o---

कुंज भौन तज भौन कों चलिए नन्दकिशोर । चटकत कली गुलाबकी चटका हट चहुं ओर ॥ ४६१ ॥

इहां चलिए आदर विषें बहु बचन

अथअन्वयलक्षन

दोहा .

अन्वय पद संबंध है रहेन सो तिहिं ठांव । अर्थ मेल तात्पर्य सों ल्यावे कविवर नांव ॥ ४६२ ॥

बिहारी

दोहा

नजक धरत हरि हिय धरें नाजुक कमला बाल । भजत भार भय भीत ह्वै घन चन्दन वनमाल ॥ ४६३ ॥

अथसमास

दोहा

जो सो अबको ताहि करि आदि जहां नहिं होय । अर्थ कहत लहि ग्यान सों लखि समासहै सोय ॥ ४६४ ॥

सोसे ताहि तिनता करित न करि ताके लियें तिनके लियें तातें तिनतें ताकों तिनकों तामें तिनमें औ अरु औ जो गुन जहां समास बड़ो होइ माधुर्य गुन में समास थोरो होय ताके लिएं लिख्यो है

विहारी

दोहा

—०—

अधर धरत हरिकें परत ओठ दीठि पट जोति। हरित बांसकी बांसुरी इंद्र धनुष सी होति ॥ ४६५ ॥

ओठ औ दीठि औ पट ताकी जोति हरित जो बांस इंद्रको धनुष इहां औ ताको जो को अर्थ कहते में आवे है

दोहा

—०—

सीस मुकट कटि काछनी कर मुरली उर माल। इहिं बांनिक मो मन सदा बसो विहारी लाल ॥ ४६६ ॥

इहां में निकरे हे ऐसे जानिये

इतिश्रीहरिचरणदासकृतसभाप्रकाशे

पंचमोल्लास : ५

॥ श्री ॥

अथशब्दवृत्ति

दोहा

नभज शब्द ध्वनि रूप इक इकहे वर्न शरीर । जोग रूढ पुनि रूढ है जौगिक कहैं सुधीर ॥ ४६७ ॥

जोग रूढ साधन सहित रूढ असाधन नाम । साधन ही जौगिक लगी त्रिविध वृत्ति अभिराम ॥ ४६८ ॥

सवैया

आईहौं देखि लला अबही सजनी सबही तुव बात चलावति । कीरति जाई रचे चतुराई सु मंजुल कंजसे नैंन नचावति । चाह तिहारी चुभी चित में हरि नौसत चारु सिंगार बनावति । बोलति बीन सौं भौन मनोहर मेड़िमें बैठि है एड़ि भंवावति ॥ ४६९ ॥

एजोगरूढकीटीकाहै

साधन कहिये जाहि शब्दको अर्थ होइ रूढ कहिये जाको अर्थ न होय फेरि जोग रूढ

जाको नांम होय ताहीकों कहैं औरि शब्द के साथ विना श्लेष आदि विषें कहत हैं खेद भयो जल जात इहां पांनी कों जात यह भी अर्थ निकरे है इहां जोगिक हुवो

जोगरूढ

—✤—

कंजक नांम जल तानें उपजे है यह साधन मोतीऐसे बाल यह भी जलमें उपजे है यह भी कंज क्यों न कहावें यह सत्य कमल पर कंज जलज नीरज वारिज अंबुज वनज पयोज इत्यादि रूढ भी हैं याही तरह नौसत सिंगार पर जोग रूढ है

विहारी

दोहा

—✤—

धुरवा होंहिन अलि यहै धुआं धरनि चहुं कोद। आरत आवत जगतकों पावस प्रथम पयोद ॥ ४७० ॥

पय जल कों देय सो सब पयोद मेघपर जोगरूढ है औरि शब्द के साथसों औरिकों कहैं हैं नौसत कलाधर जोगिक है

आई मोहन गेहमें कामिनि नौसत साजि।
इहां सिंगार जांनिये

जोगरूढ

अथरूढ

मेड़ी घर विषें रूढ भवा इत्यादि जानिए

विहारी

दोहा

गढ रचनां वरुनी अलक चितवनि भौंह कमांन। आघ बंकाई ही बढें तरुनी तुरंगम तांन ॥ ४७१ ॥

गढ वरुनी इत्यादि जानिए

अथजोगिक

कीरति जाई दूसरी कन्या होय सो भी कीरति जाई कहावे चतुराई चित्र में चतुराई कवित्त में चतुराई प्रवीन की क्रिया चतुराई ऐसें रूखाई चपलाई सुंदरताई आदि जानिए

अथशब्दवृत्तिअभिधा

लक्षनाव्यंजना

अथअभिधालक्षन

दोहा

ताहि शब्द में कहत ही समझें जो सु

लखाय । तहां शब्द की वृत्तिजो अभिधा सो कविराय ॥ ४७२ ॥

विहारी

दोहा

—००—

सीस मुकुट कटि काछनी कर मुरली उर माल । इहिं बानिक मोमन सदा बसो विहारीलाल ॥ ४७३ ॥

सीस मुकुट आदि जो शब्द हैं ते अपनें अपनें वाच्य अर्थ कों कहत हैं सीस मुकुट कहें सीस मुकुट जांनिए कटि कहें कटि काछनी कहें काछनी जांनिए अचरकी प्रतीति नहीं होति है जासों अभिधाई स्वर को कियो संकेत घट कहें पट नहीं जांनिए पट कहें घट नहीं जांनिए अभिधा को अर्थ नांम जाको जो नांम राखें वही ईश्वर पुत्रको नांम पिता राखे वही ईश्वर

दोहा

—*—

गुन अरु द्रव क्रियानिमें रहै निरंतर जाति । अभिधा तहां सुजातिमें व्यक्ति अनेक लखाति ॥ ४७४ ॥

गुनमें द्रव्यमें क्रियामें जाति रहति है अभिधा तहां तहां कहिए जातिमें अभिधा मानिये

जैसे बालक कों अस्व बतायो श्याम रंगको छोटो बालक नें श्यांम रंग को छोटा शरीर को अस्व जान्यो। दूसरी बार बडो स्वेत रंग को अस्व बतायो तब बालकनें अंगविशेष सों जाति विषें अस्व शब्द को वृति जानी अदृष्ट उवंरूो सचो को ग्यांन प्रामानिक के कहें सों होत है। देवदत्त कहें देवत्तको प्रतीति इत्यादि में व्यक्तही में अभिधा जो एक पदार्थ तामें जाति नहीं जातिको लछन पीछे कह्यो इहां प्रसंगतें कह्यो

अथ गुनद्रव्य

दोहा

गुन है आश्रित द्रव्य को द्रव्यकहैं भू१ वारि २। तेज३ वायु४ नभ५ काल६ मन७ दिशा ८ आत्मा९ नवधारि॥ ४७५ ॥

गुन बखाई चतुराई निकाई रूपरस आदि जानिए

अथ क्रिया

चलनों देखनों बोलनों हसनों आदि जानिए

बिहारी

दोहा

०—०

झुकि झुकि झपकौंहैं पलन फिरि फिरि जुरि जभुआइ। वीदिपि आगम नींद मिस दीवस अली उठाइ ॥ ४७६ ॥

झुकिबो आदि क्रिया जानिए ॥

अथ लक्षना

दोहा

———

मुख्य अर्थ को बाधजो रहै मुख्या रथ जोग। औरि अर्थ को जानिबो कहै लक्षना लोग ॥ ४७७ ॥

राखौ शक्ति सुलच्छना ध्वनि बिन रूढ़ा रूप। सोइ प्रयोजन वति जहां उपजै ध्वनि कवि भूप ॥ ४७८ ॥

शब्द को एक अर्थ मुख्य प्रधान ताको बाध होय सो नहीं संभवे मुख्य प्रधान अर्थको जामें लोग होइ तहां जो औरि अर्थजान्यो जाय सो लक्षना वृत्ति। मेरे घंट आयो भटू लोटिवो अंगार को। अंगार को लोटिवो नहीं संभवे अंगार अर्थ दुख लोटिबे को अर्थ इसनों अंगार को अर्थ आगिताको बाध भयो औ मेरे घट आयो है तू देखि इत्यादि शब्द को संग है केवल लोटिवो अंगार को

होयतो लक्षना नहीं ध्वनि में जैसी कछू आगिसों वरे दुख होत है ऐसो दुख विरह सों होत है

विहारी

दोहा

—००—

धुरवा होंहिन अलियहै धुवां धरनि चहुं कोद। जारत आवत जगतकों पावस प्रथम पयोद ॥ ४७९ ॥

इहां जारि वेको अर्थ दुख देनों।

दोहा

विरह जरी लखि जीगनन कहै न उहिकर बार। अरी आव भजि भीतरै बरसत आज अंगार ॥ ४८० ॥

जरी को अर्थ दुखी डहिको अर्थ दुख पाहि अंगार इहां गौनी लक्षना

सुन्दर सिंगार

कवित्त

—*—

जाके रूप आगे रूप रति को रतीक आगे तिलो भरि छबि को तिलोत मांन तूल है। सुन्दर नवेली अलबेली बनी दुलहिनी अंग

अंग रंग रंग पहिरे दुकूल हैं। झनक मनक होत भूषन मनक वनें कनक बरनत नचंपे कोसो फूल हैं। आलिनि की ओट ह्वै कें चिग ढिंग द्रग देकें दुरि दुरि दौरि दौरि देखि जात फूल हैं॥ ४८१॥

रती को अर्थ घोरा। तिलको अर्थ थोरो

बिहारी

दोहा

मेरी भौ बाधा हरो राधा नागरि सोय।
जातनकी झाईं परें श्यांम हरित दुति होय॥ ४८२॥

श्यांम कहिए कृष्ण हरितको अर्थ सानंद श्यांम इहां साध्य बर्तान चंद मुखो सुवं कमल कर इत्यादि में प्रसिद्ध अर्थके बाधतें लक्षना भई. यह ईश्वरकी करी शक्ति नहीं यह राखी शक्ति हैं जामें ध्वनि नहीं काढे सो रूढा जामें ध्वनि काढें सो प्रयोजनवती

अथनिरूढा बिहारी

दोहा

डिगत पांनि डिगुलातं गिरिलखि सब ब्रज बेहाल। कंप किशोरी दरसतें खरे लजानें लाल॥ ४८३॥

इहां ब्रजको अर्थ ब्रजवासी ब्रज शब्द देस वाचक हैं

विहारी

दोहा

तजि तीरज हरि राधिका तन दुतिकरि अनुराग। जिहिं ब्रज केलि निकुंजमग पग पग होत प्रयाग ॥ ४८४ ॥

यहां ब्रज देस जानिए

दोहा

सुरढूंढार मिवाड़ पुनि लरत मालवा आज। लरत लखो सरआर है लरत सुब्रज निजकाज ॥ ४८५ ॥

ढूंढार आदि शब्द देस वाची हैं देसतो जड़है देसको लरनो नहीं संभवे देस अर्थ मुख्यता को बाधभयो प्रामानिक को बचन है फेरि कहै है सरआर देस लरे है ताहि देखो यहां देस में शक्ति राखो है ढुंढार मारवाड़ के बासी लोग लरे हैं यहां ध्वनि नहीं निकारी वक्ताको तात्पर्य देस बासी यह है याते निरूढा

दोहा

पीठि देहि मत लाल को मति देवैठिकि बार। हवाखाइ बनमें रमो देहशु नेकनि हार ॥ ४८६ ॥

याही तरह पीठि देइ हवा खाइ इत्यादि जानिये

अथप्रयोजनवती

बिहारी

दोहा

—०○—

कितीन गोकुल कुलवधू काहिन किन सि ख दीन । कीनें तजीन कुलगली ह्वै मुरली सुरलीन ॥ ४८७ ॥

कुल गली न संभवे गली ग्राम में संभवे इ-हां गली को अर्थ रीति कुल छोड्यो है ऐसो क्यों नकह्यो कुल छोड्यो कहैं कुलको त्याग आवतो यह अर्थ नहीं होतो कुल में रहे हैं हरि विषय अति आसक्ति गृह कार्ज वि षय चित्त नहीं हरि के रूप में छकिरहो हैं यह ध्वनि

भाषाभूषन

—०—

नैन मीनतें देखिए सलिता बहति अनूप । नैन मीन यहां गौनी लच्छना नैन मीन नहीं संभवे मुख्यार्थ बाध भयो तब मीन के गुन लिये सुन्दरता चंचलता आदि सरिता ब हति यहां भी लछना मीनतें सरिता नहीं सम्भवे यहां साध्य वसाना लच्छणा भई यहां

सरिता को अर्थ आंसूं सदा तुम बिना रुदन करे है यह ध्वनि इहां साधारन लच्छना को उदाहरन है साध्य वसाना गौनी इत्यादि भेद आगे कहैंगे

भाषाभूषन

०---०---०

कोकिलकी बानी अबें बोलत सुन्यो कपोत । कोकिलकी बांनी को अर्थ मधुर बांनी कपोत को अर्थ कबूतर को सो कंठ है जाहि नायिका को वह नायिका बोलति है ध्वनि को अर्थ सुन्दर कंठतें मधुर प्रिय वचन

भाषाभूषन

नभ ऊपर कंचनलता कुसम सुच्छहै एक । इहां अर्थवाध भयो कंचनलता को अर्थ बीजुरी कुसम को अर्थ चंद्रमा इहां विशेष ध्वनी नहीं यातें निरूढा साध्यवसानां जांनिए

बिहारी

दोहा

---०---

कर उठाय घूंघट करत उसरत पट गुझ-रोट । सुख मोटें लूटी ललन लखि ललनांकी लोट ॥ ४८८ ॥

सुखकी मोट मोट को अर्थ बहुत

दोहा

—०—

तुम वाके नैंननि महीं रहत राति दिन लाल। कोनि वहैं जमुनां महीं जाको घर सोबाल ॥ ४८९ ॥

जमुनां को अर्थ प्रवाह तामें घर नहीं संभवे जमुनां को अर्थ तीर सीतता पवित्रता ध्वनि को अर्थ नैंननि में वसिवो नहीं संभवे नैंननि को अर्थ नजीक ध्वनि को अर्थ तुम वाहीके आधीन हो एक घरी वाको संग छोडि औरि ठौर नहीं जातहो हमसों प्रीति नहीं इत्यादि ध्वनि जानिए

सवैया

—※—

देतिहै पीठि सखी गन कों जिनि चूकि कें रावरी बात कहीहै। मांनक थानि को पांन करे पिक बैंन सु पंकज नैंनिदहीहै जोलों न लाल निकारिहैं बाल न मांनिहैं कोप महीं उमहीहै। लाल बिलोको नदीमें है पोषतहां वह रोष कें रूठि रहीहै ॥ ४९० ॥

पीठि को दान नहीं संभवे देनेको अर्थ फिर बैठवो तहां निरूढा कथा को पीवनों नहीं संभवे पांन को अर्थ सुनिवो तुम्हारी बहु चाह नहीं है इत्यादि ध्वनि इहां दहीको

अर्थ दुखी सोतिसो साल इहां लचना नदीमें घोष गाय को स्थान इहां लचना अब विशेष लचना कहेंहैं

अथउपादांनलच

नालचन

दोहा

अन्वय हित मुख्यार्थ को औरि अर्थ करि लेत । मिल्यो रहै मुख्यार्थ ह्न उपादांन यह हेत ॥ ४८१ ॥

अन्वय हित पद को मिलाप हित को अर्थ लिए अन्वय के लिए मुख्य प्रधान अर्थ छांडि और अर्थ करे श्री मुख्याऽर्थ भी उहां लग्यो रहै सो उपादांन लचना ।

अथरूढोउदाहरन

बिहारी

—※—

श्यांम हरित दुति होय । श्यांम तो रंग हैं ताको सानंद होनो नहीं संभवै यह अर्थमें इहां श्यांम को अर्थ श्यांम रंग को नायक सो आनन्द सहित होत है कविता में अन्वय के लिये श्यांम को अर्थ श्यांम रंग को नायक इहां श्यांम को मुख्य अर्थ श्यांम सो भी

लग्योहै । श्यामको अर्थ इहां पीत नहीं रक्त नहीं यातें उपादांन लचनां श्याम कहैं विशेष अर्थ भी नहीं निकरैहै यातें निरूढा

दोहा

—o—

नीला दौरत देखिये सुरखा कूदत जात ।
सज्जन श्याम सवार यह नैंन अरुन सरसात
॥ ४८२ ॥

एसेंही नीला सुरखा इत्यादि जानिये ऐसें ही तेगके मारे बरछी के मारे इत्यादि विषें लचना तेगसों मारे तेग वालेके मारे इत्यादि विषें नहीं लचना उपादांन लचनामें मुख्यार्थ लग्यो रहत हैं लचन लचना में मुख्यार्थ टूटि जाय है इहे भेद जानिए उपादान लचना अजत्स्वार्था अपनें अर्थ को नहीं छोड़े -

अथ उपादांन लचना प्रयोजनवती

विहारी

दोहा

—(o)—

सालतिहै नट सालसो क्योंहू निकसत नांहि । मन मथने जानो कसो खुभी खुभी जिय मांहि ॥ ४८३ ॥

केवल खुभी जीवमें नहीं गडे खुभी वारो

नायिका चितमें गड़ी है जाके भूषन चितलें चुभें ताके रूप की बड़ाई कहांलगि करों इत्यादि ध्वनि खुभी सहित नायिका चुभी है

दोहा

बंसी गावति विपिनि में कज्जल करत सुमार । पाग लटपटी चित हरे इहां प्रयोजन धार ॥ ४८४ ॥

बंसी आदि में क्रिया नहीं संभवे बंसी सों गावे है ऐसो होय तो लछनां नहीं बंसी गावेहै याको अर्थ बंसी वालो गावे है कज्जल वालो सुमार करे है इहां उपादांन लछना सुमार को अर्थ मन हरे यहां लछन लछनां जांनिए जाको कज्जल सुमार करे है ताके रूप की वड़ाई कहां ताई करे इत्यादि ध्वनि

अथलछनलछनां

दोहा

तजें शब्द निज अर्थकों पर अन्वय सिधहेत । जांनि परे तहां अर्थ अनि लछन लछ विजेत ॥ ४८५ ॥

शब्द आपनों अर्थ छांडि पर कहिए और पद ताको जो अन्वय संबंध ताकी सिद्धि के लिये तहां औरि अर्थ जाहिर जांनिपरे तहां

लच्छन लच्छना है विजेत जीतने वाले कवि

अथनिरूढालच्छनलच्छना

विहारी

दोहा

—※०※०※—

जदपि लौंग ललितो तऊ तू न पहरि इक आंक। सदा संक चढिये रहै यहै चढौसी नांक॥ ४९६॥

यहां इक आंक को अर्थ कबही चढौरहै याको अर्थ भई रहै यह दोय पदमें ध्वनि नहीं औरि संपूर्न दोहासौं वाक्य गत ध्वनि होय

विहारी

दोहा

०—(०)—०

कुच समेटि भुज कर उलटि खए सीस पट डारि। काको मनबांधेन यह जूरौबांधन हारि॥ ४९७॥

इहां बांधिवे को अर्थ वस करनौं ऐसें लरत ढुंढार आदिमें लच्छन लच्छनां ढुंढार देस लरिवे में उपयोगी नहीं यातें देसवासी लिए पाग लट पटी चित हरिवे में उपयोगी है वासौं जुदो नहीं ढूंढारके लोग मारवारमें

जाय लरें मारवारके ढूंढारमें जाय लरें तहां देस अरु लोग न्यारे भए मिल्या नहीं रह्या पाग लटपटी चित हरे इहां पाग माथासौं लगी रही यातें इहां उपयोगी इहां नहीं उपयोगी । यातें लच्छन लच्छनां नहीं

अथ प्रयोजनवती लच्छना लच्छन

सुन्दरसिंगार

—※—

अबही चबाय चलि जैहै चुप रही माई गोकुल में फूंकि करि पाय धरियतुहैं । इहां मुखसौं फूंकिनौं नहींसंभवे (अर्थ)कोई जीवको स्पर्श नहीं करो हौं पतिव्रता हौं इत्यादिक ध्वनि

सुन्दरसिंगार

सवैया

—०—

प्रीतम गौंन किधौं जिय गौंन कि भारकि भौंन भयानक भारो । पावस पावक फूलकि शूल पुरंदर चापकि सुंदर आरो । सीरी बयारि किधौं तरवारिहैं वारिद वारिकि बांन विसारो । चातक बोल की चोट चुभैं चित चंद बधूके चकोरको चारो ॥ ४९८ ॥

चातकको बोलहैं कैधौं चितमें चोट चुभेहै चुभिबो धर्म तीर बरछी कोहै चोट पीड़ाको

नांमहै तीर बरछीसीं पीड़ा उपजे है ताकी चुभिबो नहीं चुभिवेको अर्थ लगिवो अति पीड़ा आदि ध्वनि जो चुभे है ताकी पीड़ा बहुत होती है

विहारी

विरह जरी लखि जीगननि । जरीको अर्थ दुखी जोकोउ जरेहै ताकों आठों पहर कल नहींपरेहैं इत्यादिक ध्वनि। देतहै पीठि सखी गनकों। इत्यादि सवैया नदीमें घोष नहींसंभवे नदीको अर्थ तीर सीतलता पवित्रता. आदि ध्वनि

विहारी

तोरस राच्यो आंन वस कह्यो कहैं मति कूर । यहां रस रच्यो याको अर्थ आशक्त तोहि विनां औरि नहीं भावेहै इत्यादि ध्वनि यह जहत्स्वार्था जांनिए नदी आपनों अर्थ छो ड़ेहै तीरको कहैहै पहिलो अजहत्स्वार्था यह जहत्स्वार्था। यही दोउ लछनां मुख्य औरि याके भेद अजहत्स्वार्था जहत्स्वार्था जुदी लछना नहीं

लछन

दोहा

तजे आपनें अर्थकों जहत्स्वार्था मांनि । न तजे है निज अर्थ कों अजहत्स्वार्थ बखांनि ॥ ४९९ ॥

औरि लछन लछनां विपरीत अर्थमें होत है यातें विपरीत लछनां लछन लछनां सों जुदी नहीं. जैसें वाग्विदग्धा क्रियाविदग्धा में स्वयं दूतिका अंतर्भूत होति है

विपरीतलछना

उदाहरन

दोहा

—००—

प्यारे तुम नीके लगत बनि आए हो लाल । मोमन कों रंजन करे बिन गुन की उर माल ॥ ५०० ॥

जहां उलटो अर्थ सो विपरीत प्यारे को अर्थ दुष्ट नीके लगत याको अर्थ बुरे लगत बनि आए को अर्थ बिगरि आए ऐसें जानिए इहां आपनो अर्थ छांडि और अर्थ कों लेति है यातें लछन लछना ही जानिए

कवित्त

—० ०—

झूठी वेई प्यारे तुम्हें झूठ जे लगावति हैं तुम सब साधुनि में परम विशेषिए। रातिकों जे आवतहैं होत हैं वे चोर तुम आवतहो भोर यातें साहनि में लेखिए। नैंन हैं न लाल औ महावर न भाल ओठ बीच कारे काजर की रेख हू न रेखिए। आरसी कों

निरमल रावरे को मुख तामें मेरी चारु चूनरी को प्रतिबिंब देखिए ॥ ५०१ ॥

प्यारे दुष्ट झूठी वेई को अर्थ साँची वेई तुम्हैं साँच लगावति हैं ऐसें जानिए

विहारी

आजु मिले सु भली करी भल बन हो लाल । बुरी करी बुरे बनें हो जानिए । वेई गड़ि गाड़ें परी उपर्यो हार हियेन । हार उपर्यो है

अथ सारोपालक्षन

दोहा

जाकौं जहां सु राखिए दोऊ रहैं प्रकास । सारोपा सारोप्य को विषय आरोप्य निवास ॥ ५०२ ॥

जो वस्तु जाहि वस्तु में राखिए राखनें की ठौर औ राखिवेकी वस्तु दोऊ जहां रहैं आरोप्य को विषय राखिवेकी ठौर आरोप्य जो वस्तु राखिए घट आरोप्य को विषय जल आरोप्य ऐसें जानिए जहां दोनों रहैं सो सारोपा जहां आरोप्य रहै आरोप्य को विषय नहीं रहै तहां साध्य वसाना कहैंगे ।

अथ निरूढा सारोपा

उपादानलक्षना

बिहारी

दोहा

सोहत ओढें पीत पट श्यांम सलोनें गात। मनो नील मनि शैल पर आतप पर्यो प्रभात॥ ५०२॥

पीत श्यांम शब्द आपनें अर्थ को नहीं छोड़े हैं पीत रंग को पट श्यांम रंगको पुरुष को कहे हैं यातें उपादान लक्षना जानिए आरोप्य मान कीनहैं पीत श्यांम आरोप्य विषय कीनहैं पट गात पीत श्यांम रंग पट में गात में राखिएहैं यातें पीत श्यांम आरोप्य मांन पट गात आरोप्य विषय यह दोअ हैं यातें सारोपा जानिए जो पीत पट में ध्वनि काढिये प्रीतको रंग पीतहै नायिका के अंग के रंगके समान है तो यही प्रयोजनवती जानिए

बिहारी

—oo—

श्यांम गात नख रेख लाल लाल चमकें चुनी। चौका विद्रुम समाम इत्यादि। बाल कहा लाली भई लोयन कोयन मांहि। इहां यंह लक्षनां नहीं लालको धर्म सो ललाई क्रोधमें ललाई उपजे है

दोहा

श्वेत अश्व दौरत लखो श्याम पुरुष असवार। लाल नैन अरु पीत पट नील सु चिक्कन धार ॥ ५०४ ॥

अथप्रयोजनवतीउपादांन लच्छनासारोपा

दोहा

—००—

झंगा सुनि शंका सहित अरिंन गहे गिर घाट। चौर धरो को जात लखि यह बंदूक को ठाट ॥ ५०५ ॥

जो इहां बंदूक को ठाट इतनोही कहते तो उपादांन लच्छनां ही होतो यह बंदूक को ठाट यह शब्द कह्योहै यह पद आरोप्य विषय बंदूक को ठाट आरोप्य मान यह बंदूक वारे जाते हैं जो ऐसो होतो तो लच्छनां नहीं बंदूक को सघनता आदि प्रयोजन

निरूढालच्छनलच्छनासारोपा

विहारी

दोहा

०—०

कोज कोरिक संग्रहो कोज लाख हजार।

सो संपति जदुपति सदा विपत विदारनि हार ॥ ५०६ ॥

संपति को अर्थ पालक सुखद आदि यामें लच्छन लच्छनां जदुपति आरोप्य विषय संपति आरोप्य मांन इहां तादात्म्य संबंध करि सारोपा भई

तादात्म्यलच्छन

दोहा

—*०*०*—

औरि औरि करि मानिये रहै न कछु इक भेद । सो तादात्म्य भांति यह हरि धन ब्रह्म सुवेद ॥ ५०७ ॥

और पदार्थ कौंन है हरि औ देवता कौं औरि पदार्थ करि मान्यो धन करि ब्रह्म करि भेद नहीं राख्यो हरि धनहै वेद ब्रह्महै

दोहा

०—(०)—०

मर्द सु कोसल लरतहैं लरत सु मर्द ढूंढार । मर्द छड़वतो लरतहैं मर्द लरत सकमार ॥ ५०८ ॥

मर्द मनुष्य वाची है देश जड़है मर्द कोसल याको अर्थ कोसल देशके जो मर्द हैं इहां अर्थ ऐसो जानिए कोसल देश विषें जे पुरुष हैं कोसल आरोप्य विषय पुरुष आरोप्य मान

ध्वनि नहीं निकारी यातें निरूढा संबंध विषे सुद्धा लक्षना जांनिए

अथलक्षनलक्षनांसारोपा

प्रयोजनवती

दोहा

—※—

है सुख मोहन को दरस मुक्त सु केशव नांम । संपति सेवन भक्त को यहै धर्म अभिरांम ॥ ५०९ ॥

मोहन को दरसन कारन सुख कार्ज कार्ज कारन संबंध करि तादात्म्य संबंध की प्रतीति होती हैं मोहन को दरसन सुख रूपही है या दरसतें सुखको आत्मा कहिये स्वरूप सो जुदा नहीं औरि पदार्थ औरि तरहको है दरस पदार्थ औरि तरह कोहै सुख मुक्ति जीवन आदि को करन वालो है यह ध्वनि सुख आरोप्य मांन दरस आरोप्य विषय इहां सुद्धा लक्षनां भी जानिए ऐसें ही मुक्ति आदि जानिए जग जीवन नन्दलाल जगजीवन कार्ज नन्दलाल कारन

विहारी

दोहा

—॰—

हरि छवि जल जबतें परे तबतें छिन

विकुरैंन । भरत ढरत बूडत तिरत रहत घरीलौं नैंन ॥ ५१० ॥

हरि छबि आरोप्य विषय जल आरोप्य मान जलको अर्थ इहां निर्मल हरि छबि की स्तुति प्रेमकी अधिकाई आदि ध्वनि घरीलौं नैंन इहां साद्दश्य संबंध करि गौनी जानिए

विहारी

——❈——

रूप सुधा आसव छक्यो आसव पिय तन नैंन ।

रूप आरोप्य विषय सुधा आरोप्य मांन सुधा को अर्थ मीठो तो संभवे नहीं मीठो रूप कहें फेरि लच्छना करनी परे सुधाको अर्थ सुखद यातें गौनी नहीं भई रूप सुधा सौं आसव है इहां गौनी भई रूप सुधा सौं भी मत्त होत हैं आसव सोभी मत्त होत है

विहारी

——०❈०——

छ्वै कपूर मनमें रही मिलि तन दुति मुकुतानि ।

मुकुतावली कपूर मनिमें भेद नहीं करै तो तादात्म्य संबंध करि यह लच्छना सुधा होइ मुकुतावली में कपूर मनिको आरोप्य कियो

या तरह के उदाहरन औरि कविता मैं ध्यानके लिये लिख्यो

अथसाध्यवसानालच्छन

दोहा

—※—

रोप्यमान जहां रहत है रोप्य विषय नहिं होय। रोप्य विषय जान्यौ परे साध्य वसाना सोय॥ ५११ ॥

जाकौं राखिए सो आरोप्य मान जामैं राखिए सो आरोप्य विषय

निरूढाउपादांनलच्छनांसाध्य वसानोउदाहरन

पीछिलादोहा

नीलादौरत देखिए इत्यादि नील आरोप्य मान घोड़ा आरोप्य विषय सौं नहीं है

अथप्रयोजनवतीउपादांनलच्छनां साध्यावसानाउदाहरन

पीछिलादोहा

—०—

बंसी गावति विपिन मैं इत्यादि

भाषाभूषन

—ঃ—

कनक लता पर चन्द्रमा धरे धनुष है बांन।
कनक लता सारीखी नायका जानिये इत्यादि सुंदरताकी अधिकाई आदि ध्वनि

भाषाभूषन

—०—

नभ ऊपर कंचन लता कुसुम स्वच्छ है एक
कंचन लतासो बीजुरी कुसुम सो चन्द्रमा

अथसुद्धागौनीलचना

दोहा

सब ही शुद्धा लच्चना संबंधनि में जानि।
गौनो है सादृश्य में सोरह भेद प्रमानि ॥ ५१२ ॥

सब ही लच्चना जे पीछे कहीहैं संबंध विषे शुद्धा कहावें और जहां सादृश्य संबंध होय तहां गौनी कहावें

शुद्धाउदाहरन

दोहा

—००—

कृष्ण गोप सखि मैं लख्यो छबि छकि रही निहारि। हार हस्यो करमाहि तें अंगुठी लई उतारि ॥ ५१२ ॥

कृष्ण गोप को कार्ज करै है याते गोप और जाति को कर्म किएं औरि कहावे यहां ता त्कर्म संबंध जानिए आंगुरी में अंगुठी रहती है आंगुरी कों करकहनौं इहां अंग अंगी संबंध आंगुरी अंगवार अंगी औरि उदाहरन पीछे संबंध के कहे खाती को कर्म किएं ब्राह्मण खाती इत्यादि जानिये

अथ गौनी बिहारी

दोहा

कमल नंयनि मंजनि किएं बैठी व्योरति बार। कच अंगुरिन बिच डीठ दै निरखति नन्द कुमार ॥ ५१४ ॥

कमल सरीखे नेत्र नहीं संभवें कमलके गुन लिए कमलको अर्थ अरुन बिसाल सुन्दर आदि यहां सादृश्य संबंध

प्राचीन सवैया

प्रान पियारी सिंगार संवारि लिएकर दर्पन रूप निहारी। चन्द सो आनन की दुति देखि के पूरि रह्यो हिय आनन्द भारो। नख अग्र अंजन ले रमनी दृग अंजति यों उपमा अनुसारो। चोरकै चोंच चकोरन की मनु चोंप ते चन्द चुगावति चारो ॥ ५१५ ॥

यह प्राचीन सवैयामें चन्द्रमा समान आननता की द्युति इहां गौनी सो मूल हीमें कही चन्द्रमा को अर्थ सुन्दर आनन्द दायक द्युति एक गुन है सोतो कह्यो । गजगौनी मृगलोच नी कोकिल बैनी वाम । गमन क्रिया ताकी गज उपमा नहीं गजकी गमन क्रिया उपमा भई गजको अर्थ गज गमन इहां लछन साध नां गौनी मन्दता आदि गुनलिए

बिहारी

---००---

सोहत धोतो सेतमें कनक बरन तनबाल ।
यहां भी कनक को अर्थ कनक को रंग तैसोरंग जानिए अब भेद सहित उदाहरन

अथ निरूढा उपादान

लछना सारोपागौनी

दोहा

---००---

पांन पुरानो सीत अरि मी तरुनी कोमिल ।
सुख है रितु हेमंतमें सबही को यहतेल
॥ ५१६ ॥

तिलसो छीयसो तेल यह प्रत्यछ सरिसों का तेल है इहां उपादान लछना सुख आ रोप्य तेल आरोप्य विषय यातें सारोपा तिल को तेल समान यह सरिसों अलसी को तेल है यातें गौनी जानिए

अथ प्रयोजनवतीउपादांन लछनांसारोपागौनी

दोहा

सदृश सु राज कुमार के जात सु भौरि कुमार । ताहूकों सब कहत हैं एसब राज कुमार ॥ ५१७ ॥

यह भौरि कुमार आरोप्य विषय राजकुमार आरोप्य यातें उपादांन लछनां राज कुमार सदृश कहें गौनी जैसें सखीकों कहे हैं यही नायका है जैसें यही हमारो राजा है जैसें यही देवता है यही परमेश्वर है इहां यही शब्द कहें साध्य वसाना नहीं यह शब्द आरोप्य विषय है देवता आरोप्य मान है जो यह शब्द दोहा में न कहें तो यही दोहा साध्यवसानांको उदाहरन होय सबनिको उदाहरन एक ठौरमें दियें कठिन होय सब लछना ध्वनि निकारें प्रयोजनवती जहां ध्वनि नहीं निकारें तहां तहां निरूढा गूढ अगूढ सूं व्यंगतें फल लछन द्वै भांति

अथगूढव्यंग

दोहा

हियो नैन सीरे भये में दीठो अखिलास

। प्रात तिहारे गातपें राजत है ससिबाल ॥ ५१८ ॥

गातपें चन्द्रमा नहीं संभवे खंडिता कौं राजी होनौं नहीं संभवे औरि नायिका को संग करि आए हैं यह नखक्षत हैं इत्यादि व्यंगसों गूढ है

अथअगूढव्यंग

दोहा

मोहन की सोभा सखी सखि सौं कहति सुनाय । यौवति कांननि कांमिनी घूंघट ओट उठाय ॥ ५१९ ॥

इहां यौवत की अर्थ सुनिवो आदर सौं मन लगाय व्यंग जाहिर

दोहा

होत कहूं फल धर्म गत धरमी गत कहुं होत । जिती फलवती लच्छनां बत्तिस भेद उदोत ॥ ५२० ॥

अथधर्मगतफल

देतिहै पीठि सखी गनकौं इत्यादि कवित्व में नदीमें, दोष इहां सीतलता आदि धर्म

अधिक जानिये धर्मगत फल धर्म में फल अति सीतलता पवित्रता को अधिकाई फल हुवो

अथधर्मों में

कवित्व

अंबर सजल मेघडम्बर सों छायो हरि तैसी छवि बागकी तड़ाग की निवांन की। भूतल में भेकनि अनेकनि मचाए घोष केकनि सों मिली धुनि चारु चकवांन की। बगनि की पांति केहूं भांतिसों सह्योहै जाति काहूमें कठोर मन देहहै पखांन को। सुनि शुक गांनको निहारि शोभा सानुकी सु कैसें अब भांन को सहैगो कांम बांन को ॥ ५२१ ॥

दुख धर्म काहू धर्मो दुख सहिवे में काहू काहू की अधिकाई हमारो शरीर पत्थर को है दृढ है मैं तो सब दुःख सहत हौं नदी में घोष इहां तटलक्ष्य अधिकाई सीतल आदि धर्म को ऐसें जानिए यह भेद फलवती को निरूढा को नहीं निरूढा में ध्वनि नहीं

अथपदमेंवाक्यमेंलक्षना

दोहा—

भेद निरूढा के जिते औरि फलवती अंग।

होत सु पदमें वाक्य में इहिं विध करत प्रसंग ॥ ५२२ ॥

अथपदमेंउदाहरन

——(०)——

देतिहैं पीठि सखीगनकीं इत्यादि कवित्तमैं

अथवाक्यलच्छन

दोहा

——०——

जोकहिवेको जोगहै वाक्य ताहि कीं लेख।
पद समूह अन्वय सहित बोधक अर्थ परेख ॥ ५२३ ॥

अथवाक्यमेंउदाहरन

प्यारे तुम नीके लगत इत्यादि दोहाजानिए

अथलच्छनांकिअभेदकथन

दोहा

——०——

उपादान जो लच्छना लच्छन लच्छन नाम।
रूढ प्रयोजन भेद तें चारि होत अभिराम ॥ ५२४ ॥

उपादान लच्छना एक निरूढा १ दूसरी प्रयोजनवती २ लच्छन लच्छना एक निरूढा १ दूसरी प्रयोजनवती २ यह चारी ४ भेद जानिये

दोहा

सारोपा पुनि चारिहू साध्यवसाना चारि।
सर नूपारी हरि कहैं आठ भेद निरधारि
॥ ५२५ ॥

उपदांन लच्छनां २ लच्छन लच्छनां २ के जे चारि भेद
हैं ते सब सारोपा होतहैं साध्यवसाना होतहै
१ उपादांन लच्छनां निरूढा सारोपा
२ उपादान लच्छना प्रयोजनवती सारोपा
३ उपादान लछना निरूढा साध्यवसानां
४ उपादान लछना प्रयोजनवती साध्यवसानां
५ लच्छन लछना निरूढा सारोपा
६ लछन लछना प्रयोजनवती सारोपा
७ लछन लछना निरूढा साध्यवसानां
८ लछन लछना प्रयोजनवती साध्यवसाना
यह आठभेद चारिनिरूढा चारि प्रयोजन
वती है

दोहा

आठौं शुद्धालच्छनां आठौं गौनी होति। यातैं
भाषा में किए षोडश भेद उद्योति ॥५२६॥

उपादांनलछना निरूढा सारोपा १ उपादां
न लछन प्रयोजनवती सारोपा शुद्धा २ ग्रांम
पुरुष उपादांनलछनां निरूढा साध्यवसानां

शुद्धा ३ उपादांन लच्छनां प्रयोजन वती सा ध्यवसाना शुद्धा ४ कज्जल मन हरे लछन लछ ना निरूढा सारोपा शुद्धा ५ लछन लछना प्रयोजनवती सारोपा शुद्धा ६ मुख चंद है लछन लछनां निरूढा साध्यवसाना शुद्धा ७ लछन लछनां प्रयोजनवती साध्यवसाना शुद्धा ८ उर पर दोय संभुही हैं इहां अभेद संबंध करि शुद्धा उपादांन लछनां निरूढा सारोपा गौनी ९ उपादांन लछनां प्रयोज-नवती सारोपा गौनी १० नायिका सखी है ईश्वर राजा हैं नायकासी ईश्वरसी नायकात्व ईश्वरत्व सहित है उपादांन लछनां निरूढा साध्यवसाना गौनी ११ उपादांन लछनां प्रयोजनवती साध्यवसानां गौनी १२ राजाकों कोई कहेहैं आज ईश्वर देख्यो लछन लछनां निरूढा सारोपा गौनी १३ लछन लछनां प्रयोजवती सारोपा गौनी १४ पियूष साधुको दरस लछन लछनां निरूढा साध्यवसाना गौनी १५ लछन लछनां प्रयोजनवती साध्या वसाना गौनी १६

हरिभक्त अमृत पानकरें हैं औरि को अमृत पान करावें हैं हरिको सुजस आपु करें हैं औ रिको करावें हैं हरिभक्त को अमृत पान सम वे नहीं

इति सोरह भेद

दोहा

(--००--)

यामें आठ निरूढ हैं आठ फलवतो आनि ।
गूढ अगूढ सुव्यङ्गतें फलवतो सोरह मानि
॥ ५२७ ॥

आठभेद निरूढाके जुदे

गूढ व्यङ्ग अगूढ व्यङ्ग करि फलवती सोरह भई सोरह फलवतो आठ निरूढा मिलाए चौबोस भए फेरि सोरह फलवती के औरि भेद कहे हैं

दोहा

फलको वास सुधर्म में कहुं धर्म में वास ।
बहुरि फलवतो लछना बत्तिस कही प्रकास
॥ ५२८ ॥

आठ भेद निरूढा के सोरह फलवती के भेदथे धर्म गत फल धर्मि में फल यातें फलवती के बत्तीस भेद भए आठ निरूढा के मिलाएं चालीस भए अब फलवतो निरूढा के भलो भेद कहत हैं

दोहा

—०—

आठ निरूढा लछना बत्तिस फलवती भेद ।

पद में श्रव पुनिवाक्य में श्रत्योहीत अभेद ॥ ५२९ ॥

चलत कछु ठटकत कछु पौन ध्वजा फहरात । मथुरा कि पथमें लख्यो मोहन को रथ जात ॥ ५३० ॥

या दोहाको चलत कछु कोई जहत स्वार्थी अजहत्स्वार्थी कहत हैं सो नहीं है चलें हैं बैल नामरथको कोई कहे हैं यहां गमन क्रिया है लक्षना नहीं पूर्व देशको विभाग परदेश को संयोग रथमें भी संभवे है काकसों दहीको रक्षा करो यहां उपादान लक्षना जानिए काक को अर्थ दही खानवाले तामें काक भी जानिए पौन सों पोथी को रक्षा करो दूधसों शरीर पोखो काहू को बुरा मत कहो गुरुको निन्दा मति करो इत्यादि विषें अजहत्स्वार्थी उपादान लक्षनां जानिए वक्ता को वाच्य जो अर्थ ताही विषें लक्षनां होति है जैसें नदी में गाम है इहां वक्ता को वाच्य तौरहै प्रवाह नहीं लक्षनां तो यही प्रकार को जहां जैसें अर्थ में होय सो नाम कहावे समूह विषें होय सो समूहार्थी जैसें छत्री जाति हैं जाको छत्र रहै सो छत्री जाको दंड रहै सो दंडी एक छत्री के संगसों सब छत्री इहां उपादान लक्षनां है समूहार्थी कहावे है ऐसें नदीके विषें होइ सो तटस्थ लक्षनां इत्यादि जानिए

अथसंक्षेपतेंलक्षनां

छप्पै

मुख्य अर्थ को छोरि अर्थ लेरहे मुख्यतहिं
उपादांन लक्षन सु लक्ष जहां रहति मुख्य
नहिं। रोप्य रोप्य थल रहत एक ह्वै सारोपा
कहि। रहत साध्यवसांन माहिं थलरोप्य भेद
लहि। गौनी सु होति साद्दश्य में शुद्धा सर्व
संबंध गनि। मुख्यार्थ बाध मुख्यार्थ में जोग
सु लक्षन अक्ष अनि ॥ ५२१ ॥

उदाहरनछप्पै

उपादांन गावत सु वेनु मन हरत सु कज्जल।
लक्षन लक्षन फूल शूल अंगार सु वनजल।
सारोपा सो निशा दिवस हरि जस सो रस
वर। साध्य वसाना हेम वेलि ससि जुत है
धनुधर। शशिवदन के हरोधनिपती गौनी
पंकज कर चरन। शुद्धा कलेश पावस प्रबल
आयुध धृत हरि जन सरन ॥ ५२२ ॥

इतिलक्षनां

अथव्यंजनां

दोहा

इमि व्यंजनां व्यंग की व्यक्त करन की

जोग । ध्वनिज्यौं प्रतिध्वनि होत है. नगनद में कविलोग ॥ ५३३ ॥

आगें ध्वनि भेद कहेंगे परके अर्थ कौं कहे सो वृत्ति व्यंजनां व्यंजनां वृत्तिसौं ध्वनि निकरै है जो व्यक्त करिवे को जोग्य सो व्यंग शब्दार्थतें जो अधिक अर्थ निकरै सो व्यंग चमत्कार विशिष्ट अधिक अर्थ ध्वनि जैसें अवाज होती है पर्वत में नद में दूसरी ध्वनि होति है ऐसें कविता में ध्वनि जांनिए

भाषाभूषन

सरग चढाए पतितलै गंगकहा कहुं तोहि इहां निंदा तो अर्थ स्तुति ध्वनि

अथव्यंजनालक्षन

दोहा

जहां न अभिधा लक्षनां तात्पर्या न समर्थ । शब्द अर्थ कौं व्यंजनां रचे सु औरें अर्थ ॥५३४॥

जो वृत्ति शब्द अर्थ कौं औरि अर्थ करै सो व्यंजना कहावे सो व्यंजनां दो एक शाब्दी १ दूसरी आर्थी २ ये दो व्यंजना शाब्दी दो एक अभिधा मूल १ दूसरी लक्षनां मूल २ आर्थी व्यंजना आगें कहेंगी तात्पर्या वृत्ति कहेंगे

अथशाब्दीव्यंजना

दोहा

कहैं व्यंजना शब्द की एक सु अभिधा मूल । दूजी लछन जूल है सुनि मत के अनु कूल ॥ ५२५ ॥

जो अभिधा सौं होय किंवा लच्छना सौं होय सो शब्द को व्यंजना कहावे

अथअभिधामूलछना

दोहा

बहु वाचक शब्दहि रखै एक अर्थ में गन्य । जोगादिक करि जानिए व्यंग्य सु अभिधा जन्य ॥ ५२६ ॥

गन्य गनतो को पुरुष होय तोनि अर्थ के शब्द कौं एक अर्थमें राखे श्लेष आदि विषे जोग आदि

दोहा

जोग १ वियोग २ सुसाथ ३ पुनि अरु विरोध ४ कौं जानि । अर्थ ५ सु प्रकरन ६ लिंग ७ कहुं अन्यशब्द ८ संग मानि ॥ ५२७ ॥

है सामर्थ ९ सुश्रोचिती १० काल ११ व्यक्ति

१२ अरु ईश १३ । इत्यादिक शब्दार्थके भेदक होत सु भेष ॥ ५३८ ॥

तेरह जोगादिक शब्द के अर्थ को भेद कहे हैं

अथसंजोगलछन

दोहा

—※—

अनेकार्थ सो शब्द इक लछन लछ्य लखाय । ऐसो अर्थ वियोग करि सो संजोग ठहराय ॥ ५३९ ॥

जहां ये तीनि शब्द होंय तामें एक शब्द अनेक अर्थ वाची होंय जैसें गदा पद्म सहित विधु विधु को अनेक अर्थ विधु लच्छ है गदा पद्म लछन हैं जानिवे को जोग्य सो लछ्य जासों जानिए सो लछन गदा पद्म विना विधु यह वियोग कियो तो भी विधु को अर्थ भगवान चन्द्रमा नहीं कपूर नहीं राघव नहीं

अथसंजोग

दोहा

—※—

हरी सोहत हैं कमलसों शिव कर लसे त्रिशूल । पुष्कर सोहत चंदसों वन पलास के फूल ॥ ५४० ॥

इहां जय पक्ष लक्षन शिवको अर्थ महादेव कील पशु नहीं पुष्कर को अर्थ आकाश तलाव नहीं बानको अर्थ बाग जल नहीं

दोहा

—*०*०*—

वनको शोभा कंजहै सरको शोभा नीर ।
अंबर शोभा जोन्हिहै धरको शोभा चीर ॥ ५४१ ॥

यम जल सो लक्ष्य कंज लक्षन वियोग किए नहीं अर्थ कंज विना वन इहां भी वनको अर्थ जल सर तलाव सो लक्ष्य नीर लक्षन बांन नहीं अंबर आकाश वस्त्र नहीं धर शरीर धर शब्द भाषा में धरती को भी नामहै

अथवियोग

—००—

मदके वियोग करि नागको अर्थ हाथी सर्प नहीं तानके वियोग करि राग गावनो रंग प्रीति नहीं पर्णके वियोग करि बाग वचन वाटिका नहीं पानके वियोग करि मुख को अर्थ आनन आदि नहीं आदि को अर्थ विमुखा आदि अमर इंद्र मुख इंद्र आदि देवता

साहचर्जलछन

दोहा

अर्थ अनेकहि कहत जहां सब ही शब्द मनाय। द्वै प्रधान सबही तहां साहचर्ज इहिं भाय ॥ ५४२ ॥

सब शब्द अनेकार्थ हींय सबही शब्द प्रधान हींय लछन लछ्य नहीं होय साहचर्ज अर्थ को साथ

अर्थसाथ

दोहा

जीति तहां संपति तहां तहां धर्मको जोर। अरिन सके नशत्रु ता हरि अर्जुन जिहिं ओर ॥ ५४३ ॥ अर्जुनके संग करि हरि कृष्ण

दोहा

चंद्र १ चंद्र २ अरविन्द ३ अलि ४ कपि ५ केहरि ६ के कान ७। कंचन ८ काम ९ कुरङ्ग १० बन ११ घन १२ कोदण्ड १३ नभ १४ भांन १५ ॥ ५४४ ॥

पानी १६ पावक १७ पौन १८ पय १९ गिरि २० गज २१ नाग २२ नरिंद २३। नहीं हरी के संग करि अर्जुन पारथ छन्द ॥ ५४५ ॥

। यहां लछ्य लछन नहीं दोनों शब्द प्रधान

हैं संजोग सों भिन्न प्रकरन सों भिन्न प्रकरन में एकही शब्द बहु बाचक होतहै यहां हरि अर्जुन दोनों बहु बाचक

अथविरोध

दोहा

देख्यो रावन राम में लख्यो प्रलय सुराम।
इनि दोऊ रामनि महीं कौन गौर को श्याम
॥ ५४६ ॥

यहां संजोग नहीं लक्ष्य लच्छन के अभावतें इहां राम रावन दोऊ प्रधान हैं यहांसाहचर्ज नहीं साहचर्य में दोऊ शब्द अनेकार्थ बाची होय यहां बैर प्रधान है

अथअर्थलच्छन

दोहा

अर्थ हितें बहु अर्थ को शब्द बुझावे एक।
साह चर्यबिन अन्य संग अर्थ लख्यो सविवेक
॥ ५४७ ॥

जो शब्द बहुत अर्थ वाचक होय अर्थ कहूं एक पदार्थ कों समुझावे साहचर्य बिना अन्य संनिधि आदि बिना ऐसो अर्थ व्यंजक जानिए

दोहा

बिधु सौं गति जोगी लहै हरि मय जगत निहारि। चित्रभानुग्रह दुति हरै अंबर हर्यो मुरारि ॥ ५४८ ॥

यहां बिधुको अर्थ नारायन चंद्रमा नहीं हरिको अर्थ भगवांन इंद्र आदि नहीं चित्र भानु सूर्य अग्नि नहीं अंबर को अर्थ बस्त्र आकाश नहीं यहां अन्य संनिधि नहीं घन बरषत यहां घन सो बरषत पद लगे है अन्य संनिधि है ऐसें बिधुसौं गति यहां नहीं जब सब पद को अर्थ करे और सौं मुक्ति नहीं ठहरावे वेद पुरान प्रमान देय तब बिधुको अर्थ नारायन

दोहा

इन्द्रिय बसकरि घर तजें सबसौं करैबिराग। बहु धनकानसौं जो गिनैं भव पद लहै सभाग ॥ ५४९ ॥

भाग्य सहित पुरुष भव महादेव संसार नहीं

अथ प्रकरण.

पद

एक शब्द बहुवाचक आने। प्रकरन तहां

प्रसंग प्रमाने ॥ जहां एक शब्द बहुवाचक रहै प्रसंग सों एक विषय ठहराइये सो प्रकरन

दोहा

पावक तें दाहक प्रबल को कवि सके वखानि । दियो महाबल जानिके गरल भीम कों आनि ॥ ५५० ॥

समुद्र मथन के प्रसंग में भी महादेव भारत के प्रसंग में भीमसेन कों दुर्योधन ने विष दियो है यह कथा है

दोहा

बहुचख चंचल करि हंसत रस मय करत वनाय । रहे उरबसी उरलगी राजत हो हरिराय ॥ ५५१ ॥

गोपी की उक्ति में नेत्रनि कों बहुत चंचल करि हंसत हो उरबसी धुक धुकी किंवा जो उरमैंबसी नायिका सो देवी के प्रसंग करि बहुत जेहैं नेत्र तिने चंचल करि हंसत हौं रस मय जलमय उरबशी अप्सरा हरि इन्द्र अभिधा करि लक्षणा व्यंजना करि इन्द्र

अथ चिन्ह

दोहा

यहै चिन्ह जाको नहीं सके वियोग बनाय ।

ज्यों वियोग ताको करैं औरि अर्थ ठहराय ॥ ५५२ ॥

बिन भूषन मनको हरे काहे करति शृङ्गार। तुव छबिपार लहै नहरि जाके नैंन हजार ॥ ५५३ ॥

हजार नेत्र को हरि हजार नेत्रको वियोग नहीं होय सकें दृढ लक्षण है हजार नेत्रबिना हरि तहां प्रकरनादि करि राजा को प्रतीति होयगी इन्द्रकी प्रतीति नहीं लोगकी कहनावति है हे राजा तू इन्द्र है

अथ अन्यसन्निधि

दोहा

एक शब्द के संगते औरि अर्थ ठहराय। बहु वाचक के शब्दको अन्य संनिधि इहिंभाय ॥ ५५४ ॥

घन बरषत फूलत सुमन काम चलावत तीर। नयोनेह पियकों लग्यो तिय धरिसके नधीर ॥ ५५५ ॥

बरषत के सङ्ग फूलतके सङ्ग घनको अर्थ मेघ लोहको घन नहीं सुमन को अर्थ कली देवता नहीं। निसिकारी भारी घटा। यहांकारी के संगकरि निसाराति हरदो नहीं। पियाबिन लागत है अंबुद डरावनो। अंबुद मेघ तागर मोथा नहीं

अथसामर्थ्य

दोहा

व्यर्थ भई कविउक्ततें औरि अर्थ सुलखाय।
ताहि कहें सामर्थ्य सव इहिं विध भेदहिपाय
॥ ५५६ ॥
मुनि गन तजे समाधि सुख जती तजे सव
जत्त। मान रहेन तियानकोबोलत इक मधु
मत्त ॥ ५५७ ॥
मधु मदिरा ताको पान कोकिल को नहीं
चैत्र मादक नहीं कविको उक्ति व्यर्थ होय
चैत्रही सों मत्त जतायो

दोहा

छलवल करि संग्राम लरि गए दुश्मन सव
हारि। तुहिलखि भूप सरीस पुनि रहे नग
निकोंधारि ॥ ५५८ ॥
नग जवाहर ताके धारन सों बचाव नहीं
नगन पहार ताको धारनों राखनों संभवे
नहीं बहुवाचक शब्दमें लच्चना नहीं इहां
कवि उक्त व्यर्थ होय पहार कों कहति हैं
मैंन दीप चित्तमांहि मोमको दीप चित्तमें
नहीं संभवे कामप्रकाशक नहीं यहां कवि
उक्ति तें कामदीप

अथऔचिती

दोहा

—•—

होय अर्थ के शब्दतें निकरे जोग अजोग।
जोग अर्थ तहां कीजिये सो औचीति प्रयोग ॥ ५५९ ॥

दुर्निवार संकट परे लखिचित अति अकुलाय। तहां तहां गुरु मुखनि कों गुरुपद हो तसहाय ॥ ५६० ॥

गुरु मुख को दोय अर्थ एक तो गुरु को सो मुख यह तो अजोग दूसरो गुरु मुख को अर्थ जो गुरु सों सन मुख रहत है

दोहा

•—(०)—•

रे मन सबतें निरस रहु सरस रामतें होहि।
इहे सिखाबन देत है तुलसी निस दिन तोहि ॥ ५६१ ॥

निरस को अर्थ कम सरसको अर्थ अधिक जगत तें न्यून रामतें अधिक यह अनुचितहै राम बिषे रस जुक्त होय राम बिषे आसक्त होयजगत सों रस छांडे ॥ कनक बरन कनकामिनी मोहति मन नंदलाल ॥ कनक सुवर्ण धतुरा नहीं इहां औचिती है सामर्थ्य नहीं सामर्थ्य में दोज अर्थ में संदेह र

है तब कवि उक्ति व्यर्थ होय इहां लच्छना न हीं दोय अर्थ को ग्रन्द जहां लीजिए तहां लच्छना नहीं

अथसमय

दोहा

—००—

चित्रभानुको रूपज्यों रजनी में अति होत।
हरि छबि जैसें दिवस में त्यों तुव बदन उद्दोत ॥ ५६२ ॥

रजनी दिवस समय सो प्रधान चित्रभानु आगि सूर्य नहीं हरि सूर्य चन्द्रमा नहीं राति में हरि छबि यहां चन्द्रमा दिनमें हरि प्रकाश यहां सूर्य

अथव्यक्ति पद

—※—

बहु वाचकमें भेद वतावें। लिंग वचन पुनि व्यक्ति कहावें। कौन लिंग औ वचन लिंग औ वचन व्यक्ति कहावें

दोहा

—※—

काहे कों सोचति सखी काहे होति बिहाल।
बुधि बल छल करि राखिहों पति मेरी नव बाल ॥ ५६३ ॥

अभिसारिका है तेरो शब्द स्त्री लिंग कह्यो इहां पति को अर्थ लाज स्वामी नहीं स्वामी बाचक तहां तेरो 'पति चाहिए तहां प्रोषत पति का नायिका जानिये

दोहा

—०—

जाको आनन कंज सो जाके नैन विशाल ॥
देखो वंजुल कुंज में मंजुल तन वह बाल ॥ ५६४ ॥

देखो स्त्रीलिंग बाल को अर्थ बाला बालक नहीं आछो विधि कहें विधान आछो विश्व कहें ब्रह्मा जाके बहु वचन कह्यो यातें दोऊ नेत्र विशाल जानिये आछो नैन यहां जाति सों एक वचन जैसें ब्राह्मन आयो यहां ब्राह्मन शब्द जाति बाचक है 'सब ब्राह्मन कों कहत हैं आयो एक वचन कहें एक ब्राह्मन की प्रतीति भई ऐसें जानों जाति सों भिन्न सो व्यक्ति

बिहारी

दोहा

—०—

सोहत अंगुठा पांयके अनुवट जर्यो जराय ।
जीत्यो तरिवन दुति सु ढर पर्यो तरनि तिय पाय ॥ ५६५ ॥

इहां जीत्यो एक वचन है याते यह अर्थ एक तरिवन रवि कों जीत्यो तो दूसरा तरिवनको कहा बात है दोनों तो रवि चंद्र कों जीतें इत्यादि ध्वनि जानिये

अथ देश

दोहा

रस ले पुनि तजि देत हैं बसत न ठिक इक धांम । ज्यों बिहरत घन श्यांम नभ त्यों विहरत व्रज रांम ॥ ५६६ ॥

व्रज नभ देश रांम बलदेव परशुरांम दासरथि नहीं घनश्यांम मेघ हरि नहीं । देख्यो विहरत गगनमें राधा हरि इक साथ । इहां राधा हरि को सहचार है तऊ देश प्रधांन इहां राधा नछत्र हरि चंद्रमा

विहारी

हरि राधा इक साथ हो चले गली में जात । गली देश इहां राधा गली को अर्थ विशाखा चंद्रमा नहीं

दोहा

यह तेरे परकारकी ध्वनिहै अभिधा मूल ।

श्रुतिमें स्वरितादिक स्वरनि ध्वनि नहिं याहि अनुकूल ॥ ५६७ ॥

श्रुति वेद में उदात १ अनुदात २ स्वरित ३ स्वरकौं ध्वनि होतहै सो ध्वनि काव्य में कवि कौं अनुकूल नहीं

इतिअभिधामलध्वनि

अथलक्षनांमूलध्वनि

दोहा

प्रीति रीति सबसौं तजी काहू सौं न पियार। कांम बधू सौ कामिनी करी योग उर हार ॥ ५६८ ॥

इहां हार कौ अर्थ कंठ लगाई इहां लछन लछनां आरोपा गौनी प्रयोजनवती एक घरी वा नायिका कौं जुदी नहीं करैहै अति प्यारी है इत्यादि ध्वनि औरि जहां प्रयोजनवती लछनां कही है तहां ध्वनि कही है

अथअभिधामूललछनांमूलध्वनि

छप्पै मेंकंठकरिवेकौलिये

छप्पै

जोग १ बनें जाकौ वियोग २ रहित अस्य

रु लच्छन । साहचर्य ३ सु प्रधान शब्द बहु वाची सब भन । वैर ४ परस्पर अर्थ ५ अर्थ सो इकठां कवि धरि। लिंग ६ चिन्ह दृढ काल ७ देश ८ औचिती ९ उचित करि। प्रकरन १० सुवाचि बहु इक नियम वचन व्यर्थ सामर्थ्य ११ गन। अनि संग १२ शब्द के संग करि व्यक्ति जाति भिन्न लिंग वचन ॥ ५६९ ॥

जाको वियोग किएं वही अर्थ सो संजोग लिंग जो चिन्ह छूटें वह अर्थ रहे देश काल सुगम प्रसंग सों जहां बहुवाचक शब्द एक ठोर में राखे कविको वचन व्यर्थ होयकें अर्थ जतावे सो सामर्थ्य व्यक्तिमें स्त्रीलिंग पुल्लिंग भाषामें एक वचन बहु वचन जानिएं द्विवचन तो भाषा में नहीं

छप्पै

—०—

जोग चक्र जुत हरि वियोग विन चक्र सु हरि पुनि। साथ भीम अर्जुन विरोध रावन सु राम सुनि। अर्थ देत विधु मुक्ति भीम विष पियो सु प्रकरन। सहस नैंन हरि चिह्न अन्य संनिधि घन बरषन। सामर्थ्य मत्त पिक मधु समय विधु निसि देश सुधा सरग। गुरु मुखं सहाय औचिति व्यक्ति विधि भो लच्छन गंग मग ॥ ५७० ॥

सुधा अमृत सुधा चूना नहीं गुरु मुख सु

यरा भी कह्यो विधि ब्रह्मा विधि भई सर्हा विधान जानीं लच्छनां मूल ध्वनि गंग मग गंगा सैं मग अर्थ विशेष शब्द पीछैं कह्यो

इतिलच्छनांमूलध्वनि

इतिशाब्दी

अथआर्थी

दोहा

—※—

वक्ता १ अरु बौधव्य २ पुनि वचन ३ वाच्य ४ अनि संग ५ । देश ६ काल ७ दश जानिएं चेष्टा ८ काकु ९ प्रसंग १० ॥ ५७१ ॥

इन दश के प्रभावतें उपजत जे ध्वनिरूप । वक्ता दिक वैसिष्ट्य तहिं कहत सु कविकुल भूप ॥ ५७२ ॥

वक्ता कहन वाला बौद्धव्य जाकौं समुझा इये

वाच्यअर्थ

वैशिष्ट्य प्रभाव विलच्छनता जानिए

अथवक्ताकीविशिष्टतातेंस्वाधीन पतिकाकौंउदाहरन

दोहा

※※——※※०※※——※※

दृगनिंग खंजन चातरी वचन न सुधासमान ।

कहा समुझि मोसों बंधे हरि तन मन दे प्रांन ॥ ५७३ ॥

प्रीतम की यह रीति सखि मोहि कही नहिं जाय। झिझकत हू ढिंग डोरहत पल न वियोग सुहाय ॥ ५७४ ॥

मोहिको सुन्दरि औरि नहीं नायक मेरोई आधीन है इत्यादिक इहां अर्थ सों वक्ताके प्रभावतें आर्थी व्यंजना ध्वनि भई वक्ताकी निपुनता करी

बिहारी

दोहा

सखि सोहत गोपाल के उर गुंजनि की माल। बाहिर लसति मनों पिए दावानल की ज्वाल ॥ ५७५ ॥

खंडिता की उक्ति सों यह अर्थ निकरै है यह सौतिके गरेकी माला है सो मोहि दुख देति है इत्यादि ज्यों सौतिकी युक्ति होय तौ मालाको वर्नन

अथबोधव्यवैसिष्ठ्य

दोहा

मोहित में चित दे फिरो सखी निकुंजनि

माहिं । भए अंग श्रम स्वेदकन लख्योसु प्रीतम नांहिं ॥ ५७६ ॥

मेरे अहित में चित दे फिरी है तूं प्रीतम कों पायो यह विपरीत लच्छना इहां बोध्व्य सखी वक्ता नायका विलच्छनता औरिय तरंह कहनो ताको विलच्छनता तें ध्वनि तूं नायक सों संभोग करि मोहि दुख देनकों आई है

भाषाभूषन

—※—

सरग चढाए पतितले गंग कहा कहुं तोहि ।
इहां गंगाजी के प्रभाव तें गंगाजी की स्तुति ध्वनि

बिहारी

दोहा

———०———

बाल छबीली तियनिमें बैठी आपु छिपाइ ।
अरगट ही फानूससी परगट आंगी जाय ॥ ५७७ ॥

नायका छबीली नायकनि में आपुकों छिपा यकें बैठीहै वाके आगें औरि सुंदरी की जोति दबिगई वह अति सुंदरी है तुमवामें देखहुगे तो रीझहुगे इत्यादि ध्वनि नायका बोधव्यता के प्रभावतें

अथवचनवैसिष्ठा

दोहा

—०—

इकटक दृग दे स्वच्छ रुचि निरखत है मोहार। वही हार औही सु मैं लखत न कहा विचार ॥ ५७८ ॥

हार में सखीको प्रतिबिंब पर्‌यौथो तब देखे थे अब सखी गई काहे कों हमारी ओर देखो इहां सों ध्वनि भई

केशवदासजी

सवैया

०÷०

दूरतें देखनकों द्वै दीन पठाई हुती लिखि हू लिखि चीठी। देखिमिल्यो मन हों हूं मिलो मिल खेलिवे हू कों मिलो मति मीठी। ऐसेमें औरि चलायहो केशव कैसें हूं कान्ह कुमार दे ढीठी। द्वै है न बार मुरार के तार ज्यों टूटि है लाल हमैं तुमैं ईठी ॥ ५७९ ॥

मनालके तार खीचें बढें हैं हमैं तुमैं प्रीति बढेगी इत्यादि बचनमें ध्वनि

विहारी

दोहा

—*—

तीवहि है भलिहै वनी नागर नंदकिशोर।

ज्यौंतुम नीके करि लखो मो करनी की ओर ॥ ५८० ॥

नागर प्रवीन प्रवीन होय सो आपनों ओ छ्याइ हमारो करनी की ओर देखो हमारे कुटिलता की करनी तुमत्रिभंगी हम हीन तुम दीनदयालु आदि जानिए

अथवाच्यवैसिष्य

दोहा

---○●

सघनीमन मोहत यहै बाग कलिंदी तीर।
सुरत बंधु सो मंद गति राजत जहां समीर.
॥ ५८१ ॥

ज्यौं सखी को उक्ति नायकासौं होयतो वाच्य वैसिष्य नायक कौं सुनायके नायका कौं कहै तो अन्य संनिधि एक अर्थ व्यंगतें निकसो यह सुरत जोग्य स्थान है यही अर्थ फेरि व्यंजक भयो तुम इहां रमन करो

दोहा

--○○--

सबे कहैं करतार कौं जगमें बहुत प्रवीन।
यह रचना ताकी लखो राहु वधू कुचकीन
॥ ५८२ ॥

राहुके हाथ नहीं कुचको प्रयोजन नहीं विधाता को अज्ञानता ध्वनि एक अर्थसों जहां दूसरो अर्थ निकरे सो वाच्य वैसिष्य

केशवदासजी

सवैया

धायनहीं घर दाई परी ज्वर आई खेलाईको आंखि बहाऊं । पौरिए आवें रतोंधी इतें पर ऊंचे सुने सु महा दुखपाऊं । कान्ह लिखा रहु न्याव कयो इनि आलिनि को लगिहौ बहु राऊं । मोसङ्ग ये सब सोवन आवें कि हौं इनि के सङ्ग सोवनि जाऊं ॥ ५८३ ॥

यह संपूर्न सवैया को अर्थ घर सूनों तुम हम सों रमन करो इत्यादि ध्वनि इहां वक्तृ बोधव्य वैशिष्ट्य सहायक है यहां दम्पति तरुने तरुन हैं तासों सहायक पद है जो बूढोबूढा सों कहे तथा माता तात वा बालक सों कहे तो सहायक पद नहीं तो लों कोटिय अर्थ होय

अथ अन्यसंनिधि

दोहा

सासु ननद सौंप्यो सदन कढ़िंवाहि परको काज । छूटि होइ के होयनहिं सांझ समय गुहि आज ॥ ५८४ ॥

यहां उपपति के निकट तें संध्या समय को संकेत इत्यादि ध्वनि

वाग्विदग्धा को उदाहरन

मौखिला दोहा

———॰॰———

उतें हेरि हरि कहत इत सखि यमुना के तीर। लेन जात हूं हारको भूल्यो आनत नीर ॥ ५८५ ॥

नायक के समीपतें नदी तट संकेत बतायो

भाषाभूषन

———॰॰———

कितै गयो अलिकेवरें छांडि सुकोमल जाय इहां नायक नायिका के नजीक दूती वचन भौंरासों या नायका सुंदरी छांडि और नायिका पास क्यों गयो यह ध्वनि

बिहारी

दोहा

(–॰॰–)

नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास इहिं काल। अली कली ही सों बंध्यो आगें कोन हवाल ॥ ५८६ ॥

नायक के नजीक कहे तब उदाहरन जानिए नायक नजीक नहीं यातें प्रसंगको उदाहरन होय

अथदेश

दोहा

—※—

आई लाल बिलोकिए राखौ आपु समीप। जानो याहिन मोर सी जाई. सिंहलदीप ॥ ५८७ ॥

सिंहलदीप देश सों ध्वनि यह अति सुंद-रीहै पद्मनीहै.

दोहा

•—•

कौन तुरी इनमें सिरै को लायक है अंग। कोहौ काछौ भीरिहै अरबी इहै तुरंग ॥५८८ ॥

कोही काछौ न्यून अरबी. सिरै इत्यादि देशतें ध्वनि

दोहा

—※—

मैं भौवय नहिं सासु घर सखि सुनो सो भाम। इहां नयनिहै बासकहि अस्त वसो घनश्याम ॥ ५८९ ॥

हे सखि तूं कहु घनश्याम सो यह अर्थ

निर्जनदेशतेंध्वनि

—※—

यहां रहो हमसों रमन करो कोई की

शंका मति करो इत्यादि जानिए नीवश इत्यादि सहायक पद देश व्यंजक सूंना घरको जानिए

सुंदरसिंगारमानुसयाना
दूसरीकोउदाहरन
सवैया

सासरे कों चली बाहिरी बाग बिलोक-तहीं अखियां भरि आई ॥ आंनतही सजनी जियकी तिनि कांनमें आंनि तहीं समुझाई। देखें बिनां पहिलेंई भली रति खेल के ठाहर की पछताई ॥ जाति जहां ही तहां पुनि सुंदर मंदिर सूनें घनी अमराई ॥ ५९० ॥

देश कहिए स्थांन इहां मंदिर बाग देशतें अनि पर पुरुष सों निचिंत बिहार करोगी कोई देखे गो नहीं इत्यादि जानिए

अथकाल
दोहा

नहीं उपाय चंचल चखनि चित बति तजति नवास ॥ अबें लाज क्यों राखिहै आयो फागुन मास ॥ ५९१ ॥

नहीं ऊंचो नजरि देखेहै नहीं वास घर छांडेहै। यहअर्थ। फागुन मास सों अनि रंग

डारेंगी गुलाल डारेंगी गारी देहिंगी इत्यादि ध्वनि जानिए

दोहा

नयो बयस रितुराज यह रचित फाग की धाम। मुनि सो मन नहिं रहिबो कहा बिहारी स्याम ॥ ५८२ ॥

बसंत में बिना मनाए नायक सों मिलेगी धीरज नहीं रहैगो इत्यादि ध्वनि जानिए

बिहारी

दोहा

कियो सबै जगकाम बस जीते जिते अजेय। कुसुम सरहि उर धनुष कर अगहन गहन न देय ॥ ५८३ ॥

जो मानिनी सों सखी को बचन होय तो ध्वनि जो मेरे मनाए न जायगी तो बिनाही मनाए नायक के पास जायगी तेरो मानरहेगो इत्यादि जानिए

बिहारी

दोहा

मिलि बिहरत बिछुरत मरत दंपति अतिरस

कौन। नूतन विधि हेमंत रितु जगत जुराफा कौन ॥ ५८४ ॥

मानिनी सों सखीको वचन हेमन्त प्रधान कौरि पद सहाय कारो

अथ चेष्टावैष्टि क्रियाविदग्धा

उदाहरन कौछिला

दोहा

हरि कलचौं हूं चखन तें देखो तियमुख मूल। प्रात चतुरि जनन दियो बंधु जोव को फूल ॥ ५८५ ॥

दोपहरो बनमें मिलाप होयगो यह चेष्टा तें ध्वनि कौरि। अर्थको जोसमझावे। चेष्टा ऐसो क्रिया कहावे।

बिहारी

दोहा

गुरुजन बिच जुखिकोल कों सोर छुड़ायो श्रांग। हरि सन मुख करि आरसो हियेलगा वै राग ॥ ५८६ ॥ प्रसिद्ध है

शिवराम कविको

दोहा

पिय आगम काज कह्यो सुनि गुरुजन बिच

याम। विहंसतहो वेनी गहो किम कारन सि वराम ॥ ५९७ ॥

वेनी को नाम कवरी कवचायोरी यहध्वनि

प्राचीनकवित्व

—००—

बांसुरी के बीच एक भौंर भरि लाई सखी मूंद्यो पट पल्लव लेवुधि बस भारी सों। भनत पुरान यामें आपुहीतें ध्वनि होति कानदे सुनो कह्यो राधा सुकुमारी सों। रीझी रिझवा दि अति मनमें मगन ह्वैकें आपुतन चाहिमुख ढांप्यो श्याम सारीसों। आंचर में गांठ देय विहंसि उठिचली अली प्यारे कह्यो आज यहां रहिये हमारी सों ॥ ५९८ ॥

बंसी वटमें नायक भौंर सो अकुलात है आपनी ओर देख्यो प्रकाश जतायो श्याम सारीसों मुख ढांप्यो चन्द्रमा अस्त भये मिलौगी इत्यादि ध्वनि

अथकाकुवेशिष्ठ्य

कवि कहत काकु स्वर भेद जानिए

दोहा

घन घहरत चपला चलत कियो मदन जग राज। समय सुहावन रसिक वर पीयन ऐहैं आज ॥ ५९९ ॥

मरेहूँ याको अर्थ स्वर भेदतें आवहिंगे यह ध्वनि जांनों ऐसी ठोर मध्यम काव्य ऐसे समय नाह परदेश रहेगो इहां उत्तम काव्य इहां कहां वसतहो व्यर्थ यह ध्वनि

बिहारी

—००—

अबही कहा चलाइये ललन चलन की बात। मति चलावो यह ध्वनि

अथप्रसंगवैसिष्य

दोहा

—※—

सुन्यो पीय तो आय हैं सजनी याही बार। जो करनों सो कीजिये अब क्यों करति अवार॥ ६००॥

जो परकीया को प्रसंग होय औरि नायिका आपनें उपपति सों मिलवेगई है तूं क्यों बैठी है तो जारसों मिलन आदि ध्वनि ज्यो स्वकीया को प्रसंग होय तो गृह काजें शृङ्गार आदि ध्वनि

बिहारी

दोहा

—०—

को कहि सके बड़ेन सों लखें बड़ीहो भूल

। दीनें दई गुलाब की इनि डारान ए फूल ॥ ६०१ ॥

ज्यौ थोरे गुन वाला कौं राजाने बहुत दियो ता बड़े गुनी को बचन इतने गुन पर एतो दान ज्यों कपूत को बेटा सपूत है प्रसङ्ग सौं तहां भी लगे ज्यों बुरी सूरति के पुरुषकी लुगाई सुंदरी होय तहां भी लगे जाको प्रसंग होय तहां यह अर्थ लगे जाको प्रसङ्ग होय सो नजीक नहीं रहै अन्य सन्निधि मैं वह नजीक सुनतो होय तो उदाहरन नहीं तो यहो प्रसंग वैशिष्ट्यको उदाहरन जानिए कितें गयो अलि केवरें इहां नायिका नायक सब है को कहि सके इत्यादि दोहा में प्रसंग चाहिये जो थोरे गुनी कौं बहुत दान तो वापर जो कपूतको बेटा सपूत होय तो वापर जो बुरी सूरति के पुरुषकी लुगाई सुंदरी होय तो वापर उहां जिनपर बात चली है सो पुरुष उहां न रहे ज्यों प्रसंग अन्य संनिधि दोनों मिले तो दोनों मिलि ध्वनि होय बाध्य बाधक भाव नहीं बाध्य जाकों रोकिए बाधक रोकन वाला

बिहारी

दोहा

———०❀०———

बैन इहां नागर बड़े जिन आदरतें भाव

। फूल्यो अनफूल्यो भयो गवई गांव गुलाब ॥ ६०२ ॥

इहां आछा सिपाही हो के प्रसंगमें कोई कहत है तहां प्रसंग सों सिपाही पर भी लगे सिपाहि गोरीने इहां कौन पूछे ऐसेंही आछो पंडित आछो कवि आछो मुनशी आछो गवैया आछो मुसव्वर आदि के प्रसंग तें ध्वनि

बिहारी

दोहा

— × —

अरे हंस या नगर में जैयो आपु विचारि । कागनि सों जिनि प्रीति करि कोइल दई बिडारि ॥ ६०३ ॥

ज्यों सभामें ऐसो प्रसंग चले कोई एक गुनी गंवार गांव में आयो है फिर कोई कहे इहां तें बहुत गुनी खराब भए हैं तहां कोई यह दोहा पढे तब प्रसंग को उदाहरन इहां अन्य संनिधि नहीं जांनिए

दोहा

—※—

तुव करनी को कहि सके मेरी कहा जबांन । जैसो मोपें तुम कियो जानत सकल जिहांन ॥ ६०४ ॥

ज्यो भलाको प्रसंग होय तो भला जांनिए
ज्यो बुराको प्रसंग होय तो बुरा जांनिए

इतिप्रसंग

*❈——❈*०*❈——*❈

वक्ता आदिको एक एक को उदाहरन थोरो आवतहै यातें वक्ता आदि को एकत्र उदाहरन

अथ वक्ता १ वाक्य २ प्रस्ताव ३

देश ४ काल ५ को उदाहरनएकत्र

सवैया

❈——❈——❈——❈

कहि तूहि सखीऽब कहा करिए पिय आये नहीं कहिं कारन सों ॥ चपला चहुं कोद पयोद घटा न टरे चित कुंजके द्वारन सों ॥ नृप मैन को वीर समीर हरे मन मंद सुगंधके भारन सों। झुकि लागति वेलि नवेलि भटू लखि अंब कदंब को डारन सों ॥ ६०५

कांम पीडित नायिका ताके प्रभावतें सामर्थ्य बोधव्य इहां सखीहै जाकों बुझावेहै तूं पर पुरुष बुलायदे यह ध्वनि ऐसें आगी वचन

प्रसंगसों जांनिए पौंन मन कों हरतहै इत्यादि
वचनके प्रभावतें नायक विदेश गयो है मैं
एकली इत्यादि प्रसंगतें कुंज देश कुंज बन
विना नहीं होतिहै निर्जन देश के प्रभावतें
काल चहुंओर मेघकी घटा होय रहीहैं पर
पुरुष बुलायवो मैं विहार करों इत्यादि ध्वनि
जांनिए याही तरह औरि ठौर जांनिए

अथ संक्षेपतें छप्पै

•—(•)—•

वक्ता १ सहज गह्यो कृपान मैं अरि पुर भाजत ।
पुनि बोधव्य २ सरोस परशुधर लखि क्यों
गाजत ॥ वच ३ अनंग करि सकत कहा मो
हिएं अग्निचख ॥ वाच्य ४ नीर निधि खार
कियो करतार बुद्धि लख ॥ अन्य संग ५ जाय
हों बिपिन सखि जहं कूजित कोकिल सुघर
॥ यह समय ६ मांन मति करि अली आयो
सावन मास वर ॥ ६०६ ॥
सहजे मैं तरवार पकरो अरि पुर भाजेंहें ॥
ज्यो मैं रोस करि तरवार पकरतो तो कहा
होतो मोहि समांन वली औरि नहीं इत्यादि
वक्ता वैशिष्ठ्य जांनिए । बोद्धव्य ।
परशुराम देखि तू क्यों गाजत है जिनि

परशुराम एकइ सवार निक्षत्रिय पृथ्वी करी है तोहि गरीब की कहागिनती इत्यादि ध्वनि । वचन । अनंग को कहावत जाके इट अंग होत है तामें जोर होत है अग्नि चक्षु नाम शिव शिवने कामकों जरायो अग्निके नेत्रसों हमारे पास कामनहीं आवेगो इत्यादि अर्थ वाक्यसों निकस्यो । वाच्यवैशिष्य । जाहि नीर निधि में बहु तरल रहत हैं लक्ष्मीको पिता है अमृतको घर है ताकों खारो कियो या अर्थ सों जानिपस्यो विधाता अज्ञान है इत्यादि ध्वनि अन्यसंग नायक समीप है यातें वनमें संकेत ध्वनि । काल । सावन में बीजुरी चमकैगी मोर बोलैंगे मान नहीं रहेगो इत्यादि ध्वनि

छप्पै

-०-०-०-०-

चेष्टा ७ पिय तिय ओर मिलन हित लल-चि चितावत । बालजोरि ह्वै कंज भई मगमा हिं गिरावत । काकु ८ नए हैं प्राननाथ अतिर सिक कहावत । दह पंडित पढिगोड़ दे शुक वसि अबही आवत । जहां परसंग १० करि ओरि जहां आवत प्रगटि । तजि मुक्त नीच ग्रामीसु संग जहं सहज सुभाय घटि ॥ ६०७॥

। चेष्टा । कंजजोरे सौंमिलन । मैं हाथ जोरि कहति हौं अलजात पन्यमें मिलापे । काकु । सुजेहैं प्राननाथ ऐसो पाठपढैं उत्तम काव्य नहीं जाहिंगे निषेध ध्वनिमें स्वरहीसे निकस्यो । देश । गौड़ देशकहें बड़ो पंडित है याके समान यहां कोई नहीं इत्यादि ध्वनि । प्रसंग । जाको प्रसंग चले सो हाजिर न होय कोई सरदार ने नीचकों प्रधान कियो है यह बात चलें पढे मुक्ता तू नीचगामी जल को संगछांडि यहां तेरो पानिप घटिजायगो या अर्थ में प्रसंगको उदाहरन

दोहा

—*०*०*—

तीनि रूप हैं अर्थ के वाच्य १ लच्छा करि २ व्यंग ३ । याते त्रिविध सुव्यंजना होति सबै यह भंग्य ॥ ६०८ ॥

अर्थके तीनि रूप हैं वाच्य करि १ लच्छकरि २ व्यंग्यकरि ३ अभिधा को अर्थ वाच्यार्थ कहावे १ लच्छनाको अर्थ लच्छार्थ कहावे २ व्यंजना को अर्थ व्यंग्यार्थ कहावे ३ भंग्य कहिए भेद याभेद सों तीन प्रकारकी व्यंजना जानिए "

अथ वाच्यार्थकी व्यंजना

————०————

कहि तू हो सखी ऽव कहा करिए इत्यादि

सवैया

यहाँ जो पदको जो अर्थ है ताहीसों ध्वनि भई परपुरुष बुलायदे यह ध्वनि

अथ लक्षार्थ

मोहित में चित देफिरी इत्यादि दोहा को हव्य उदाहरन के यहां विपरीत लक्षना सों फेरि ध्वनिभई तू नायक सों संभोग करि आई हमारे पाससों दूर होयजा

अथ व्यंग्यार्थ

सबैकहें करतार को इत्यादि दोहा वाच्य बेशिष्ट उदाहरन को विधाता गंवार व्यंजना सों अर्थ निकस्यो राहुवधू के कुचव्यर्थ या व्यंग्यार्थ सों फेरि अर्थ निकस्यो विधाता को अज्ञान ता यह ध्वनि ऐसें जानिए

अर्थशब्दके आसरे शब्द अधारे सु अर्थ। एक होत व्यंजक जहां एक सहाय समर्थ ॥ ६०९ ॥

अर्थ शब्दके आश्रय रहत है शब्दको आधार अर्थ है अर्थ जहां व्यंजक होय तहां शब्द सहाय करे शब्दजहां व्यंजक होय तहां अर्थ सहाय करे

पीछिला दोहा उदाहरन

सबै कहैं करतार को जगमें इत्यादि

प्रवीन तो हुवो शब्दको सहायक हुवो अर्थ को राहुवधू कुचकीन यह व्यंजक हुवो औरि अर्थ जतायो ७ ज्यो अज्ञान शब्ददेते तो यह ध्वनि नहीं होती जे राहुको हाथ नहींतो कुच काहेको प्रवीन होय के ऐसो कियो यह विधिकी अज्ञानता ध्वनि

अथशब्द

दोहा

अभिधा लक्षन व्यंजना यातें तीन प्रकार।
शब्द सुवाचक लक्ष्यकर व्यंजक हैं निर्धार
॥ ६०८ ॥

अभिधासों वाचक लक्षना सों लक्षक व्यंजना सों व्यंजक

अथ तात्पर्याख्या

जो पदार्थ अन्वय समुझावे तात्पर्याख्या वृत्ति कहावे नदी में घोष यहां घोषको अन्वय तीरसों है यह तात्पर्याख्या वृत्ति नदी में घोष है ताको ल्यावो यहां घोषको अर्थ शब्द नहीं व्यंजना सों गायको स्थान ताको भी ल्यावनों नहीं संभवे यहांभी लक्षन लक्षना सों घोषके बासो जानिए अभिधा वृत्तिसों नदी को अर्थ प्रवाह लक्षना सों तीर व्यंजना सों शीतलता आदि तात्पर्या अन्वय मात्र समुझावे है तात्पर्या को अर्थ तात्पर्यार्थ कहावे

अथ चाक्षेपाख्या

———o———

ऊपर सों जु पदार्थहि राखे । आचेपाख्या ताहि सुभाषे ॥

दोहा

———o———

दीनदयालु कृपालु कहि करत वेदगुनगान । तुम छबिटारो टरत नहिं अटल बिहारी कां न ॥ ६१० ॥

भक्तके नेत्र तें भक्तके हृदय तें इतनों अर्थ ऊपर तें आयो आचेपा सों अचित्यार्थ कहा वे अध्याहार में यही वृत्ति है आंचेपा अध्याहार सों मिलते हैं कोई व्यंजना में अंतर्भूत करे हैं

इतीव्यंजनावृत्ति

(--००--)

इतीश्रीहरीचरणदास

कृतेसभाप्रकाशे

षष्टोल्लासः

॥ श्री ॥

अथ काव्यभेद

दोहा

उत्तम १ मध्यम२ अधम३ पुनिभेद काव्यके तीन। यहां होतध्वनि भेद जे लिखो सुनो परवीन ॥ ६११ ॥

अथ उत्तम काव्य लछन

दोहा

जहां वाच्य तें रहत है अधिक चमत्कृत व्यंग। वाही सों ध्वनि कहत सो उत्तम काव्य सभंग ॥ ६१२ ॥

जहां काव्य में वाच्य कहि ये अर्थतें अधिक चमत्कृत व्यंगसों ध्वनि जाही काव्यमें ध्वनि वाही ध्वनिको नाम उत्तम काव्य केतिक भाषा वारे भेदभी करत हैं सो भेद नहीं को जे व्यंग ध्वनि एकही है जो वाच्यतें अधिक अर्थ सो व्यंग जो मनकों रंजन करे सो ध्वनि

अथव्यंग उदाहरन बिहारी

दोहा

मिलि परछाहीं जोन्हसों रहे दुहुनके गात।

हरि राधा इकसाथ ही चलेगली में जात ॥ ६१३ ॥

गलीमें जात यहां व्यंग दुरजन कों देखत जात हैं मनमें डरतजात हैं इत्यादि में चमत्कार नहीं याते व्यंग ।

अथध्वनि बिहारी

दोहा

—※—

पूसमास सुनि सखिन सों सांईं चलत सवार । गहिकर बीन प्रवीन तिय राग्यो रागमलार ॥ ६१४ ॥

पूस की वरषा जाचाकों निषेध है अकाल ह्रष्टिमें जाचा नहीं कीजिए मलार गाएं वरषा होइगो नायक नहीं जायगो ॥ काल ॥

चेष्टा वेसिष्यतें चमत्कृत व्यंग्य सो ध्वनि जानिए करमें बीन गहिनों चेष्टा जो व्यंजना वृत्तिसों निकरे सो ध्वनि

पद

—०—

वृत्ति व्यंजना जाहि निकारें ॥ सुंदर व्यंग्य ध्वनि उचारें ॥

दोहा

०।०

काव्य एक ध्वनि १ कहतहैं गुनी भूत २

व्यंग होय । भेद आठ गुनि भूतके काव्य मध्यममें होय ॥ ६१५ ॥

एक ध्वनि काव्य एक गुनी भूत व्यंग्य सो मध्यम काव्य याके आठ भेद मध्यम काव्यमें कहेंगे ॥

दोहा

भेद दोय ध्वनि के कहे अभिधा १ लचन २ मूल । सु विवच्छित १ अविवच्छित २ व वाच्य क्रमहि मति भूल ॥ ६१६ ॥

दोय ध्वनि कही हैं शाब्दी आर्थी भेद करि एक अभिधा मूल दूसरी लचनां मूल अभिधा मूल ध्वनि विवच्छित वाच्य कहावे लचनां मूल ध्वनि अविवच्छित वाच्य कहावे लचनां मूल थोरी है तातें पहिले लचनां मूल

अथलचनांमूल

दोहा

ध्वनि अविवच्छित वाच्य है अर्थ न संग्रह जोग । लचन मूल सु कहत हैं भेद दोय कविलोग ॥ ६१७ ॥

अविवच्छित को अर्थ निकम्मा । दोयभेद । एक अर्थान्तर संक्रमित वाच्य १ दूसरो अत्यन्त तिरस्कृत वाच्य २

अथ अर्थान्तरसंक्रमितवाच्य

दोहा

अर्थ अनर्थक भाषिकें औरि अर्थ में जाय। ताहि अर्थ मिल सर्थता अर्थान्तर सुलखाय ॥ ६१८ ॥

दोहा

मिहंदी बूंद सु रूंदि मन लेति लाल को बाल। काहेकों तू करति है मान कपट को जाल ॥ ६१९ ॥

मिहंदी बूंदको अर्थ मिहंदी बूंद सहित जो नायिका तुम मिहंदी नायिका के अर्थ मों मिलिकें सार्थ भई।

सुगमरीति

उपादान लच्छना में मुख्यार्थ मिल्योरहे है यातें जहां उपादान लच्छना प्रयोजनवती सों जो ध्वनि होति है सो अर्थान्तर संक्रमित वाच्य कहावे याके उदाहरन पीछें बहुत कहिआए

अथ अत्यन्तातिरस्कृतवाच्य

दोहा

और अर्थतें अर्थतां मुख्य अर्थ वे कांम। अति सु तिरस्कृत वाच्य तहं होत सु ध्वनिको नांम॥ ६२०॥

कंचन रंग सु अंग छबि लोचन चपल विशाल। बाल नवेली रूपलखि भयो लाल उरमाल॥ ६२१॥

लाल हार भयो लालको हार होनो नहीं संभवे हारको मुख्य अर्थ निकम्मां हारको अर्थ संग भये को अर्थ रहे है तासों अति प्रीति ध्वनि

सुगमरीति

प्रयोजनवती लछन लछना सों जो ध्वनि होय सो अत्यन्त तिरस्कृत वाच्य कहावे ताके उदाहरन पीछे बहुत कहे

इतिलछनामूलध्वनि

अथअभिधामूल

विवछितान्यपरवाच्य यथा वक्ताकी इच्छा जामें रहे सो विवछित कहावे याको अर्थ काई वक्ता को चाह्यो जो अर्थ सो अन्य पर औरि पर वाच्य अर्थ जहां करिवे योग्य है

दोहा

-०-०-०-०-

विवक्षितान्य पर वाच्य है ध्वनि यह अभिधा ठांव। असं लक्ष क्रम लक्ष क्रम यातें ए द्वै नांव॥ ६२२॥

असंलक्ष क्रम ध्वनि तहां जहाँ सुहै रस भाव। सं लक्ष क्रम भेद पुनि पहिले त्रिविधि गनाव॥ ६२३॥

असं लक्ष क्रम जहाँ रस ध्वनि भाव ध्वनि इत्यादिकहै तहां होत है विभाव इत्यादिक क्रम है सितावीसों ध्वनि होति है क्रम जान्यौं न जात है

अथसंलक्षक्रम

दोहा

--००-

शब्द शक्ति करि एक है अथ शक्ति कार होय। शब्द अर्थ दो जन करि भेद तीसरो जोय॥ ४२४॥

अथसंलक्षक्रमशब्दशक्त्युद्भव

दोहा

—०—

वस्तु रूप १ लंकार २ तें शब्द शक्ति भव होय। अलंकार तें भिन्न जे वस्तु ताहि धौं जोय॥ ६२५॥

शब्दकी शक्ति सों जो भई ध्वनि सो होय तरहकी एक वस्तु एक अलंकार होय पदार्थ एक अलंकार अलंकार तें भिन्न जो अर्थ निकरै ताको नांव वस्तु.

दोहा

—※—

शब्द शक्तितें व्यक्त जहं होत वस्तु लंकार । शब्द ध्वनि तिहिं जांनिए कोनों सुकवि विचार ॥ ६२६ ॥

अथशब्दशक्तितें वस्तु

दोहा

—○○—

शैल गांव सज्जन नहीं नहीं भले हैं ऐंन ॥ इहां रहत हो रहो हरि निरखि पयोधर नैंन ॥ ६२७ ॥

इहां पहार को गांव हैं सज्जा आदि सामग्री नहींहै हम पहार की रहन वाली हैं विशेष चतुराई नहीं है जो उपभोग चाहतहो हम सों आशक्त होय रहत हो तो रहो इत्यादि वस्तु रूप ध्वनि शब्द शक्ति तें जांनिए ॥

अथ शब्दशक्तिजलक्षन

दोहा

○+○

शब्द फेरिकें दीजिए वाको जो पर्याय ॥

इष्ट अर्थ निकरै नहीं शब्द शक्तिज सु कहाय ॥ ६२८ ॥

इहां जो पयोधर की ठौर वारि धाह घन इत्यादि दीजिये तो जो उपभोग चाहतहो तो हमसों आशक्त होय रहो यह ध्वनि इष्टहै सो नहीं निकरै

भाषाभूषन

ऊधा कुबजा बस भये निर्गुन वहे निदान। निर्गुन की ठौर में चतुराई करि हीन लिखिए तो इष्ट अर्थ नहीं निकरै शब्द शक्तितें उद्भव उत्पत्तिहै जाहि ध्वनिकी जाको गुन नहीं सो परका गुनमें कहा जानें इत्यादि रूप वस्तु व्यंग

अथशब्दशक्तितें अलंकार

दोहा

जाको कर सब दिसन में सो भलहै द्विज राज। रहै विष्णु पदमें सु रुचि सु बहादुर महाराज ॥ ६२९ ॥

इहां शब्द शक्ति करि सूर्य सों भूपति सों उपमामोपमेयता व्यंग इहां भी जो कर

द्विजराज आदि पद फेरे तो सूर्य सों समता नहीं निकरे

सवैया

हाट कपाट विचित्र बनावत व्याजगहें अरि वैरि न मांनो । गायन औमहि षौनि सु राखत धारत हैं कुलकांनि पिछानों ।· बांधत सेर औ दांन चुकावत औ गजको व्यवहार हि आनों । मोहर देखो सु लाखें जहां हरि साह सु ऐसें जहांन में जांनों ॥ ६३० ॥

साह पातसाह औ साह महाजन सों उपमानोपमेयता हाटक सोनाको पाट सिंहासन किंवा हाट औ कपाट व्याजछल तासों अरि शत्रु बैरिन ढोल न मांनों व्याज रुपया का अरि हठि वे बहु रिन कर्ज गायन गवैया महिषी वेगम किंवा गाय भैंसि कुल कांनिको दूसरो अर्थ कुलि सब कांनि लाखरी में सेर नाहर सेर तोला दांन दांन औदांन जगात गज हाथी औ गज नापिवे को मोहर लाखनी औ मोहर जहां सु लाखें हैं इति द्विविध शब्द शक्ति

अथद्वादशविधिअर्थशक्ति

अथअर्थशक्तिजलक्षन

दोहा

दोनें ह्व पर्यायके रहे व्यंग को अर्थ । अर्थ शक्तिजसो जांनिए वरनत सु कवि समर्थ ॥ ६३१ ॥

प्रलय करत इत्यादि दोहामें जो शब्द कों फेरें प्रलयको ठोर में नाश लिखें सुरपति को ठोर में इन्द्र लिखें तोभी ब्रजकी रचा ध्वनि निकरे वहो हारिगये ब्रजको कछू विगरयो नहीं इत्यादि

दोहा

अर्थ शक्ति तें होतहै बारह विधि ध्वनि मांन ॥ वस्तु अलंकृति चारिविधिस्वतः संभवी जांन ॥ ६३२ ॥

स्वत : संभवी तें वस्तु औ अलंकार चारि प्रकार

दोहा

कवि प्रोढोक्ति सु सिद्धतें ताके चारि प्रकार । कविनिबद्धतें चारियों बारह भेद उचार ॥ ६३३ ॥

कविनिनें एक वक्ता वांध्यो कहन वालो ताके कहिये वस्तु अलंकार के कवि निबद्धतें वस्तु अलंकार के चारि भेद

अथस्वत : संभवीलच्छन

दोहा

—०—

जगत प्रसिद्ध जु अर्थ तें उचित अर्थ व्यंग्य होइ। वाही अर्थहि कों कहें स्वत : संभवी जोइ ॥ ६३४ ॥

जगत में प्रसिद्ध जो अर्थ है तासों जो उचित अर्थ है सो ध्वनि होय

अथस्वत : संभवीवस्तुसोंः

विहारी

दोहा

प्रलय करन वरषन लगे जुरि जलधर इक साथ। सुरपति गरवहरयो हरषि गिरधर गिरधरि हाथ ॥ ६३५ ॥

इन्द्रको कोप आदि वस्तु सों व्रजकी रच्छावस्तुव्यंग्य ज्यो कह्यो इहां काव्यलिंग अलंकार है अलंकार सों वस्तु जांनिए सो नहीं अलंकार तो सब ठौर में है तहां ऐसो बिचारे अलंकार सों ध्वनि है कि शब्द अर्थ सों ध्वनि है इहां शब्द के अर्थ सों ध्वनि है

बिहारी

दोहा

—×—

सुरतिन तांनक ताल की ढ्यो न सुर बहराय ॥ एरी राग बिगारि गी बैरी बोल सुनाय ॥ ६२६ ॥

सुरति इत्यादि स्वतः संभवी बस्तु सों नायका में अति आसक्ति नायका सों मिलाप करावो इत्यादि बस्तु व्यंग्य

बिहारी

दोहा

वेंदी भाल तमोल मुख सीस सिलसिले बार ॥ दृग आंजें राजें खरी एही सहज सिंगार ॥ ६२७ ॥

सखी बचन नायक सों वेंदी आदि स्वतः संभवी बस्तु एतनांही सों तुम बस होहुगी औरि विशेष शृङ्गार करे तब कहा जांनें कहा होइ इत्यादि वस्तु व्यंग्य इहां जाति अलंकार सों व्यंग्य नहीं पदार्थै होसों व्यंग्य है

अथस्वतःसंभवीवस्तु सोंअलंकार

दोहा

—○○—

भूप बहादुर तोहि लखि नमेस सकल जिहांन ॥ हैसबही के सीस पर तेरे तेज अमांन ॥ ६३८ ॥

नमत इत्यादि बस्तु सूर्य सों कितने नमें हैं यातें व्यतिरेका लंकार व्यंग्य उपमांन उपमेय में विशेष सो व्यतिरेक ।

बिहारी

दोहा

——○※○——

रहे चिरजीवी अमर निधरक फिरौ कहाय ॥ छिन बिछुरें जिन को नहीं पावस आयु सिराय ॥ ६३९ ॥

चिरजीवी इत्यादि बस्तु सों निषेध्या भास अलंकार व्यंग्य निषेध्याभास ध्वनि गत अलंकार है नायिका के बचन में आपने नायक कों अंबर पहरायो औरि कों नहीं यह निषेध्य भास अलंकार सो निषेध को अभास है

अथस्वत:संभवीअलंकारसोंवस्तु

दोहा

तिय व्याकुल पियके विरह लहै नहीं कहुं धीर। पुनि तन मन हरषित भई लखियन सरस शरीर॥ ६४०॥

घन सों सरस शरीर इहां उपमेय नायकता में अधिकाई इहां स्वतः संभवी व्यतिरेकालंकार सों विरह को नाश करैगो यह वस्तु व्यंग्य

विहारी

दोहा

यही आस अटक्यो रहै अलि गुलाब के मूल। ह्वैहै फेरि बसन्त रितु इन डारिन वे फूल॥ ६४१॥

इहां अन्योक्ति अलंकार स्वतः संभवी तासों सतपुरुष कों संपति हीन जानि छाडिए नहीं इत्यादि रूप वस्तु व्यंग्य

सुन्दरसिंगार

गुणाउदाहरन

सवैया

आरो सु आनि पठावन को सब को मत

मोद्दी कौं ठेलि पठैये । पास गएं पिंजरानिके सुंदर सो दुख होय जु काहि सुनैये । भोरें अनार के बीजनि के मेरे मांनिक मोतिन कों सुहुनैये । तिच्छन चोंच की चोटनि तें तन चोंप हि लेत जबें ढिंग जैये ॥६४२ ॥

इहां स्वत: संभवी व्याजोक्ति अलङ्कार सौं पर पुरुष सौं संभोग फेरि होय ताको गोपन रूप वस्तु व्यंग्य किंवा आपनीं सतीपनीं व्यंग्य जहां आपनीं स्वरूप छिपावे सो व्याजोक्ति प्रमांन

भाषाभूषन

व्याजोक्तिअलंकार

लछनोदाहरन

दोहा

—०—

व्याजोक्ति कछु औरि विधि कहें दुरे आकार। सखि शुक कीनें करम ए लखि दाखौं मनि हार ॥ ६४३ ॥

विहारी

दोहा

०—०

जिन दिन देखे वे सुमन गई सुबीतिबी हार । अब अलि रही गुलाब कें अपत कंटील डार ॥ ६४४ ॥

स्वतः संभवी अन्योक्ति सों जाको धन गयो है ऐसो सत्पुरुष व्यङ्ग

अथ स्वतः संभवी अलंङ्कार सों अलङ्कार

दोहा

———०———

शत्रु वधूके अधरकी तेंजु मिटाई पीर ॥ संगर में निज अधरकों चावत के रनधीर ॥ ६४५ ॥

आपनों अधर चाव कें शत्रु वधूका अधर की पीर मेटत हो यहां विरोधाभास स्वतः संभवी जाही समय अधर चावत हो ताही समय पीर मेटत हो अधर चावनों कारन पीर मेटनों कारज सो साथही है यातें अक्रमातिशयोक्ति व्यङ्ग

रसिक प्रिया सवैया

——००——

दूरतें देखन को हूँ दौन पठाई हुती लिखि हू लिखि चीठी ॥ देखि मिल्यो मनहीं हू मिली मिलि खेलिवे हूको मिली मति मीठी ॥ ऐसें में ओर चलाय हो केशव कैसेंहू कान्ह कुमार दे ढीठी ॥ ह्वै है न वार मुरारके तार ज्यों टूटि है लाल हमें तुम्हें ईठी ॥ ६४६ ॥

यहां स्वतः संभवी मुरार के तारज्यों दृष्टान्ता ऽलंकार सों काव्य लिंग व्यङ्ग प्रीति की

नहीं टूटनीं समर्थनीय सी मृनाल के तारसों पुष्टि कियो मृनाल के तार खेंचे बढे हैं

बिहारी

दोहा

---० ०---

प्रीतम दृग मीचत प्रिया पांनि परस सुख पाय ॥ जानि पिछानि अजान लौं नेक न होति जनाय ॥ ६४७ ॥

अजान लौं मानों अजान है स्वत: संभवी उत्प्रेक्षा सौं पर्यायोक्ति व्यङ्ग प्रिय संयोग रूप दृष्ट साधति है

इति चारिभेद स्वत: संभवी

अथ कवि प्रौढोक्ति सिद्ध

दोहा

कवि कल्पित जो अर्थ हैं नहीं उचित कर जानि ॥ कवि प्रौढोक्ति सु सिद्ध तिहिं वरनत सब सुज्ञान ॥ ६४८ ॥

अथ कविप्रौढोक्ति सिद्ध

वस्तुसों वस्तु

दोहा

—(० ०)—

तिरछी चितवनि चुभति चित जुव मनगह

त सुबेंन । बांधत केस सुदेस गति लखिको लहे सुचेंन ॥ ६४९ ॥

चितवनि को चुभिवो वचन को ग्राहकता मनको इत्यादि कवि प्रौढ़ोक्ति सिद्ध वस्तु तासों नायिका सों मिले बिन सुख नहीं इत्यादि वस्तु व्यङ्ग कवि प्रौढोक्ति में कवि के वचन होत हैं कवि निबद्ध में कविको बांधो नायिका नायक सखी इत्यादि ताको वचन होत है एही भेद जानिये

बिहारी

सोरठा

पावस कठिन जु पीर अबला क्यों करि सहि सकै । तेऊ धरत न धीर रक्त बीज सम ओतरे ॥ ६५० ॥

पावस विषें पीड़ा की कठोरता कवि प्रौढोक्ति बस्तु तासों औरि रितुन सों वर्षा विषें कांम की अधिकाई लोगनि कों अधिक कांम पीड़ा इत्यादि बस्तु व्यंग्य ।

बिहारी

दोहा

कियो सबै जग कांम बस जीते जिते

अजेय ॥ कुसम सहस्र धनुष कर अगहन गहन न देय ॥ ६५१ ॥

अगहन कौं अजेय कौं जीतनौं इत्यादि कवि प्रौढोक्ति सिद्ध वस्तु तासौं अगहन कांम कौ अर्थ साधक है अगहन विषे विशेष कांम होतहै सब मास सौं श्रेष्ट इत्यादि वस्तु व्यंग्य

अथकविप्रौढोक्तिसिद्ध

वस्तुसौंअलंकार

दोहा

पूरन शशि महिकौं करत-स्वेत रैंन कौं पाय ॥ उज्जल जगकौं करतहै नृप तो जस इक भाय ॥ ६५२ ॥

इहां कवि प्रौढोक्ति सिद्ध जसकौं उज्वाल करनौं वस्तु तासौं चंद्रमा सौं जस अधिक व्यतिरेकाअलंकार व्यंग ।

विहारी

दोहा

—×—

बैठि रही अति सघन बन पैठि सदन तन मांहिं ॥ देखि दुपहरी जेठकी छाहौं चाहत छांहिं ॥ ६५३ ॥

छाया कौं छाया की चाह कवि प्रौढोक्ति वस्तु

तासों काव्यार्थापति अलंकार व्यंग्य छाया जड़ छाया चाहे है तो चैतन्य की कहा बात ।

बिहारी

दोहा

—०•—

करौ कुबत जग कुटिलता तजौं न दीन दयाल ॥ दुखी होहुगे सरल हिय बसत त्रिभंगी लाल ॥ ६५४ ॥

हिय मन सो तो न सूधो है न टेढो है मन कों सरलता कुटिलता कवि कल्पित वस्तु तासों तुमारि लायक हृदय है तामें बसें सुखी होहुगे इहां समालंकार ध्वनिमें जांनिए

अथकविप्रौढोक्तिअलं कारसोंवस्तु

दोहा

—•०—

भौंह धनुष दृगबांन सौं केस पास विस्तारि । जुव जन मन कों गहतहैं जग में तरुनी नारि ॥ ६५५ ॥

भौंह धनुष इत्यादि कवि प्रौढोक्ति रूपकालंकार तासों हजार जतन करे तो इन सौं नहीं बचे भौंह नेत्र की भंगसों वस होइ इत्यादि बस्तु व्यंग्य ।

दोहा

व्यास कनक अरु कांमनी एकाठौ तरवार ॥ घर तें निकरे भजन कों बीच हि लीनों मारि ॥ ६५६ ॥

कवि प्रौढोक्ति करि कनक कांमिनी तरवार रूपकालंकार तासों जो कोई कनक कांमिनी सों आसक्त होइ ताकों वैराग्य नहीं होय इत्यादि वस्तु व्यंग्य

बिहारी

दोहा

ब्रज वासिन कों उचित धन सो धन रुचित न कोय ॥ सुचित न आयो सुचित ईक हौंनु कहांतें होय ॥ ६५७ ॥

श्री कृष्ण कों धन कहनों प्रौढोक्ति काकु रचनां सों बात यातें पर्यायोक्ति अलंकार तासों जाको धन रहेहै सो स्वस्थ चित्त रहेहै जाकों धन नहीं सो व्याकुल होतहै यह वस्तु है किंवा रूपका लंकार सों यह ध्वंनि जांनिए

बिहारी

दोहा

भायक सम मायक नयन रंगे त्रिविधि

रंग गात ॥ झपो विलखि दुरि जात जल लखि जल जात लजात ॥ ६५८ ॥

इहां सायक इत्यादि कवि प्रौढोक्ति सिद्ध व्यतिरेका·लंकार करि नेत्रनि कों सुंदर्य मोहनता आदि वस्तु व्यंग्य जो नायक को उक्ति होय·तो कवि निबद्ध को उदाहरन जांनिए कवि निबद्ध कवि को बांध्यो नायक

अथकविप्रौढोक्तिसिद्धअलंकार सोंअलंकार

कवित्त

०+०

दुर्जन सों जीति अरु सज्जन सों नीति गुरु देवनि सों प्रीति लीहि सुजस कपांनी को। धर्मनि को साधक अधर्मनि को बाधक सु हरिको आराधक पयोधि सावधांनी को। संगर को सूर करे दारिद को दूर शुभ गुन निसों पूर मांन मले अभिमांनी को । हंस वंस भूषन वहादुर नरेश बली न्याव ऐसो तेरो ज्यों निवेरी दूध पांनी को ॥ ६५९ ॥

सावधांनी को समुद्र कवि कल्पित रूपका लंकार सों तुम० सारीखे तुमहीं ऐसो सावधांन दूसरो नहीं अनन्वया लंकार व्यंग्य सावधांनी को समुद्र प्रसिद्ध नहीं यातें कवि प्रौढोक्ति सिद्ध

विहारी

दोहा

नाहिं नए पावक प्रबल लुवें चलत चहुं पास । मानहु विरह वसंत के ग्रीषम लेत उसास ॥ ६६० ॥

इहां उत्प्रेक्षाऽलंकार करि ग्रीषम जड़ विषें उसास कवि कल्पित तासों मनुष्य के उसास की कहावात काव्यार्थापति किंवा प्रस्तुतांकुर

इतिकविप्रौढोक्तिसिद्धकेचारिभेद

अथकविनिबद्धलच्छन

दोहा

वक्ता श्रोता आदि जहं कल्पे सुकवि बनाय । ताकी जहं प्रौढोक्ति तहं कवि निबद्ध सु कहाय ॥ ६६१ ॥

अथकविनिबद्धवक्ताकी

प्रौढोक्तिकरिवस्तुसोंवस्तु

जावक भलो सु तप कियो तेरे लागत पाय ।

इहां कवि निबद्ध वक्ता कोई कामी ताकी प्रौढोक्ति जावक जड़ है ताके विषें तपस्या वस्तु तासों चरन की दुर्लभता आदि वस्तु व्यंग्य

विहारी

दोहा

(--०००--)

करी विरह ऐसी तउ गैल न छांडत नींच । दीने जच समा चषनि चाहत लहैं न मींच ॥ ६६२ ॥

विरह में कवि निबद्ध सखी की उक्ति नाय कसों मृत्यु के नेत्रमें चसमां कवि कल्पित वस्तु तासों नायिका की अति छीनता, औ तुम वेगि मिलो इत्यादि वस्तु व्यंग्य

विहारी

दोहा

—०—

छाले परिवे के डरनि सकै न हाथ छुवाय । झझकत हियें गुलाब के झवा झवैयत पाय ॥ ६६३ ॥

इहां कवि निबद्ध सखी की प्रौढोक्ति गुलाब के झवासों झझकिवो वस्तु तासों नायिका की सुकुमारता वस्तु व्यंग्य

विहारी

दोहा

—००—

कहि पठई जिय भावती पिय आवन की बात। फूली आंगन में फिरै अंगनि अंग समात ॥ ६६४ ॥

इहां कवि निबद्ध वक्ता सखी ताकी प्रौढो क्ति अंगनि अंग समात वस्तु तासों अति आनन्द मिलन मनोरथ आदि वस्तु है सो ध्वनि

अथकविनिबद्धवक्ताताका प्रौढोक्तिकरिवस्तुसों अलंकार

—※—

कोकिल अलि उपदेश करि ल्येहैं वाहि मनाय।

कोकिल अलि कों उपदेश करनों कवि निबद्ध वक्ता को प्रौढोक्ति वस्तु तासों कोकि ल में सखी को आरोप रूपकातिशयोक्ति अजोग विषैं जोग संबंधातिशयोक्ति

विहारी

दोहा

—०—

ओसों मिलवत चातुरी तूं नहिं भांनत

भेव । कहँ देत यह प्रगट ह्वै उपज्यो पूस पसेव ॥ ६६५ ॥

इहां कवि निवद्ध वक्ता की प्रौढोक्ति करि पसेव को कहनों यह वस्तु तासों पसेव विषें चुगल को आरोप रूपकाति शयोक्ति

संबंधातिशयोक्ति

विहारी

दोहा

सही रंगीली रति जगें जगी पगी सुख चैंन । अलसौंहें सौंहें किएं कहै हसौं हैं नैंन ॥ ६६६ ॥

नैंनकों कहनों वस्तु औ नैंन विषे चुगल को आरोप नैंन कों कहनों वेसेई जांनिए

विहारी

दोहा

वेई गडि गाडैं परी उपट्यो हार हियैंन । आन्यो मोरि मतंग-मन मारि गुरेरनि मैंन ॥ ६६७ ॥

मैंन गुरेरा सों मार्यो है यह वस्तु मैंन विषें सहावत को आरोप

रूपकातिशयोक्ति
अथकविनिवद्धवक्ताकीप्रौढोक्ति करिअलंकारसोंवस्तु

बिरद मनो नृप मदन को पढत सु कुंजनि मोर। घनसेवक जाहिर करत मांन मैंन को चोर ॥ ६६८ ॥

इहां कबि निवद्ध वक्ता की प्रौढोक्ति करि मोर कौं बिरद को पढनो इत्यादि उत्प्रेक्षा लंकार सौं कांम की फौज आवेहै इत्यादि वस्तु व्यंग्य।

प्राचीन कवित्त

तैसी चखचाहनि चलत उत्साहन सौं तैसो बिधु वाहन बिराजत बिजैठो है। तैसो भृकुटीको ठाठ तैसोई दिपे लिलाट तैसोई बिलोकिवेकों पीको प्रांन पैठोहै। तैसी एतरुनताई नील कंठ आई उर सेसब महाई जासौं फिरे ऐंठी ऐंठोहै। कुटिल लट भालपें बिराजे गोरे गालपें सुमानो रूपमाल पर व्याल ऐंठ वैठो है ॥ ६६९ ॥

इहां कबि निबद्ध वक्ता की सखी ताकी प्रौढोक्ति करि उत्प्रेक्षालंकार तासौं स्वकीया नाइका स्वामी बिना और ठौर रतिनहीं इत्यादि वस्तु व्यंग्य

प्राचीन सवैया

—※—

कुंज गली में अचानक श्याम गही मनो कांम की केलि बिचारें। पीरी परी पिंजरी थहरी अंगुरीनि सुधारत लोचन धारें। बारि की बूंद बनी बरुनी सो तो मोतिन की उपमानि उछारें। आंवनि हार पिया उर मंदिर बार बंधी मनु वंदन वारें॥ ६७०॥ कबि निबद्ध सखीसों सखीकी उक्ति करि उत्प्रेक्षा रूपकालंकार करि मुग्धा नायिका जोभी अब ही प्रीति नहीं है तउ जोबन आए नायक उर घर में बसेगो आंसू भी उछाह के हैं यह इत्यादि बस्तु ध्वनि

भाषाभूषन

—※—

बांनन पहुंचे कांन लों अरि पहिलें गिरि जांहिं। कवि निबद्ध बक्ता जाचक की प्रौढोक्ति करि अत्यंतातिशयोक्ति अलंकार सों हे भूप तूं अचूक बांन है जिन पर तूं बांन चलायवे कों चाहे है सो पहिलेही अपनी मृत्यु जाने हैं इत्यादि वस्तु व्यंग्य

भाषाभूषन

तेरै मुखकोजोर कों तेरोई मुष आहि। कु

वि निवद्ध सखी की प्रौढोक्ति अनन्वयालंका
र करि चंद्रमां कमल इत्यादि तेरे मुख बराब
रि नहीं इत्यादि वस्तु व्यंग्य

अथ कवि निवद्ध वक्ताकीप्रौढोक्ति करि अलङ्कार सों अलङ्कार

दोहा

मैंन बान से जासु दृग भृकुटी वंक कमांन।
आनन सुधा निवास हरि ताके वसतुव प्रांन
॥ ६७१ ॥

मैंन बांन इत्यादि कवि निवद्ध वक्ताकी प्रौ-
ढोक्ति उपमालंकार तासौं काव्य लिंग अलं
कार व्यङ्ग प्रांनको वसकरिवो मैंन बांन इत्या
दि सौं होत है तासौं काव्य लिंगा ऽलंकार

बिहारी

दोहा

देखो जागत वैसिये सांकर लगी कपाट॥
कित ह्वै आवत जात भजिको जानैं किहं बाट
॥ ६७२ ॥

यहां कवि निवद्ध वक्ताको प्रौढ़ोक्ति विभाव
ना लंकार है खुले कपाट बिना आवनों का
रन बिना कारज को उदय याहीतें असंभवा
ऽलङ्कार ध्वनि

विहारी

दोहा

सुरत सुरत कैसें दुरत मुरत नैंन जुरि नीठ।
ढोंडी दे गुन रावरे कहैं कनोडी डीठि
॥ ६७३ ॥

यहां कवि निवद्ध वक्ताको प्रौढ़ोक्ति करि ढोंडी दे नेत्रनि कों कहनों संवन्धातिशयोक्ति करि अनुमाना ऽलङ्कार व्यङ्ग

विहारी

दोहा

कौंन सुने कासे कहुं सुरति विसारी नाह।
बदा बदी जीं लेतहैं एवदरा वदराह ॥६७४ ॥

कवि निवद्ध वक्ताकी प्रौढ़ोक्ति है वादर को नाव जीवन देहै सो जीव लेत है जीवलेने के विरोधी हैं किंवा जीव लेनेके कारन नहीं हैं विभावना ऽ लङ्कार तासों उत्प्रेक्षाऽलङ्कार व्यङ्ग मानों जम है इत्यादि

विहारी

दोहा

यह विरियां नहिं औरि की तू करिया वह सोधि। पाहन नाव चढ़ाय जिनि कीने पार पयोधि ॥ ६७५ ॥

यहां कवि निबद्ध वक्ता कोई वैष्णव शिष्य सों कहे है वह करि या कहे मुद्रा अलङ्कार जताइवे योग्य अर्थताको जतावनों है तासों काव्य लिंग व्यङ्ग किंवा विरुद्ध तें कार्यविभाव ना जानिए

रसिकप्रिया सवैया

भाल गुही गुन लाल लटैं लटकें लर मोतिन को सुखदेनी। ताहि बिलोकति आरस सों कर आरसी ले इक सारसनैंनी। केशव श्यांम दुरे दरसे परसी उपमां मतिकों अतिपैंनी। सूरज मंडल में शशि मंडल मध्य धसी मनु ताहि त्रिवेंनी॥ ६७६॥

इहां उत्प्रेचा लंकार सों अत्युक्ति अलंकार व्यंग्य।

बिहारी

दोहा

उन हितही उनही मनें कोऊ करो अनेक।
फिरत काक गोलक भयो दोहूं देह ज्यों एक॥ ६७७॥

इहां कवि निबद्ध बक्ता को प्रौढोक्ति करि दृष्टांत अलंकार सों अत्युक्ति किंवा काव्यलिंगव्यंग्य इति अर्थ शक्त्युद्भव के बारह भेद

अथ शब्दार्थ शक्त्युद्भव एकभेद

अथ उभय शक्त्युद्भव को लक्षण

दोहा

सहै शब्द परिवृत्त जहं नहिं परिवृत्त सहा
य। ऐसे शब्दनि ध्वनि जहां उभय शक्तिजसु
कहाय ॥ ६७८ ॥

शब्द अर्थ दोऊ जहं व्यंजक होय सो उभ
य शक्तुद्भव

बिरहिनी सौं सखी वचन

दोहा

सुन्दर लसत सुवास जुत अरुन बरुन सु वि
शाल। नीर भरे कुमलात क्यों लोचन तेरे बाल
॥ ६७९ ॥

सुवास को अर्थ सुन्दर वस्त्र सौं युक्त आछन
जो सुगं पद दीजिये तो यह अर्थ नहीं निक
रै औरि पदको फेरें अर्थ नहीं जाय सुन्दर
आदि शब्द को अर्थ भी व्यंजक है यहां
शब्दशक्तिकरि अर्थशक्तिकरि कमल व्यंग

दोहा

अर्ध चंद्र आभरन है लखें बढावै काम। त
रल तार कासों लसै श्यामं जु हैं अभिराम
॥ ६८० ॥

यहां शब्द अर्थ दोऊ व्यंजक हैं अर्द्ध चंद्र

आदि शब्द इनके फेरें नहीं बनें और बढावे कांम याको अर्थ व्यंजक है याके फेरें भी अर्थ नहीं जाय ऐसें औरि भी जांनिए

अथध्वनिभेदकीगिनती

दोहा

—०—

ध्वनि अविवच्छित वाच्य के भेद दोय तूं जांनि। अर्थांतर संक्रमित है अत्यंत तिरस्कृत मांनि ॥ ६८१ ॥

पदमें अरु पुनि वाक्यमें होतं दोय के चारि। कहे लच्छना मूल के दोय भेद निरधारि ॥ ६८२ ॥

लछना मूल अविवच्छित वाच्य के चारि भेद।

दोहा

—————

विवच्छितान्य परवाच्य है अभिधामूल वखांन। असंलच्छक्रम भेद है संलच्छक्रम जांन ॥ ६८३ ॥

पद में औरि सु वाक्यमें औ पद को इक देस। घटना वर्न प्रबंध करि पहिलो को षोंवेस ॥ ६८३ ॥

घटना औ जो गुन आदि की रचना वर्न माधुर्य आदि के जतावनिहार प्रबंध दस वीस वाक्य को पहिलो असंलच्छ क्रम व्यंग्य छो तरहको

दोहा

संलक्ष क्रम में कहीं शब्द शक्ति जे मूल।
पद में अरु पुनि वाक्य में चारि होत अनु
कूल ॥ ६८४ ॥
कहूं पदमें वस्तु अलंकार निकरै कहूं वाक्यमें

दोहा

अर्थ शक्ति जे मूल है संलक्ष क्रमके मांहि।
ताके बारह भेद हैं कवि जानें मन मांहि
॥ ६८५ ॥
सोपद वाक्य प्रबंध करि छत्तिस भेदसुहोत।
उभय शक्ति जे मूल है एकै भेद उदोत ॥ ६८६ ॥
कहे भेद संख्या किए एक अधिक सु पचा
स। शुद्ध भेद याकों कहैं जाकों ज्ञान
प्रकास ॥ ६८७ ॥
भेद चारि ४ लक्षना मूलके असंलक्षके ६
भेद संलक्षक्रम शब्द शक्तिमूलके चारि ४ भेद
अर्थशक्तिमूलके छत्तीस ३६ भेद उभय शक्तिमू
लको १ भेद इन सबनि मिलाए इक्यावन
५१ भेद शुद्ध हैं

दोहा

इक्यावन ५१ सों गुनें जो एकावन ५१

कों कोई । शशि १ नभ रस ६ दृग २ होतहैं २६०१ भेद सुध्वनिके जोय ॥ ६८८ ॥

शशि एक १ नभ बेंदी रस छै ६ दृग दोय २ आंककी उलटी गति है

दोहा

(--००--)

त्रै संकर संसृष्टि इक भये भेदए चारि ४ ।
चारिहु सों शशि १ नभ सुरस ६ दृग२ कौं गुनें विचारि ॥ ६८९ ॥

वेद ४ व्योम विधिमुख्य ४ शशि १ होत १०४०४ गुने एह फेरि । इक्यावन सों भूत ५ सर ५ वेद ४ गगन महिं १ हेरि ॥ ६९० ॥

एकावन सों फेरि जोरें १०४५५

दोहा

व्यंग्यअसं लक्ष क्रमहि रसभाव ध्वनि मांहि ।
जानत हैं सबसुकविवर यामें संशय नांहि ॥ ६९१ ॥

रस ध्वनिमें कढे सो रसध्वनि भाव ध्वनि में कढे सो भाव ध्वनि शीतल समीर धीर इत्यादि रसके उदाहरन सब रस ध्वनि जांनिए भाव ध्वनि जहां भावनिरूपन कियो है देवतादि में रति जहां थाई होय निरंग इत्यादि इन के उदाहरन में सर्वत्र भाव ध्वनि जांनि

विहारी

दोहा

—×—

दुसह विरह दारुन दसा रह्यो न औरि उपाय। जात जात जिय राखिए पियकी बात सुनाय ॥ ६८२ ॥
यहां चिंता त्रास संचारी को प्रधान्य यातें भाव ध्वनि जहां उत्तम रस निकृष्ट रस में व्यङ्ग होयगो सोभी रस ध्वनि कोईसको कवि कहांनो उपचारी इत्यादि में शृङ्गार

इतिश्री हरिचरण दास कृते सभाप्रकाशे उत्तम काव्य निरूपणे सप्तमो ल्लासः

——०❀०——

॥ श्री ॥

अथमध्यमकाव्यलक्षन

दोहा

मध्यम सो जहं वाच्य तें व्यंग्य चमत्कृत नांहिं। व्यंग्य लसे जहं गौन वे आठ प्रकार लखांहिं ॥ ६८३ ॥ गौन.अप्रधान

है पहिले इतरांग १ पुनि नाम असुन्दर २ फेरि। संदिग्ध ३ तुल्य प्राधान्य ४ औ वाच्य सिध्यंग ५ सुहेरि ॥ ६८४ ॥

अस्फुट ६ काक्वाक्षिप्त ७ पुनि औरि अगूढ़ ८ सुधारि। सो इतराङ्ग रसादि को अंग रसादि विचारि ॥ ६८५ ॥

अथ इतराङ्ग

दोहा

ललित अलक कटिक्षीन अति लोचन चारु विशाल। मन मुसक्याय जु लेति हौ अवसुर लोक सुवाल ॥ ६८६ ॥

यहां शृङ्गार को विरोधी करुन रसव्यङ्ग याते इतराङ्ग जांनिए करुन रस ध्वनि में निकरे है शृङ्गार मूलही में है

दोहा

नैंन मैंन के बानसे निरखि कहा ललचाय।

तन लखि मनक्यों तरफरै न स्वर सबै लखाय ॥ ६८७ ॥

यहां शृङ्गार अंग शांत रस निकृष्ट सों ध्वनि में है सोई अंगी

दोहा

हंसति बाल दीपत दसन विकसत मनों अनार। हरै मदन को मन वदन परे ओठते लार ॥ ६८८ ॥

यहां वीभत्स ध्वनि में यातें इतरांग यहां जानिए

बिहारी

दोहा

पलनि पीक अंजन अधर धरे महावर भाल। आज मिलेजु भली करी भले बनेहो लाल ॥ ६८९ ॥

यहां हास्य रस अंग प्रधान शृङ्गार है यातें रस ध्वनि जानिए यहां विरोधी रस नहीं है यहां शृङ्गार को हास्य ने उत्कर्ष कियो इतरांग नहीं भयो

अथ भावको अंगरस

दोहा

अंक भरे अनुनय करे रमें रमावेफाग। ऐसो पिय तजि कें करे तूं प्रतिमासो राग ॥७००॥
संसार मिथ्या जांनि भगवान की प्रतिमा में प्रेम मा लगायो है यहां शृङ्गार निर्वेद भावको अंग यहां इतराङ्ग है रसवत अलङ्कार भी जांनिए कोई इतरांग ने रसवत मानत हैं रस भावको अंग जहां रसहोय सो रसवत प्रेयस इत्यादि को उदाहरन दिए ग्रन्थ कठिन होय औ या ग्रन्थके मतमें अलङ्कार है ध्वनिके भेद नहीं हैं

अथअसुंदरलच्छन

ध्वनि तें नीको बाच्य जहं ताहि असुन्दर जांनि

दोहा

नवै जीवन तुव कांमिनी पियतन कांम विलास। पूरन शशि मधु यामिनी बाढे मिलें हुलास ॥ ७०१ ॥
फेरि अंधेरी रातिमें मिलेगी तो ऐसो आनंद नहीं होयगो पिय तन कांम बिलास फेरि कांम चेष्टा होय कि नहीं यह ध्वनि सो अच्छो नहीं

प्राचीन दोहा

इत मुख भीनत श्यांम रङ्ग उततिय कुच आरम्भ। हीरा जुग भरिजोजिए तोए दिन दुलंभ॥ ७०२॥

प्रौढ जोवन में गलित जोवन में यह सुख नहीं यह ध्वनि आछी नहीं

बिहारी

दोहा

न्हाय पहरि पट झट कियो बेंदी मिस पर नांम। द्दग चलाय घरको चलो बिदा किये घनश्यांम॥ ७०३॥

तुमहमारे घर आवोगे इति असुन्दर

अथसंदिग्ध लक्षन

धुनि में जहां सन्देह सो तिहिं संदिग्ध पिछांनि

दोहा

इतें सखी गन हैं लखत उत आवत बलि रांम। देखि कहा ललचात हरि जाति हुं सूनें धांम॥ ७०४॥

यहां सहेट व्यक्त नहीं आपने धाम किंवा नायक के धाम किंवा निकुंज धाम कोई कारन तें मेरो घर सूनो है किंवा तुम्हारो किंवा निकुंज यह कह्यो चाहिए

प्राचीन दोहा

मानत जो नहिं मानिनी पचिहारो बहु बार। तबहिं तज्यो जब पिय कह्यो एक आंक द्वे बार॥ ७०५ ॥

एक अच्छर द्वे वार कहा कह्यो हाहा कह्या मान मति करे २ न न कह्यो औरि ऐसे जानिए नवीन

दोहा

आंगन बैठी भामिनी प्रीतम को मन चोर। नाह लख्योललचाय जब तिय देख्यो नभ ओर॥ ७०६ ॥

नभ देख्यो जब सून्य घर बतायो किंवा सूयें है यह बतायो संदेह

अथतुल्यप्राधान्य लच्छन

दोहा

ताहि तुल्य प्राधान्य पुनि कवि गन आखत

बनाय। वाच्य व्यङ्ग जहं एक सो कविता मांहि लखाय ॥ ७०७ ॥

भलो कियो तिय कन्तकों लीनों आपमनाय। सदा तिहारो कलह सखि असहन सौति सुहाय ॥ ७०८ ॥

इन के घरमें सुख नरहै तो भलो यह ध्वनि जैसो अर्थ तैसो ध्वनि

विहारी

दोहा

———o———

चलत चलत लों लेचले सब सुख संगल गाय। ग्रीषम वासर शिशिर निशि पियमो पास बसाय ॥ ७०९ ॥

बड़ो दिन बड़ी राति यह ध्वनि यहांअर्थ ध्वनि एक सो तासों तुल्य प्रधान्य हुवोअवधि भई डिग बावन की यहां तुल्य प्राधान्य नहीं यहां तो चमत्कार है अवधि पहिले तो छोटी लगी अब विरह सों बड़ी भई

अथ वाच्यसिध्यङ्ग लच्छन

दोहा

———❀———

अर्थ सिद्धि में अंगता धुनिजु लहै इहिं भाय। वाच्य सिधङ्ग सु कहत हैं कोविद सुकवि बनाय ॥ ७१० ॥

करत प्रकाश सु दिसनि को रही जोति अति जागि। है प्रताप तेरो नृपति बैरी बंसदावागि॥ ७११॥

बंस शब्द अनेकार्थ है संतान को कहत हैं और बांस को भी कहत हैं यातें बांस व्यङ्ग भयो शब्द सों प्रताप में दावानल पनो राखनों वाच्य भयो वाच्य कहिये अर्थ जो शब्द अनेकार्थ होइ तहां दूसरो अर्थ व्यङ्ग औरजो अनेकार्थ नहीं सो अर्थ यहां रूपक अलङ्कार भयो यहां व्यङ्ग जो है बांस तासों प्रतापकों दावानल को आरोप्य बनकी आगि ठहरावनो ताकी सिद्धि के लिए अंगभयो अंग कहिए साधक भयो जब बांस व्यङ्ग होय तब प्रताप को दावानल ठहरावनों सिद्ध होय जो ऐसो पढ़े। लखि प्रताप नृपतो रह्यो बैरि बंस में लागि। तब यहां अग्नि ध्वनि में निकरै यां अर्थ में उत्तम काव्य होय। हाट कपाट विचित्र बनावत। यहां साहन ऐसे जहान में जानों यहां राजा सों महाजन सों उपमानोपमेय भावव्यङ्ग उपमासों अप्रस्तुत महाजन जान्यों जात है यहां उत्तम औ ज्यों साहनि सोई महाजन जानों ऐसे पढ़े तो राजा साहूकार सों रूपक यह अर्थ व्याज आदिको दूसरो अर्थ व्यङ्ग सो याको साधक भयो तब वाच्यसिध्यङ्ग भयो वाच्य अर्थ ताकी सिद्धि में व्यङ्गजो है व्याज आदि अनेकार्थ पद सो साधक भयो

साहनि ऐसे जहांन में जानों ऐसो श्लेष उत्तम काव्य में मध्यम सो यह हाट कपाट ऐसे सब पद सों करे तहां अर्थ विचित्र होय सो अधम सेना पति के कवित्व में ऐसे बहुत निकरें गे

कविप्रिया

दोहा

(--००--)

वृषभवाहिनी अंग उर वासुकि लसत नवीन। शिव संग सोहे सर्वदा शिवा कि राय प्रवीन ॥ ७१२ ॥

शिवा न कहते तोभी जान्यौं जातो इहां भी शिवा वाच्य सिध्यंग जांनिए

अथअस्फुटलक्षण

दोहा

सो अस्फुट जो सुकविकी नीठि नीठिसु लखात। तोहि गहें अति भूप दिव सिंह वृहस्पति जात ॥ ७१३ ॥

तूं जब तरवार पकरे है तब वहुत शत्रुनि को संघार करे है स्वर्ग में विमाह होतहै स्वर्ग सों सिंह को वृहस्पति छूटे है सिंह के वृहस्पति में विवाह नहीं होत है यह अस्फुट

। ध्वनि । चंपक कि पात कछु लिख्योहै सनायकें। इत्यादि कछु थोरो हय घोड़ाकी सूरति लिखी ध्वनि में तुम हयग्रीवहो पशु रस कहा जाने इत्यादि ।

अथकाकाचिप्तलच्चन

दोहा

ध्वनि निकरे स्वर भेद सों काकाचिप्त लखाय। पावसमें नहिं आय हैं प्रीतम रसिक कहाय ॥ ७१४ ॥

रसिक कहाय न आवैगो आवैगो निश्चय यह ध्वनि

भाषाभूषन

—०—

रसिक अपूरबहो पिया बुरो कहै नहिं कोय। बुरो कहै हैं

अथगूढलच्चन

दोहा

—×—

सो अगूढ परगट सुपुनि निकरे ध्वनि जिहिं ठोर। माल महा बर लाल दृग आए भलें सुभोर ॥ ७१५ ॥

घर नारि पास तें आए ध्वनि जाहिर

बिहारी

दोहा

पलनि पीक अंजन अधर धरें महा वर भाल । आजु मिलेजु भली करी भले बने हो लाल ॥ ७१६ ॥ पर नारिके पास सों आए

अथसंक्षेपतेंआठोंभेद

छप्पै

जहं रसादिको अंग रसादि इतरांगसुकहियत । करतजु विविधविलास हास प्रीतम नहिं लहियत । ध्वनिते नीको बाच्य असुन्दर सोजु कहावत । खंजन नैनों बामखड़ी चल कंज फिरावत । ध्वनि मांहि जहां संदेह सो वह संदिग्ध कवि कुल कहत । ललचाय नाह देखत सु जब तब कामिनि अंबर चहत ॥ ७१७ ॥

प्रीतम नहिं लखियत इहां करुन है व्यंग्य । करुनअंगी ।

कंज फिरावत में व्यंग्य जो नहीं चलोगी तो फिरिजायगी सो बाच्य सों ध्वनि सुन्दर नहीं अंबर आकाश ताकों देखे है इहां दोऊ अर्थ भासें हैं आकाश सून्य है यातें तुम आवो इहां कोइ नहीं किंवा दिन है अबही मति आवो

छप्पै

वह तुल्य प्राधान्य वाच्य अरु व्यङ्ग तुल्य जहं। ग्रीषम दिन निस शिशिर राखि गोपिय विदेस तहं। अस्फुट ध्वनि अव्यक्त समर सुरवधू उक्त इति। काकुनएहिं पिय अधर अंजन अगूढ गति। पुनि वाच्य सिध्यंङ्ग सु अंगता अर्थ सिद्धि में ध्वनि लहत। लखि बैरि पच्छके ध्वंसपर असनि तेग नृप इन्द्र सत ॥ ७१८ ॥

ग्रीषम में दिन बड़ो शिशिर में राति बड़ी। अर्थव्यंगसमान। समर में सुभट मारेजांहिगे यातें अपसरानिकों आनन्द यह अस्फुट जाहिर नहीं। काकुस्वरभेद।

अधर अंजन अधर में अंजन लग्यो है यातें औरि नायिका पासतें आएहो यातें अगूढ़ जाहिर अर्थ को सिद्धि में ध्वनि अंगता पावे सो वाच्य सिध्यङ्ग बैरि पच्छके ध्वंसपर यहां पर्वत व्यङ्ग यहां असनि इन्द्र पद न कहते तो भी असनि इन्द्रको प्रतीत होती सत उत्तम

दोहा

तुल्य योगिता आदि में उपमा व्यङ्ग सुहोत। गुनी भूत सों व्यङ्ग है कविनि कियो उद्योत ॥ ७१९ ॥

गुनी भूत मुख्य नहीं व्यंग अप्रधान होय गुनी भूत कहो किंवा गौन कहो जहां निकृष्ट अलंकार सों उत्तम अलंकार होय सो गौमध्यम काव्य कहावै

दोहा

दीपकादि करिके तहां ललित काव्य सो होय। उपमा सों लालित्य नहिं कह्यो सुकविमतजोय ॥ ७२० ॥

भाषाभूषन

गज मदसों नृप तेजसों शोभा लहत बनाय।
गज मदसों राजा को उपमां व्यङ्ग होत है तउ यहां दीपक ही सों काव्यकों लालित्य है उपमां सों नहीं उपमां लिएं गुनी भूत व्यङ्ग होय

दोहा

अर्थ शब्दकी चारुता छिपी करे परकास।
गुनी भूत सों व्यङ्ग कों कविता होत निवास ॥ ७२१ ॥

अर्थ सों शब्दसों छिपी सुन्दरताकों प्रकाशै

दोहा

प्रात मित्र मुख देखि कें करि पीछे गृह कांम। यह श्लेष को बात सुनि चढी आपनें धांम ॥ ७२२ ॥

मित्र सूर्ज मित्र प्रिय तम श्लेष न कहते तो भी नायक को अर्थ जानि परतो प्रकाश किएं मध्यम काव्य भयो

दोहा

निर्नय मध्यन काव्य को लखो सु कवि सहुलास ॥ पूरो सभा प्रकाश में यह अष्टम उल्लास ॥ ७२३ ॥

इतिश्रीहरिचरणदसकृतेसभा
प्रकाशेमध्यमकाव्यवर्ननो
नामाष्टमोल्लासः

॥ श्री ॥

अथ अधमकाव्यलक्षन

दोहा

अधम काव्य सों व्यंग्य की रहै जहां नहिं चाह। शब्द चित्र १ पुनि कहत हैं वाच्य चित्र २ सु सराह ॥ ७२४ ॥

आश्चर्ज शब्द अर्थ व्यंग्य की अपेक्षा न होय कछु व्यंग्य तो होय

अथ शब्दचित्र

दोहा

इंदु सु कुन्द कपूर को दूर करे सु गरूर ॥ अंग सु ढंग तरंग जुत गंग करो दुख दूर ॥ ७२५ ॥

इहां ध्वनि भी निकरे है तऊ इहां अनुप्रास ही की रचना कवि को यह प्रतीति होति है यातें ध्वनि की चाह नहीं रहै

अथ अर्थचित्र

दोहा

(०००)

मनि मुकता को हार है शंख बास जहं पांनि ॥ सोहत विष्णु शरीर सो रतनाकर रस खांनि ॥ ७२६ ॥

हार को अर्थ समूह भी पांनि को अर्थ हाथ जलरंस को अर्थ जल भी इहां अर्थ चित्र है जाहिर रस नहीं रस हो नहीं उपमां शब्द की समता सों है अर्थ की समता सीं नहीं

कवित्व

—※—

भूधर निहारो मैं सजीयेंवेन केवलस देख्यों मैंन केल वस तोहो कों विचार सों। हरि कवि अवनी धरति भार सेननि को बोझिल के तोहो देख्यो सेंननि के भार सों। आसा-मानहो में गति जलद निहारो केतोधारी है जलद गति तूं हो तन सार सों। सुतुर कहां लों तेरी कीजिये सराह चले तोहो सों जहांज के जहाज पारावार सों ॥ ७२७ ॥

कोई चित्र काव्य का भेद में अंतर्भूत करे है अधम को जोर समय वाक्य कों काव्य मानें है

दोहा

—o—

कंज छत्र रथ बंध पुनि मात्र गतादि सु जांनि ॥ चित्र काव्य कवितानि को फोड़ा सो पहिचांनि ॥ ७२८ ॥

कवि वल्लभ में दोष गुन के निर्नय करेंगे सो दूषन में चित्र काव्य वर्नेंगे

काव्यलक्षन

दोहा

—o—

रचना जो कवि बचन कौं काव्य ताहि निरधारि ॥ नीरस हू पुनि होत है काव्य सु कवि सु विचारि ॥ ७२९ ॥

जो रसवत काव्य कहिए तो नीरस काव्य नहीं कहावे रसवत इहां अलंकार नहीं जामें रसहोय सो रसवत कहावे है औ नीरस कौं भी काव्य कहिए नीरस काव्य है यह व्यवहार है

अथनीरसकाव्यकोउदाहरन

कविकोस्थिति

दोहा

—o o—

श्री विश्वंभर वंसमें रांम तनें हरि नांम

नवा पार सर वार में अभिजन बढ्या ग्रांम

पूर्व पुरुष को वास सो अभिजन कहावे

कविकीनवीनस्थिति

दोहा

है चिरांदि छपरा सहर जहं सारनि सर-
कार ॥ को सदसक उत्तर वसे छपरा तें॥
लो ग्रांर ॥ ७३० ॥

श्रीशुकदेव तनें तहां चक्र पानि गुनखांनि ।
हरि कवि को मातुल वहे वहे सु विद्या-
दांनि ॥

आध कोस लो आरतें ग्रांम चेनपूर चारु
परगना गोआ तहां हरि कवि वास
विचारु ॥ ७३१ ॥

इहां रस कोई नहीं नीरस काव्य कहावे
है यातें रसवत काव्य के यह लछन नहीं

इतिश्रीहरिचरणदासकृतेसभा
प्रकाशेअधमकाव्यवर्णनो
नांमनवमोल्लासः

॥ श्री ॥

अथगुन

दोहा

जो रस को उत्कर्षता रचना सो गुन सोय ॥ जीव मांहि जो सूरता विज्ञतादि ज्यों होय ॥ ७३२ ॥

अक्षर की रचना सों उत्कर्षता सोई गुन कहावे

दोहा

जैसे शब्दनि सों करें चित्त मांहि आनन्द ॥ ताहि कहत माधुर्य कवि जानि लेहु स्वछन्द ॥ ७३३ ॥

जहां जैसो शब्द चाहिए माधुर्यादि तहां तैसोई धरे चित को रंज करे ताको माधुर्य कहिए

अथमाधुर्यलक्षन

दोहा

कसोंमलगि अरु वने जहं रहत रसानुस्वार ॥ बिनट वर्ग रख लघु जहां सो माधुर्य उचार ॥ ७३४ ॥

उदाहरन

—(०)—

यदि अंजन रंजन हित खंजन गंजन नैन । इस्मे अनुस्वार सहित वर्न है इसी नहीं है रस मधुर है

अथ ओजगुनलक्षण

दोहा

संजोगी अक्षर जहां और लम्बो समास ॥
रेफ सहित पुनि टादि अंध गुरु ओ ओज विलास ॥ २३५ ॥

उदाहरन

सभ ट ठ ड ध न घ छ क्रम पाणी धर्मरत सैन
समास बड़ो है

अथप्रसादगुनलक्षन

दोहा

होत सुनेतें ग्रन्दको जाहिर अर्थ प्रतीत ।
सब गुनमें जो रहत है सो प्रसाद यह रीति
॥ २३६ ॥

प्रसाद सब गुन में रहत है दोहा आदिको श्रम बिना अर्थ को प्रतीति जलदी सों भासे सो प्रसाद गुन जांनिए

उदाहरन

कवित्व

चाहन रहत भूमि पाल औरि देखिवे को
राज सिंह नन्दन की करे जो बखांन है ।
खूटि जात करम कपाट ताको ताही छिन
भाग को उदय भाल देखत जहांन है ।
एक बार जाचे जो बहादुर नरेस पास सोई
नर देतदेव तरु के समांन है । राखे नरसायन
के साधे ज उपायन कीं पारस कीं जाने वह
कारस समांन है ॥ २३७ ॥

छल बल जाके आगें दुर्जन के दबि जात
तेज सम तूल जाको राजत दिनेस को ।

पुन्य नीति थापिकै उथाप्यो पाप अवनी कौ
दुष्टनि कौं मारिकै उतार्यो भार सेसको।
भारी राज धारि भूप चाहत हैं भौरि जाहि
प्रजनि कै पालक औ नाशक कलेश को।
काज सिधि माहि जैसें लीजिए गनेश नांम
युध•काज नांम त्यौं बहादुर नरेशकौ॥ २३८॥

आयुध विविध अति जुध कौ उछाह जाहि
सुभट कुअरि की धरनी चल चालकौ।
सिलह सपूर हिये सूरता गरूर जिनि दूरि
करी दौलति कठूर नर पाल की। संगर में
केतिक संघारे हैं पिसन केते मारे बिन मरे
लहि धाक करवाल की। भूपति बहादुर
तिहारी सेना देह धरें जमकी जमाति कारा
आति किधौं काल की॥ २३९॥

दांन सनमान करि लीन्हे द्विजवृन्दनि कौं
चहुं कोद कीरति बितांन सनतांनो है।
तोसौं करिबेकौं रन कौन को चलत मन
छांडि कै गरूर दूर भाजे अभिमानी है।
बैरी हियें साल तें बहादुर नरेश बली ऐसें
जग माहि तेरी सुजस कहांनी है। तैसोभूप
दांनी तैसो राजैं राज धांनी तैसी धनी औ
कृपांनी बेद बांनी सावधांनी है॥ २४०॥

दोहा

तत प्रक्रांत सु क्रम लह्यौ तत प्रसिद्ध में

जानि । अनुभूतार्थं सुहै जहां अनुभव कै हिय मानि ॥ २४१ ॥

पीछिला तीनि कवित्व करि प्रक्रम भी जानिए चोथा कवित्व की चोथो तुक मैं तीनि तरह के तसको उदाहरन

दोहा

ऐसे भारत नृपनि मैं क्यों उडु विच ग्रसि ईश । भूप बहादुर को सुजस उदाहरन गुन बीस ॥ २४२ ॥

यामैं भी प्रसाद गुन जांनिये

कवित्व

वंश परमंसकी तरनि वितरन मांहि उप मां करन को सु होति निरधार है । विद्या वांन गुनवांन कारज मैं सावधान भूपति बहादुर को पुन्य अवतार है । सुजस को भार निज धर्म को संभार कोर छारको शृंगार सो सुबुद्धि पारावार है । कोप करि केहरि ज्यों दुरद को प्रांन हरे शत्रुनि को मांन हरे विरद अपार है ॥ २४३ ॥

शुद्धाशुद्धसूचीपत्र

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	१	बझीरात	बड़ीरात
१५	१५	पुरूष	पुरुष
२३	८	साधरन	साधारन
३७	११	सेवैया	सवैया
३९	१२	मूंदेमुरझाय	मूंदेमुखमुरझाय
३९	१७	ग्वलिनि	ग्वालिनि
४६	६ । ११	नायकाभेद	नायकभेद
६१	२	भ्र	भ्रू
६४	५	लालई	ललाई
७७	१	पूव	पूर्व
९३	५	कंचनि	कंजनि
१२७	५	उत्तन	उत्तम
१३१	६	पीतलएलको	पीतलको
१४८	८	एसेंही	ऐसेंही
१६८	५	उपदान	उपादान
१६८	२१	लच्चन	लच्चना
१६९	१७	प्रयोजवती	प्रयोजनवती
१७०	२	आढ	आठ
१९९	५	वैष्ठि	वैशिष्टि
२२५	२०	विहार	वहार
२२५	२१	कांटील	कटीली
२५९	९	मध्यन	मध्यम

शुद्धाशुद्धसूचीपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	१	बझीरात	बड़ीरात
१५	१५	पुरूष	पुरुष
२३	८	साधरन	साधारन
३७	११	सेवैया	सवैया
३८	१२	मूंदेमुरझाय	मूंदेमुखमुरझाय
३८	१७	ग्वलिनि	ग्वालिनि
४६	६ । ११	नायकाभेद	नायकभेद
६१	२	भ्र	भ्रू
६४	५	लालई	ललाई
७७	१	पूव	पूर्व
८३	५	कंचनि	कंजनि
१२७	५	उत्तन	उत्तम
१३१	६	पीतलएलको	पीतलको
१४८	८	एसेंही	ऐसेंही
१६८	५	उपदान	उपादान
१६८	२१	लच्चन	लच्चना
१६९	१७	प्रयोजवती	प्रयोजनवती
१७०	२	आढ	आठ
१९९	५	वैष्टि	वैशिष्टि
२२५	२०	विहार	वहार
२२५	२१	कंटील	कटीली
२५९	९	मध्यन	मध्यम